3 राजधानी
आतिशी बजट आवंटन को लेकर कर रहीं गुमराह

6 अभिमत
अमेरिका में बढ़ती राजनीतिक हिंसा

10 राष्ट्रीय
असम 2041 तक मुस्लिम बहुल राज्य बन जाएगा

11 विदेश
अमेरिका स्वर्णिम युग की दहलीज पर: ट्रंप

RNI NO.DELHIN/2012/48369
वर्ष 12 अंक 251
नई दिल्ली, शनिवार, 20 जुलाई, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ और रायपुर से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

हार्दिक का मुंबई इंडियंस के नेतृत्व करने पर संदेह
स्पोर्ट्स-12

माइक्रोसॉफ्ट आउटेज से भारत समेत कई प्रमुख देश प्रभावित

वैश्विक स्तर पर उड़ानें, बैंक, मीडिया आउटलेट बाधित

देश में कई एयरपोर्ट पर उड़ानों में पड़ा व्यवधान

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

वैश्विक स्तर पर माइक्रोसॉफ्ट में आई दिक्कत के चलते भारत समेत दुनिया में कई देशों में सेवाएं बाधित हुईं। आउटेज ट्रैकिंग वेबसाइट डाउनडिटेक्टर उपयोगकर्ताओं को विभिन्न सेवाओं में व्यवधानों के बारे में बता रही है। आउटेज के कारण के रूप में एक नए क्राउडस्ट्राइक (साइबर सुरक्षा सॉफ्टवेयर फर्म) अपडेट का हवाला दिया जा रहा है, जिसने विंडोज-आधारित डेस्कटॉप और लैपटॉप को प्रभावित किया है।

विश्व स्तर पर भारत सहित अमेरिका, यूरोप और एशिया में हवाई अड्डों पर लंबी कतारें लग गईं क्योंकि एयरलाइंस ने चेक-इन और बुकिंग सेवाओं तक पहुंच खो दी है, जब कई यात्री गर्मी की छुट्टियों पर जा रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया में समाचार आउटलेट - जहां दूरसंचार गंभीर रूप से प्रभावित हुआ था - को घंटों तक प्रसारित नहीं किया गया। अस्पतालों और डॉक्टरों के कार्यालयों में उनकी नियुक्ति प्रणालियों में समस्याएँ थीं, जबकि दक्षिण अफ्रीका और न्यूज़ीलैंड के बैंकों ने अपनी भुगतान प्रणाली या वेबसाइटों और ऐप्स में रुकावट की सूचना दी। ओलंपिक से पहले पेरिस आने वाले कुछ एथलीटों और दर्शकों को उनकी वर्दी और मान्यता के आगमन में देरी हुई, लेकिन खेल आयोजकों ने कहा कि व्यवधान सीमित थे और इससे टिकटिंग या मशाल रिले पर कोई असर नहीं पड़ा।

बड़े पैमाने पर वैश्विक आउटेज के बीच, जिसने दुनिया भर में एयरलाइंस, बैंकों और व्यवसायों के संचालन को प्रभावित किया है, माइक्रोसॉफ्ट ने शुक्रवार को कहा कि वह तीसरे पक्ष के सॉफ़्टवेयर प्लेटफ़ॉर्म से अपडेट के कारण विंडोज़ उपकरणों को प्रभावित करने वाली समस्या से अवगत है। माइक्रोसॉफ्ट के एक प्रवक्ता ने कहा, 'हमें उम्मीद है कि कोई समाधान आने वाला है।'

'मेती वैश्विक आउटेज के संबंध में माइक्रोसॉफ्ट और उसके सहयोगियों के संपर्क में है'
केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव

प्रवक्ता ने कहा, हम तीसरे पक्ष के सॉफ्टवेयर प्लेटफ़ॉर्म से अपडेट के कारण विंडोज़ डिवाइसों को प्रभावित करने वाली समस्या से अवगत हैं। इस रुकावट ने दुनिया भर में व्यवसायों और प्रणालियों के संचालन को अधर में डाल दिया। आउटेज ट्रैकिंग वेबसाइट डाउनडिटेक्टर पर उपयोगकर्ताओं ने लाइन-अप में समस्याओं की सूचना दी। माइक्रोसॉफ्ट ने कहा कि वह विभिन्न माइक्रोसॉफ्ट 365 ऐप्स और सेवाओं तक पहुंचने में उपयोगकर्ताओं की क्षमता को प्रभावित करने वाले मुद्दे की जांच कर रहा है। सोशल मीडिया पर माइक्रोसॉफ्ट 365 स्टेटस पोस्ट के अनुसार, हमारी सेवाओं में अभी भी निरंतर सुधार देखने को मिल रहा है, जबकि हम शमन कार्रवाई करना जारी रख रहे हैं। इस गड़बड़ी के कारण उपयोगकर्ताओं को ब्लू स्क्रीन ऑफ डेथ त्रुटि संदेश देखने को मिले और अंतरराष्ट्रीय एयरलाइंस, बैंकों और मीडिया आउटलेट्स में व्यवधान की व्यापक रिपोर्टें हैं। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि भारत सरकार वैश्विक आउटेज के संबंध में माइक्रोसॉफ्ट के संपर्क में है और आश्वासन दिया कि राज्य संचालित एनआईसी नेटवर्क प्रभावित नहीं होगा। आईटी मंत्री ने कहा कि इस आउटेज के कारण की पहचान कर ली गई है और समस्या के समाधान के लिए अपडेट जारी कर दिए गए हैं। सर्ट ने भी एक तकनीकी सलाह जारी की। यह बताया गया है कि क्राउडस्ट्राइक एजेंट फाल्कन सेंसर से संबंधित विंडोज होस्ट उत्पाद में प्राप्त हालिया अपडेट के कारण आउटेज का सामना कर रहे हैं और क्रैश हो रहे हैं। संबंधित विंडोज होस्ट फाल्कन से संबंधित ब्लू स्क्रीन ऑफ डेथ (बीएसओडी) का अनुभव कर रहे हैं। व्यापक माइक्रोसॉफ्ट आउटेज के कारण भारत सहित दुनिया भर में उड़ानें, बैंक, मीडिया आउटलेट और कंपनियां बाधित हो गईं। प्रौद्योगिकी कंपनी ने कहा कि वह माइक्रोसॉफ्ट 365 ऐप्स और सेवाओं तक पहुंच को प्रभावित करने वाले मुद्दे को धीरे-धीरे ठीक कर रही है, जिसके कुछ घंटों बाद तक व्यवधान बढ़ता रहा। माइक्रोसाफ्ट सेवाओं में बड़े पैमाने पर रुकावट ने विश्व स्तर पर आईटी प्रणालियों को प्रभावित किया, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में व्यवधान उत्पन्न हुआ।

आरबीआई ने कहा कि माइक्रोसॉफ्ट सेवाओं में रुकावट से 10 बैंकों और एनबीएफसी पर मामूली व्यवधान पड़ा, जिन्हें या तो सुलझा लिया गया है या हल किया जा रहा है। आरबीआई ने एक बयान में कहा, ज्यादातर बैंकों के महत्वपूर्ण सिस्टम क्लाउड में नहीं हैं और इसके अलावा, केवल कुछ बैंक ही क्राउडस्ट्राइक टूल (शेष पेज 9)

राजेश कुमार। नई दिल्ली

माइक्रोसॉफ्ट विंडो क्लाउड सेवा में रुकावट के कारण शुक्रवार को देश भर में कई हवाई अड्डों और एयरलाइन परिचालन को बड़े व्यवधान का सामना करना पड़ा। कई हवाई अड्डों ने परिचालन निलंबित कर दिया क्योंकि बोर्डिंग पास जारी करने सहित बुकिंग, चेक-इन और बोर्डिंग प्रक्रिया जैसी सेवाएं मैन्युअल रूप से की गईं, जिससे अपेक्षा से अधिक समय लगा और हवाई अड्डों पर लंबी कतारें लग गईं। इसने कई कम लागत वाली एयरलाइनों के लिए अराजकता पैदा कर दी, जिससे सुरक्षा संबंधी चिंताएँ पैदा हो गईं।

इस रुकावट के कारण एयर इंडिया, इंडिगो, अकासा एयरलाइंस और स्पाइसजेट सहित कई एयरलाइनों की बुकिंग और चेक-इन सेवाएं प्रभावित हुईं। यात्रियों को सलाह दी गई है कि वे पहले से ही हवाईअड्डे पहुंचें, क्योंकि मैन्युअल चेक-इन में अधिक समय लगता है। उनसे यह भी आग्रह किया गया है कि इंतजार बढ़ने की स्थिति में वे सूखे खाद्य पदार्थ और पानी ले जाएं। यात्रियों को देरी के बारे में चेतावनी देने के लिए एयरलाइंस अपने सोशल मीडिया हैंडल पर अपडेट पोस्ट कर रही हैं। व्यवधान की इस अवधि के दौरान यात्रियों को हवाई अड्डे के कर्मचारियों के साथ सहयोग करने की सलाह देते हुए, नागरिक उड्डयन मंत्रालय (एमओसीए) ने कहा कि

बेंगलुरु में माइक्रोसॉफ्ट के आउटेज के बीच केम्पेगौड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे बेंगलुरु में यात्रियों की भीड़ लगी रही। बेंगलुरु हवाई अड्डे पर इंडिगो, एयर इंडिया एक्सप्रेस, स्पाइसजेट और अकासा ने शुक्रवार को मैन्युअल रूप से यात्रियों की जांच शुरू की, हस्तलिखित बोर्डिंग पास जारी किए। वैश्विक माइक्रोसॉफ्ट आउटेज के कारण नेविटेयर प्रस्थान नियंत्रण प्रणाली ठप हो गई। पीटीआई

वह असुविधा को कम करने और सभी यात्रियों की भलाई सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। हवाई अड्डों और एयरलाइन परिचालन, जिनके सिस्टम माइक्रोसॉफ्ट पर आधारित थे, को शुक्रवार सुबह लगभग 10.40 बजे से महत्वपूर्ण व्यवधानों का सामना करना पड़ा। इंडिगो, स्पाइसजेट, एयर इंडिया और अकासा ने अपने नेटवर्क पर ऑनलाइन चेक-इन और बोर्डिंग प्रक्रियाओं में व्यवधान देखा, जिससे उन्हें मैन्युअल मोड पर स्विच करने के लिए मजबूर होना पड़ा। एयरलाइंस को नई बुकिंग करने में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है; यात्रियों से एक यात्रा के लिए एकाधिक बुकिंग न करने का आग्रह किया गया और उनसे कॉल सेंटरों से संपर्क न करने का आग्रह किया गया - जो उड़ान में देरी के कारण जबरदस्त कॉल वॉल्यूम का सामना कर रहे हैं - जब तक कि उनकी उड़ान 24 घंटे में प्रस्थान करने वाली न हो।केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू ने कहा कि उनका मंत्रालय और भारतीय हवाई अड्डा प्राधिकरण (एएआई) वैश्विक माइक्रोसॉफ्ट आउटेज से उत्पन्न स्थिति का सक्रिय रूप से प्रबंधन कर रहे हैं, जिसने देश में हवाई अड्डे और एयरलाइन संचालन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। नायडू ने एक बयान में कहा, नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने एएआई के सहयोग से परिचालन निरंतरता बनाए रखने के लिए मैनुअल बैकअप सिस्टम लागू किया है। अधिकारियों के अनुसार, दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और चेन्नई सहित देश के प्रमुख हवाई अड्डे बड़े पैमाने पर तकनीकी खराबी के कारण ठप हैं। दिल्ली हवाईअड्डे ने कहा कि उसकी कुछ (शेष पेज 9)

सीएम योगी के ताजा आदेश को लेकर एनडीए में बेचैनी

पायनियर समाचार सेवा, नई दिल्ली/लखनऊ

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा कांवड़ तीर्थयात्रियों के मार्ग में व्यवसायियों को नेमप्लेट प्रदर्शित करने का निर्देश देने के एक ताजा आदेश ने पार्टी सदस्यों के एक वर्ग के साथ-साथ जेडीयू और एलजेपी जैसे एनडीए में भाजपा के सहयोगियों के बीच बेचैनी पैदा कर दी है। उत्तराखंड सरकार ने भी इसका अनुसरण किया और हरिद्वार से शुरू होने वाली कांवड़ यात्रा के दौरान दुकानों और उसके मालिकों के सत्यापन के अलावा इसी तरह के निर्देश जारी किए। ताजा आदेश मुजफ्फरनगर पुलिस के विवादास्पद निर्देशों के बाद आया है, जिसमें रास्ते में भोजनालयों को मालिकों के नाम प्रदर्शित करने का आदेश दिया गया था, जिसे बाद में यह कहते हुए वापस ले लिया गया कि यह सिर्फ स्वैच्छिक सलाह थी। न केवल विपक्ष बल्कि वरिष्ठ भाजपा नेता मुख्तार अब्बास नकवी, केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान, जदयू प्रवक्ता केसी त्यागी सहित कई अन्य लोगों ने निर्देशों पर चिंता व्यक्त की। कांग्रेस ने इसे 'संविधान पर हमला' बताया और आदेश वापस लेने की मांग की। भाजपा, जो केंद्र और उत्तर प्रदेश में सत्ता में है, ने इस उपाय का बचाव करते हुए दावा किया है कि यह उपवास करने वाले हिंदुओं को अनुमति देता है जो शुद्ध शाकाहारी रेस्तरां में खाना चाहते हैं, जहां उन्हें 'सात्विक' भोजन परोसे जाने की संभावना अधिक है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री कार्यालय ने कहा, पूरे उत्तर प्रदेश में कांवड़ मार्गों पर खाने-पीने की दुकानों पर नेमप्लेट लगानी होगी। यह निर्णय कांवड़ यात्रियों की आस्था की पवित्रता बनाए रखने के लिए लिया गया है। हलाल प्रमाणीकरण वाले उत्पाद बेचने वालों के खिलाफ भी कार्रवाई की जाएगी। यूपी के राज्य मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने कहा कि हिंदू देवी-देवताओं के नाम वाले ज्यादातर आउटलेट मुस्लिमों द्वारा चलाए जाते हैं और वे मांसाहारी भोजन बेचते हैं। उन्होंने कहा कि उन दुकानों की पहचान की जानी चाहिए और उन्हें प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।मंत्री ने कहा, यह हर फूड कार्ट का मामला नहीं है। जो लोग हरिद्वार से जल लेकर 250-300 किमी की यात्रा करते हैं, वे अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए इस मार्ग को पार करते हैं। हमने जिला प्रशासन से आग्रह किया था कि ऐसे सभी लोग जो हिंदू देवी-देवताओं के नाम पर अपना ढाबा/होटल चलाते हैं, वे ज्यादातर मुस्लिम समुदाय से हैं। कांवड़िए उनकी दुकानों पर जाते हैं जहां मांसाहारी भोजन बेचा जाता है। तो, दुकान का नाम एक हिंदू देवता के नाम पर है, लेकिन वहां मांसाहार बेचा जाता है; ऐसे सभी प्रतिष्ठानों को प्रतिबंधित किया जाना चाहिए, उनकी पहचान की जानी चाहिए।

अग्रवाल ने कहा कि वे मांसाहारी भोजन की बिक्री के खिलाफ नहीं हैं लेकिन कांवड़ियां ऐसी दुकानों से खाना नहीं खाएंगे। उन्होंने कहा, हमें मांसाहारी भोजन की बिक्री पर कोई आपत्ति नहीं है, कांवड़िया इसे नहीं खरीदेंगे। हमने केवल इतना आग्रह किया है कि हिंदू देवी-देवताओं के नाम पर दुकानें खोलकर मांसाहारी भोजन नहीं बेचा जाना चाहिए; इसलिए प्रशासन ने तदनुसार कार्रवाई की है। नेता इसे हिंदू-मुस्लिम एंगल दे रहे हैं. लेकिन ये हिंदू-मुस्लिम का मामला नहीं है, ये सामाजिक सौहार्द का मामला है। लोग जहां चाहें बैठ कर खा सकते हैं, लेकिन उन्हें इस बात की जानकारी होनी चाहिए (शेष पेज 9)

संसद के मानसून सत्र में छह नए बिल पेश करेगी सरकार

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

केंद्र ने सोमवार से शुरू होने वाले आगामी संसद सत्र में छह नए विधेयकों को पेश करने के लिए सूचीबद्ध किया है, जिसमें विमानन क्षेत्र में व्यापार करने में आसानी के लिए सक्षम प्रावधान प्रदान करने के लिए 90 साल पुराने विमान अधिनियम को बदलने वाला विधेयक भी शामिल है।

वित्त विधेयक के अलावा, सरकार ने 'आपदा प्रबंधन (संशोधन) विधेयक' को भी परिचय, विचार और पारित करने के लिए सूचीबद्ध किया है। बृहस्पतिवार को जारी लोकसभा बुलेटिन में कहा गया है कि प्रस्तावित कानून का उद्देश्य आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में काम करने वाले विभिन्न संगठनों की भूमिकाओं में अधिक स्पष्टता लाना है। भारतीय वायुयान विधेयक, 2024 नागरिक उड्डयन क्षेत्र में व्यापार करने में आसानी के लिए सक्षम प्रावधान प्रदान करने के लिए विमान अधिनियम 1934 को प्रतिस्थापित करना चाहता है। 22 जुलाई से शुरू होने वाला सत्र 12 अगस्त को समाप्त होगा। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण मंगलवार, 23 जुलाई को केंद्रीय बजट पेश करने वाली हैं। सत्र के दौरान पेश होने और पारित होने के लिए सूचीबद्ध अन्य विधेयकों में स्वतंत्रता-पूर्व युग के कानून को बदलने के लिए बॉयलर विधेयक, कॉफी (संवर्धन और विकास) विधेयक और रबर (संवर्धन और विकास) विधेयक शामिल हैं।लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने बिजनेस एडवाइजरी कमेटी (बीएसी) का भी गठन किया है, जो संसदीय एजेंडा तय करती है। स्पीकर की अध्यक्षता वाली समिति में सुदीप बंद्योपाध्याय (टीएमसी), पी पी चौधरी (बीजेपी), लावु श्री कृष्ण देवरायलु (टीडीपी), निशिकांत दुबे (बीजेपी), गौरव गोगोई (कांग्रेस), संजय जयसवाल (बीजेपी), दिलेश्वर कामैत (जेडीयू), भर्तृहरि महताब (बीजेपी), दयानिधि मारन (डीएमके), बैजयंत पांडा (बीजेपी), अरविंद सावंत (शिवसेना-यूबीटी), कोडिकुन्निल सुरेश (कांग्रेस), अनुराग ठाकुर (बीजेपी) और लालजी वर्मा (एसपी) सदस्य हैं। केंद्र ने मानसून सत्र से पहले रविवार को सर्वदलीय बैठक भी बुलाई है. मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि यह बैठक संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजू ने बुलाई है। यह विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के लिए सभी दलों के फ्लोर नेताओं की पारंपरिक सत्र-संध्या बैठक में पहली बार होगा यदि वह इसमें भाग लेते हैं। विपक्षी खेमे की एक अन्य बड़ी पार्टी, तृणमूल कांग्रेस ने खेद व्यक्त किया है कि वह बैठक में शामिल नहीं होगी।

हरियाणा में किसी की नहीं होगी तीन हजार से कम मासिक पेंशन

मनोहर लाल की घोषणा को नायब सरकार ने किया पूरा सवा लाख पुराने सेवानिवृत्त कर्मचारियों को मिलेगा लाभ

शिखा शर्मा। चंडीगढ़

हरियाणा में अब तीन हजार रुपये से कम मासिक पेंशन वाले कर्मचारी भी बुढापा पेंशन के हकदार होंगे। मुख्यमंत्री नायब सैनी की घोषणा के बाद सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग ने इस बारे में अधिसूचना जारी कर दी है। हरियाणा सरकार में करीब सवा लाख कर्मचारी ऐसे हैं, जिन्हें ईपीएफ की पेंशन राशि राज्य में बुढ़ापा पेंशन से भी काफी कम है। प्रदेश में इस समय 3000 रुपये मासिक बुढापा पेंशन मिल रही है। जिसे बढ़ाए जाने को लेकर सरकार पहले ही मंथन कर रही है। सत्ता में आने पर कांग्रेस छह हजार तो इनेलो-बसपा गठबंधन 7500 रुपये बुढापा पेंशन का ऐलान कर चुका है। इस बीच सरकार को पता चला कि प्रदेश में एचएमटी, एमआईटीसी आदि समेत कई विभागों के ऐसे कर्मचारी हैं जिनकी मासिक पेंशन समाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के माध्यम से मिलने वाली पेंशन से भी कम है। इन कर्मचारियों को ईपीएफ से पेंशन की राशि एक हजार रुपये से लेकर दो हजार रुपये मासिक तक ही मिल पा रही है। जिसके बाद पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने अपने अंतिम बजट में इन कर्मचारियों को सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की पेंशन सुविधा के दायरे में शामिल करने का ऐलान किया था।अब मुख्यमंत्री नायब सैनी द्वारा जून माह के दौरान किए गए ऐलान के बाद सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग ने इस संबंध में अधिसूचना जारी करके साफ कर दिया है कि जिन रिटायर्ड कर्मचारियों की पेंशन या ईपीएफ राशि 3000 से कम है, वो भी बुढ़ापा पेंशन के पात्र होंगे, उन्हें अभी मिलने वाली राशि और तीन हजार के अंतर की राशि का भुगतान पेंशन के रूप में सरकार द्वारा किया जाएगा।

राज्यपालों को छूट देने वाले संवैधानिक प्रावधान की समीक्षा करेगा उच्चतम न्यायालय

पीटीआई। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय संविधान के अनुच्छेद 361 के उन प्रावधानों की समीक्षा करने पर शुक्रवार को सहमत हो गया जो राज्यपालों को किसी भी तरह के आपराधिक मुकदमे से पूर्ण छूट प्रदान करते हैं। शीर्ष अदालत ने यह आदेश पश्चिम बंगाल राजभवन में संविदा पर कार्यरत उस महिला कर्मचारी की याचिका पर दिया है, जिसने राज्यपाल सी वी आनंद बोस पर छेड़छाड़ करने और अधिकारियों द्वारा उसे गलत तरीके से बंधक बनाए रखने का आरोप लगाया है।प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की अगुवाई वाली पीठ ने पश्चिम बंगाल राजभवन की महिला की याचिका पर पश्चिम बंगाल सरकार को भी नोटिस जारी किया और याचिकाकर्ता को केंद्र सरकार को भी पक्षकार बनाने की अनुमति दी। शीर्ष (शेष पेज 9)

खेडकर के खिलाफ यूपीएससी ने दर्ज कराई एफआईआर

संघ लोक सेवा आयोग ने उनकी उम्मीदवारी रद्द करने और भविष्य की परीक्षाओं और चयनों से वंचित करने के लिए कारण बताओ नोटिस भी जारी किया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) ने शुक्रवार को कहा कि उसने फर्जी पहचान दिखाकर सिविल सेवा परीक्षा में धोखाधड़ी का लाभ उठाने के लिए परिवीक्षाधीन आईएएस अधिकारी पूजा खेडकर के खिलाफ पुलिस मामला दर्ज करने सहित कई कार्रवाई शुरू की है। आयोग ने सिविल सेवा परीक्षा-2022 की उनकी उम्मीदवारी रद्द करने और भविष्य की परीक्षाओं और चयनों से वंचित करने के लिए कारण बताओ नोटिस भी जारी किया।आधिकारिक सूत्रों ने कहा कि आयोग ने बृहस्पतिवार को खेडकर के खिलाफ दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा में शिकायत दर्ज की थी। उन्होंने कहा, शिकायत के बाद, पुलिस ने सिविल सेवाओं में उसकी उम्मीदवारी हासिल करने में जालसाजी, धोखाधड़ी और दिव्यांगता कोटा के दुरुपयोग के आरोपों की जांच के लिए भारतीय न्याय संहिता

(बीएनएस), सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम और दिव्यांगता कानून के प्रासंगिक प्रावधानों के तहत मामला दर्ज किया। 2023 बैच की परिवीक्षाधीन भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) अधिकारी खेडकर पर हाल ही में महाराष्ट्र में पुणे जिला कलेक्टरेट में अपने प्रशिक्षण के दौरान उन लाभों और सुविधाओं की मांग करके शक्ति और विशेषाधिकारों का दुरुपयोग करने का आरोप है, जिनकी वह हकदार नहीं थीं।

उन पर आसपास के सभी लोगों को धमकाने और उनके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली एक निजी ऑडी (लक्जरी सेडान) कार के ऊपर एक लाल-नीली बत्ती (उच्च पदस्थ अधिकारी का संकेत) लगाने का आरोप लगाया गया था, जिस पर 'महाराष्ट्र सरकार' भी लिखा था।

पुणे जिला कलेक्टर द्वारा मामले को उजागर करने के बाद, खेडकर को विदर्भ क्षेत्र में वाशिम जिला कलेक्टरेट में स्थानांतरित कर (शेष पेज 9)

एयरपोर्ट के लिए जारी किए 115 करोड़

- राशि का प्रयोग 1181.2793 हैक्टेयर जमीन अधिग्रहण के लिए किया जाएगा

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा एयरपोर्ट पर दिसंबर में पहली कॉमर्शियल फ्लाइट उड़ान भरेगी। एयरपोर्ट के स्टेज-2 के फेज-1 निर्माण के लिए प्राधिकरण ने करीब 104 करोड़ 42 लाख 55 हजार रुपए रिलीज किया ये पैसा 1181.2793 हैक्टेयर जमीन अधिग्रहण में प्रयोग किया गया। इसी तरह बिजली आपूर्ति के लिए करीब 10 करोड़ 28 लाख रुपए दिए गया।

एयरपोर्ट में 19.5 एमवीए (एचवी-1) की सप्लाई होनी है। जिसके लिए 33 केवी लाइन जाएगी। स्टेज-2 के फेज-2 में जमीन अधिग्रहण (1888.90 हेक्टेयर) प्रोसेस के लिए 31 लाख रुपए भी दिए गए। दरअसल, नोएडा प्राधिकरण नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट की जॉइंट वेंचर कंपनी है। जिसमें प्राधिकरण की 37.5 प्रतिशत की शेयर होल्डिंग है। ऐसे में 31 दिसंबर 2023 तक नोएडा एयरपोर्ट के निर्माण के लिए करीब 3529 करोड़ 87 लाख रुपए से ज्यादा की रकम दे चुकी है।

हाल ही में उपरोक्त की गई तीन मांगों को पूरा करने के लिए नोएडा प्राधिकरण ने 115 करोड़ से अधिक की रकम को रिलीज किया। ऐसे में यहां निर्माण कार्य तेजी से होगा।

जिससे एयरपोर्ट का संचालन समय से किया जा सके। 31 मई तक कुल परियोजना का 78.11 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है। फेज-1 की कुल अनुमानित विकास लागत 10,056 करोड़ रुपए है। जिसमें जेवर में 1,334 हेक्टेयर साइट क्षेत्र शामिल है। कुल लागत में से, रा'य सरकार द्वारा भूमि अधिग्रहण पर 4,328.05 करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं। अब तक 7,798.35 करोड़ रुपए खर्च हुए हैं। पहले फेज में एयरपोर्ट पर एक रनवे और एक टर्मिनल होगा। इसकी क्षमता करीब 12 मिलियन मुसाफिर की होगी। परियोजना को चार फेज में विकसित करने की तैयारी है। अंततः दो रनवे और दो टर्मिनल भवनों तक निर्माण किया जाएगा।

अंतिम चरण तक सालाना 70 मिलियन मुसाफिर इसका प्रयोग कर सकेंगे। परियोजना की कुल लागत 29,561 करोड़ रुपए अनुमानित है। पिछले दिनों रनवे का प्रिक्शन टेस्ट लिया गया था। टेस्ट पूरी तरह से सफल पाया गया था। इसमें यह पता लगाया गया था कि अगर अलग मौसम और स्थिति है, तो रनवे पर कोई बाधा तो उत्पन्न नहीं होगी। साथ ही किसी तरीके की कोई रुकावट तो पैदा नहीं होगी। कोई फिसलन तो नहीं होगी। इसके बाद अगले स्टैप के टेस्ट का रास्ता साफ हो गया है। दिसंबर में यहां कॉमर्शियल उड़ान शुरू करनी है।

हत्या के मामले में बंद कैदी ने जेल परिसर में की आत्महत्या

नोएडा। लुक्सर जेल में हत्या के आरोप में बंद एक कैदी ने बीती रात को जेल परिसर में फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। मौके पर पहुंची थाना ईकोटेक- तीन पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

गौतम बुद्ध नगर के लुक्सर मे स्थित जिला जेल के सुपरिंटेंडेंट अरुण कुमार सिंह ने बताया कि बनारसी पुत्र गरीबदास निवासी जनपद बलरामपुर उम्र 42 वर्ष जो की थाना जेवर से हत्या के मामले में गिरफ्तार हुआ था। वह 13 सितंबर वर्ष 2023 को जिला कारागार में निरुद्ध हुआ। वह सर्किल तीन के बैराठ नंबर 9 में बंद था। जिसने सर्किल 2 के अहाता में पानी की टंकी के पाइप पर अपने गमछे से फंदा लगाकर बीती रात को आत्महत्या कर लिया है। उन्होंने बताया कि घटना की सूचना पुलिस को दी गई है। घटना की सूचना पाकर थाना से ईकोटेक- प्रथम पुलिस, अपर पुलिस उपायुक्त ग्रेटर नोएडा, सहायक पुलिस आयुक्त तृतीय तथा नायक तहसीलदार मौके पर पहुंचे। उन्होंने बताया कि पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। जेल सुपरिंटेंडेंट ने बताया कि कैदी द्वारा आत्महत्या करने की घटना के बाद जिलाधिकारी के आदेश पर एक कमेटी बनाकर इसकी जांच की जा रही है।

गाजियाबाद नगर निगम कार्यकारिणी सदस्य चुनाव में दिखी अनुशासनहीनता

- चार सदस्यों के लिए भाजपा के छह पार्षदों ने भरा नामांकन
- महानगर अध्यक्ष के हस्तक्षेप के बाद पर्चे लिए वापस

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

नगर निगम कार्यकारिणी सदस्य चुनाव में भाजपा का अनुशासन तार तार होता दिखा। पार्टी ने क्चार पार्षदों को उम्मीदवार घोषित किया था मगर शुक्रवार की सुबह छह पार्षदों ने नामांकन कर दिया।

मेयर सुनीता दयाल का अनुरोध भी अनसुना कर दिया गया। बाद में महानगर अध्यक्ष संजीव शर्मा को हस्तक्षेप करना पड़ा। तब जाकर नाम वापसी हो हो पाए।

भाजपा संगठन की तरफ से अमित त्यागी मुदगल, नीरज गोयल, पूनम सिंह, नरेश भाटी को कार्यकारिणी सदस्य के लिए प्रत्याशी चुना गया था। जैसे ही नामांकन प्रक्रिया शुरू हुई, तो इन चार के साथ ही पार्षद राजीव शर्मा, नीलम भारद्वाज, संजय सिंह और निर्दलीय जोगेन्द्र सिंह ने भी नामांकन कर दिया। मेयर और भाजपा संगठन ने सर्वसम्मति से छह कार्यकारिणी सदस्य चुनने की रणनीति स्पष्ट कर दी थी ताकि मतदान की नौबत ही ना आए। इसीलिए विपक्ष दो अपने दो उम्मीदवार नरेश जाटव और मुस्तकीम को उतारा। जब भाजपा के छह पार्षदों ने नामांकन कर दिया तो नौबत मतदान की आ गई। इस पर मेयर ने पार्टी के अनुशासन की दुहाई देते हुए उन पार्षदों से नाम वापस लेने को कहा जो घोषित प्रत्याशी नहीं थे। मगर कोई उनकी बात मानने को तैयार नहीं हुआ।

मेयर ने उन पार्षदों को पार्टी से निष्कासित करा देने की चेतावनी तक दी, मगर उसका भी कोई असर नहीं हुआ। महानगर अध्यक्ष को करना पड़ा हस्तक्षेप , नाम वापसी का समय नजदीक आता जा रहा था।

जोगेन्द्र सिंह नाम वापस ले चुके थे। पाट्री से निष्कासन की चेतावनी का विरोध करने के बाद संजय सिंह भी चुनाव से हट गए।

नीलम भारद्वाज और राजीव शर्मा अभी भी मैदान में थे। तब भाजपा महानगर अध्यक्ष संजीव शर्मा को सदन में आना पड़ा। उनके काफी देर मान मव्वल करने के बाद नीलम भारद्वाज पर्चा वापस लेने को तैयार हुईं। पार्षद राजीव शर्मा पिछली बार भी कार्यकारिणी सदस्य चुने गए थे। वह कार्यकारिणी उपाध्यक्ष भी बने। कार्यकाल पूरा होने के कारण वह भी बाहर हो गए थे। आज नामांकन करने के बाद वह सदन से गायब हो गए।

उनका नाम वापसी कराने के लिए मेयर और भाजपा अध्यक्ष ने फोन भी किया मगर उन्होंने कॉल रिसीव ही नहीं किया। ऐसे में पहले नरेश भाटी और फिर नीरज गायोल को नाम वापस लेने के लिए मनाने का प्रयास चलता रहा।

नाम वापस कराए जाने को लेकर पार्षद नीलम भारद्वाज बहुत ज्यादा नाराज हो गईं। हालांकि उन्हें मनाने के लिए मेयर, भाजपा अध्यक्ष और कई पार्षदों ने प्रयास किया। मगर उनकी नाराजगी खत्म नहीं हुई। उन्होंने बैठक छोड़ दी और नाराज होगर सदन से चली गईं।

निठारी हत्याकांड मामले में कोली को बरी किए जाने के खिलाफ सुनवाई करेगा सुप्रीम कोर्ट

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने 2006 के सनसनीखेज निठारी हत्याकांड मामले में सुरेन्द्र कोली को बरी करने के इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले को चुनौती देने वाली सीबीआई और उत्तर प्रदेश सरकार की अलग-अलग याचिकाओं पर सुनवाई करने पर शुक्रवार को सहमति व्यक्त की। न्यायमूर्ति बी. आर. गवई, न्यायमूर्ति के. वी. विश्वनाथन और न्यायमूर्ति एन. कोटिश्वर सिंह की पीठ ने नोटिस जारी कर कोली से याचिकाओं पर जवाब मांगा और इन याचिकाओं को शीर्ष अदालत में पहले से लंबित ऐसी ही अन्य याचिकाओं के साथ नत्थी कर दिया।

शीर्ष अदालत ने पिछले वर्ष 16 अक्टूबर के उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) की अलग-अलग याचिकाओं पर आठ जुलाई को कोली से जवाब मांगा था। सर्वोच्च न्यायालय ने मई में एक पीड़ित के पिता की याचिका पर सुनवाई करने पर सहमति व्यक्त की थी, जिसमें मामले में कोली को बरी करने के उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती दी गई थी।

सत्र अदालत ने इस मामले में मोनिंदर सिंह पंधेर को बरी कर दिया था जबकि कोली को 28 सितंबर 2010 को मृत्युदंड की सजा सुनाई गई थी। यह सनसनीखेज हत्याकांड 29 दिसंबर 2006 को राष्ट्रीय राजधानी से सटे नोएडा के निठारी में पंधेर के घर के पीछे एक नाले से आठ बच्चों के कंकाल मिलने के बाद सामने आया था।

एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")
CIN : U65993DL2002PLC115769
पंजीकृत कार्यालय: 14वीं मंजिल, ईआरओएस कॉर्पोरेट टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019. ई-मेल: acre.arc@acreindia.in,वेबसाइट: www.acreindia.in
कॉर्पोरेट कार्यालय: यूनिट नंबर 502, सी विंग, वन बीकेसी, प्लॉट नंबर सी - 66, जी - ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई – 400051. फोन: 022 68643101

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,
इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड ("आईएचएफएल") प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **राणा सिंह और अमिता सिंह** को **31.01.2022** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. HHLLAJ00228789** की राशि **रू. 10,09,035.26 (रूपए दस लाख नौ हजार पैंतीस और छब्बीस पैसे मात्र)** और **18.01.2022** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी । इसके अलावा **आईएचएफएल** ने दिनांक **27.06.2023** के असाइनमेंट करार के माध्यम से **एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")** के पक्ष में उपरोक्त कर्ज खाते के अपने सभी अधिकार, शीर्षक और ब्याज और कर्ज खाता सौपा है, जिसे सुधार अनुबंध दिनांक **04.08.2023** के साथ पढ़े ।
धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **18.07.2024**. को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है ।
विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू. 10,09,035.26 (रूपए दस लाख नौ हजार पैंतीस और छब्बीस पैसे मात्र) 18.01.2022** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.** के आधीन होगा.
उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण
यूनिट नं. 529, पाँचवीं मंजिल, सुपर एरिया 579 स्क्वे. फीट (53.79 स्क्वे. मीटर्स) और जिसका संभावित निर्मित एरिया 445.83 स्क्वे.फीट (41.42 स्क्वे. मीटर्स) टावर-8, ड्रीम होम्स सेक्टर-5, वेव सिटी में एनएच-24, गाज़ियाबाद-201001 उत्तर प्रदेश।

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
दिनांक : 18.07.2024 **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.**
स्थान : गाज़ियाबाद **(102- ट्रस्ट)**

किसी भी शिकायत के लिए आप **श्री मोहम्मद शारिक मलिक**, शिकायत निवारण अधिकारी, फोन नंबर **011-66115609**, ईमेल: **complaint@acreindia.in** से संपर्क कर सकते हैं। संगठन के अंतर्गत शिकायत निवारण तंत्र विस्तृत रुप से **https://www.acreindia.in/compliance** पर देखी जा सकती है।

एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")
CIN : U65993DL2002PLC115769
पंजीकृत कार्यालय: 14वीं मंजिल, ईआरओएस कॉर्पोरेट टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019. ई-मेल: acre.arc@acreindia.in,वेबसाइट: www.acreindia.in
कॉर्पोरेट कार्यालय: यूनिट नंबर 502, सी विंग, वन बीकेसी, प्लॉट नंबर सी - 66, जी - ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई – 400051. फोन: 022 68643101

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,
इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड ("आईएचएफएल") प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **मनोज कोठियाल और शिखा भट्ट** को **22.06.2018** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. HHLNOI00204877** की राशि **रू. 37,28,185/- (रूपए सैंतीस लाख अट्ठाईस हजार एक सौ पचासी मात्र)** और **20.06.2018** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी । इसके अलावा **आईएचएफएल** ने दिनांक **27.06.2023** के असाइनमेंट करार के माध्यम से **एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")** के पक्ष में उपरोक्त कर्ज खाते के अपने सभी अधिकार, शीर्षक और ब्याज और कर्ज खाता सौपा है, जिसे सुधार अनुबंध दिनांक **04.08.2023** के साथ पढ़े ।
धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **15.07.2024** को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है ।
विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू. 37,28,185/- (रूपए सैंतीस लाख अट्ठाईस हजार एक सौ पचासी मात्र) 20.06.2018** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.** के आधीन होगा.
उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण
इको विलेज-4, ब्लॉक-जे-1, अठारहवीं मंजिल पर आवासीय परिसर बेअरींग फ्लैट नं. 1804 जिसका सुपर एरिया 1175 स्क्वे. फीट, प्लॉट नं. जीएच - 01, सेक्टर-16 बी, ग्रेटर नोएडा - 201303, उत्तर प्रदेश।

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
दिनांक : 15.07.2024 **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.**
स्थान : ग्रेटर नोएडा **(102- ट्रस्ट)**

किसी भी शिकायत के लिए आप **श्री मोहम्मद शारिक मलिक**, शिकायत निवारण अधिकारी, फोन नंबर 011-66115609, ईमेल: complaint@acreindia.in से संपर्क कर सकते हैं। संगठन के अंतर्गत शिकायत निवारण तंत्र विस्तृत रुप से https://www.acreindia.in/compliance पर देखी जा सकती है।

पुलिस आयुक्त ने ट्रैफिक पुलिस के दरोगा सहित तीन पुलिस कर्मियों को किया निलंबित

नोएडा। पुलिस आयुक्त ने एक व्यक्ति के साथ मारपीट कर दुर्व्यवहार करने के आरोप में यातायात पुलिस में तैनात एक उप-निरीक्षक एक कांस्टेबल व चौकी पर तैनात हेड कांस्टेबल को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है।

पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह की मीडिया प्रभारी ने बताया कि सलारपुर गांव में रहने वाले तीन दोस्त कार में सवार होकर सूरजपुर जा रहे थे, जैसे ही वे हल्द्वानी मोड़ पर पहुंचे उन्हें यातायात पुलिस कर्मियों ने रोक लिया। आरोप है कि तीनों दोस्तों को पुलिसकर्मी कुलेसरा चौकी पर ले गए तथा वहां पर उनके साथ जमकर मारपीट की।

उन्होंने बताया कि इस मामले की शिकायत युवकों ने पुलिस आयुक्त से की। जांच के बाद मामला सही पाया गया, तथा ट्रैफिक पुलिस के एक उपनिरीक्षक, एक सिपाही और चौकी पर तैनात हेड कांस्टेबल को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि इस मामले मैं पुलिसकर्मियों की विभागीय जांच करने के आदेश दिए गए हैं। ज्ञात हो कि पुलिस आयुक्त इस तरह की शिकायतों पर काफी सख्त है।

गाजियाबाद में 1702 दुकानों का किराया बढ़ने के खिलाफ मुखर हुआ व्यापारी

- बाजार बंद कर किया धरना-प्रदर्शन

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

गाजियाबाद में 1702 दुकानों का किराया बढ़ाने के खिलाफ व्यापारी मुखर हो गए हैं। शुक्रवार को व्यापारियों ने दुकानें बंद कीं और सड़क पर उतर आए। वे जुलूस निकालते हुए नगर निगम मुख्यालय पर पहुंचे। वहां नगर निगम के खिलाफ धरना-प्रदर्शन किया। धरनास्थल पर ही व्यापारियों ने खाना मंगाकर खाया। उन्होंने किराया ब ?ाने के फैसले को वापस लेने की मांग की।

9 जनवरी को नगर निगम की बोर्ड बैठक हुई। इसमें 1702 दुकानों का किराया बढ़ाने का प्रस्ताव पास हुआ। बोर्ड का कहना था कि ये व्यापारी नाममात्र का किराया दे रहे हैं और व्यापार मोटा कर रहे हैं। नई दर में किराया 4 से 18 हजार रुपए तक तय हुआ है। तभी से व्यापारी इस फैसले का विरोध कर रहे हैं। व्यापारियों का कहना था कि साल-1997 में किराया रिवाइज हुआ था। प्रत्येक पांच वर्ष के अंतराल पर 12 प्रतिशत किराया बढ़ाकर या मौजूदा किराये को दोगुना करने पर सहमति बनाई जा सकती है। परंतु अब जो किराया तय हुआ है, वो बहुत ज्यादा है।

पिछले दिनों इस विरोध को देखते हुए नगर निगम और व्यापारियों की एक ज्वाइंट कमेटी बनाई, जो इस मसले का हल निकाल सके, लेकिन कुछ नहीं हुआ। गाजियाबाद में 20 जुलाई को नगर निगम बोर्ड बैठक होनी है। माना जा रहा है कि ये बैठक इसी मुद्दे को लेकर हंगामे की भेंट चढ़ सकती है।

कांवड़ मार्गो पर सुरक्षा व्यवस्था का किया निरीक्षण

गाजियाबाद। नवागुंतक डीसीपी सिटी जोन राजेश कुमार ने एसीपी कोतवाली रितेश त्रिपाठी व एसीपी कविनगर अभिषेक श्रीवास्तव के साथ कावंड़ यात्रा को सुगम बनाने के के अलावा दुधेश्वरनाथ मंदिर में होने वाले महादेव के जलाभिषेक की तैयारियों को लेकर की जा रही व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। डीजीपी सिटी जोन राजेश ने जहां अधिनस्थों को पूरी तरह से सजग रहकर पूरी तरह से बाधारहित संपन्न करवाने के निर्देश दिये। वहीं दुधेश्वरनाथ मंदिर में बनाये जा रहे कंट्रोलरूम की तैयारियों का भी जायजा लिया। इस अवसर पर डीसीपी सिटी जोन राजेश के साथ एसएचओ रवि बालियान व एसओ मधुबन बापूधाम शैलेंद्र कुमार सिंह व अन्य अधिकारी भी मौजूद थे।

गाजियाबाद में अधीनस्थ संग कांवड़ मार्गो पर सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण करते वरिष्ठ पुलिस अधिकारी।

एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")
CIN : U65993DL2002PLC115769
पंजीकृत कार्यालय: 14वीं मंजिल, ईआरओएस कॉर्पोरेट टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019. ई-मेल: acre.arc@acreindia.in,वेबसाइट: www.acreindia.in
कॉर्पोरेट कार्यालय: यूनिट नंबर 502, सी विंग, वन बीकेसी, प्लॉट नंबर सी - 66, जी - ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई – 400051. फोन: 022 68643101

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,
एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड (CIN:U65993DL2002PLC115769) प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते अधोहस्ताक्षरी ने सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **प्रीत अग्रवाल और शालिनी अग्रवाल** को **18.03.2024** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. HHLNOD00218133** की राशि **रू. 45,82,302.06 (रूपये पैंतालीस लाख बयासी हजार तीन सौ दो और छह पैसे मात्र)** और **20.02.2024** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60 दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी ।
धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **15.07.2024** को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है ।
विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू. 45,82,302.06 (रूपये पैंतालीस लाख बयासी हजार तीन सौ दो और छह पैसे मात्र) 20.02.2024** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड** के आधीन होगा।
उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण
"इको विलेज 4" नामक परियोजना में, टावर जे2 में, चौथी मंजिल पर, यूनिट नं. जे-2/0405, सुपर एरिया 1100 फीट, एक कवर्ड कार पार्किंग के साथ, प्लॉट नं. जीएच-01 पर स्थित, सेक्टर-16बी, ग्रेटर नोएडा, नोएडा - 201301, उत्तर प्रदेश ।

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
दिनांक : 15.07.2024 **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.**
स्थान : नोएडा **(102- ट्रस्ट)**

किसी भी शिकायत के लिए आप **श्री मोहम्मद शारिक मलिक**, शिकायत निवारण अधिकारी, फोन नंबर 011-66115609, ईमेल: complaint@acreindia.in से संपर्क कर सकते हैं। संगठन के अंतर्गत शिकायत निवारण तंत्र विस्तृत रुप से https://www.acreindia.in/compliance पर देखी जा सकती है।

एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")
CIN : U65993DL2002PLC115769
पंजीकृत कार्यालय: 14वीं मंजिल, ईआरओएस कॉर्पोरेट टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019. ई-मेल: acre.arc@acreindia.in,वेबसाइट: www.acreindia.in
कॉर्पोरेट कार्यालय: यूनिट नंबर 502, सी विंग, वन बीकेसी, प्लॉट नंबर सी - 66, जी - ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई – 400051. फोन: 022 68643101

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,
इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड ("आईएचएफएल") प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **सुरोजीत मुखर्जी और मनीषा मुखर्जी** को **20.06.2019** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. HHLNOD00206562** की राशि **रू. 28,39,492/- (रूपए अट्ठाईस लाख उनतालीस हजार चार सौ बानवे मात्र)** और **19.06.2019** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी । इसके अलावा **आईएचएफएल** ने दिनांक **27.06.2023** के असाइनमेंट करार के माध्यम से **एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")** के पक्ष में उपरोक्त कर्ज खाते के अपने सभी अधिकार, शीर्षक और ब्याज और कर्ज खाता सौपा है, जिसे सुधार अनुबंध दिनांक **04.08.2023** के साथ पढ़े ।
धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **15.07.2024** को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है ।
विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू. 28,39,492/- (रूपए अट्ठाईस लाख उनतालीस हजार चार सौ बानवे मात्र) 19.06.2019** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.** के आधीन होगा.
उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण
सुपरटेक इको विलेज-4 से पहचाने जानेवाली परियोजना में, ब्लॉक आई-1, दसवीं मंजिल पर फ्लैट नं. 1006, जिसका सुपर एरिया 890 स्क्वे. फीट, एक कवर्ड कार पार्किंग के साथ, प्लॉट नं, जीएच-01 पर स्थित, सेक्टर 16 बी, गौतम बुद्ध नगर, ग्रेटर नोएडा, नोएडा -201303, उत्तर प्रदेश ।

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
दिनांक : 15.07.2024 **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.**
स्थान : नोएडा **(102- ट्रस्ट)**

किसी भी शिकायत के लिए आप **श्री मोहम्मद शारिक मलिक**, शिकायत निवारण अधिकारी, फोन नंबर 011-66115609, ईमेल: complaint@acreindia.in से संपर्क कर सकते हैं। संगठन के अंतर्गत शिकायत निवारण तंत्र विस्तृत रुप से https://www.acreindia.in/compliance पर देखी जा सकती है।

ग्रेटर नोएडा वेस्ट में जल्द मिलेगा पहला एसटीपी

- सीईओ एनजी रवि कुमार ने निर्माण शीघ्र शुरू कराने के दिया निर्देश

पायनियर समचार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा वेस्ट के निवासियों के लिए खुशखबरी है। ग्रेटर नोएडा वेस्ट का पहला एसटीपी शीघ्र बनने जा रहा है। करीब 80 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले 45 एमएलडी शोधन क्षमता वाले एसटीपी के लिए ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने टेंडर निकाल दिए हैं। एक माह में टेंडर प्रक्रिया पूरी कर निर्माण कार्य शुरू कराने की तैयारी है। इसका निर्माण कार्य डेढ़ साल में पूरा करने का लक्ष्य है।

इस एसटीपी के चालू होने से ग्रेटर नोएडा वेस्ट के सेक्टरों व गांव के निवासियों को बड़ी राहत मिल जाएगी। इसके साथ ही प्राधिकरण ने 23 अन्य कार्यों के लिए लगभग 18 करोड़ रुपये के टेंडर निकाल दिए हैं। ग्रेटर नोएडा वेस्ट के सेक्टरों व गांवों के सीवर को शोधित करने के लिए एसटीपी की बहुत जरूरत है। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ एनजी रवि कुमार ने इस जरूरत को देखते हुए एसटीपी शीघ्र बनाने की अनुमति दे दी। सीवर विभाग ने एसटीपी बनाने के लिए टेंडर निकाल दिए हैं।

प्राधिकरण के एसीईओ आशुतोष द्विवेदी ने बताया कि एसटीपी बनाने की इच्छुक कंपनियां 29 जुलाई तक आवेदन कर सकती हैं। 31 जुलाई को प्री क्वालीफिकेशन बिड खुलेगी। कंपनी का चयन कर कार्य को शीघ्र करने की तैयारी है। इसका निर्माण कार्य शुरू होने के बाद पूरा होने में लगभग डेढ़ साल लगेंगे।

अब तक ग्रेनो वेस्ट में एसटीपी न होने से ग्रेटर नोएडा वेस्ट की स्वच्छता के लिए इस एसटीपी की बहुत आवश्यकता थी। अब इसके जल्द मूर्त रूप में आने की उम्मीद है। इससे ग्रेटर नोएडा वेस्ट के सभी गांव व सेक्टर इस एसटीपी से जुड़े जाएंगे। उनके घरों से निकलने वाला सीवर शोधित हो सकेगा। इसके साथ सेक्टर बीटा वन व टू के सामुदायिक भवन के आंतरिक विद्युतीकरण का कार्य, 6 प्रतिशत आबादी भूखंडों में एलईडी लगाने, 3 जोनल रिजर्वायर के इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल, सिविल कार्य और जीआईएस मैपिंग के कार्य, सेक्टर 16बी व 16सी वितरण लाइन बिछाने का कार्य, ग्रेटर नोएडा के विभिन्न सेक्टरों में झूलों के मरम्मत के कार्य, सेक्टर दो में ओपन जिम के उपकरण लगाने आदि कार्य किए जाएंगे। सीईओ एनजी रवि कुमार ने इन कार्यों के लिए टेंडर प्रक्रिया को एक माह में पूरा कर निर्माण शीघ्र शुरू कराने के निर्देश दिए हैं। इन कार्यों की गुणवत्ता में लापरवाही न करने की सख्त हिदायत दी है।

माइक्रोसॉफ्टः आईजीआई पर यात्री रहे परेशान

सर्वर में गड़बड़ी

● टेकऑफ में देरी, चेक-इन तथा बुकिंग में भी लोगों को समस्या करना पड़ा सामना

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

माइक्रोसॉफ्ट के सर्वर में शुक्रवार को वैश्विक स्तर पर आई गड़बड़ी के कारण राष्ट्रीय राजधानी में भी उड़ाने में देरी और दो दर्जन से अधिक फ्लाइट्स रद्द होने से यात्री परेशान रहे। उड़ानों के टेकऑफ में देरी के अलावा, चेक-इन तथा बुकिंग में भी लोगों को समस्याओं का सामना करना पड़ा। साथ ही कई विमान हवाई अड्डे पर ही खड़े रह गए।

इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर माइक्रोसॉफ्ट की क्लाउड सर्विस में गड़बड़ी के कारण ऑनलाइन चेक-इन सेवा बंद कर दी गई.। इतना ही नहीं, इस गड़बड़ी के चलते हुई अव्यवस्था का असर रेलवे स्टेशन पर भी दिखाई दिया। नई दिल्ली के रेलवे स्टेशन पर भी लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गई। इस दौरान दिल्ली से भोपाल, मुंबई, बैंगलुरु, लखनऊ, वाराणसी चेन्नई, कोलकता, पटना व रांची समेत अन्य करीब 150 उड़ाने विलंब से रवाना हुई। वहीं करीब 30 फ्लाइट्स को रद्द कर दिया है। जिसके कारण हवाई अड्डे पर भीड़ की वहज से अफरा-तफरी का माहौल रहा। कई एयरलाइन कंपनियों ने सोशल मीडिया मंच कहा कि वे मैनुअल ढंग से चेक-इन और बोर्डिंग प्रक्रिया का पालन कर रही हैं। उन्होंने यात्रियों को तकनीकी समस्याओं के कारण देरी होने की जानकारी दी। इंडिगो, स्पाइसजेट और अकासा को अपने नेटवर्क पर ऑनलाइन चेक-इन और बोर्डिंग प्रक्रियाओं में व्यवधान का सामना करना पड़ा, जिसके कारण उन्हें ऑफलाइन माध्यम से काम करना पड़ा। इंडिगो ने एक्स पर कहा, उनका सिस्टम फिलहाल माइक्रोसॉफ्ट के व्यवधान की वजह से प्रभावित हैं जिसका असर अन्य कंपनियों पर भी पड़ रहा है। इस दौरान बुकिंग, चेक-इन, बोर्डिंग पास तक पहुंच और कुछ उड़ानें भी प्रभावित हो सकती हैं। कफायती एयरलाइन अकासा ने कहा, हमारे सेवा प्रदाता के साथ बुनियादी ढांचे से जुड़ी समस्याओं के कारण बुकिंग, चेक-इन और बुकिंग प्रबंधन सेवाओं सहित कुछ ऑनलाइन सेवाएं अस्थाई रूप से अनुपलब्ध रहेंगी। फिलहाल हम हवाई अड्डों पर ऑफलाइन चेक-इन और बोर्डिंग प्रक्रियाओं का पालन कर रहे हैं। स्पाइसजेट ने कहा कि वह अपने सेवा प्रदाता के साथ तकनीकी चुनौतियों का सामना कर रही है, जिससे बुकिंग, चेक-इन और बुकिंग कार्यक्षमताओं के प्रबंधन सहित ऑनलाइन सेवाएं प्रभावित हो रही हैं। ऐसी स्थिति में एयरलाइन ने सभी हवाई अड्डों पर ऑफलाइन चेक-इन और बोर्डिंग प्रक्रिया शुरू कर दी है।

इस बीच दिल्ली से रांची जा रहे मदन मोहन ने बताया कि वह सुबह 11 बजे से फ्लाइट के इंतजार में बैठे थे, लेकिन सर्वर ठप होने की वजह से कुछ काम नहीं हो पा रहा है। उन्हें 4 बजे रांची पहुंचना था, लेकिन अभी भी फ्लाइट का कोई अभी आता-पता नहीं है। एक फंक्शन में डेढ़-दो लाख रुपये लगाया था, जहां पहुंचना था, लेकिन सब बेकार हो गया।इंदिरा गांधी टर्मिनल 3 एयरपोर्ट पर बैठे उमोद रॉय ने बताया कि वे जम्मू कश्मीर से आए थे और असम जाना था लेकिन यहां आकर पता चला कि उड़ान रद्द हो गई। काफी देर से परेशान हैं और दूसरा कोई चारा नहीं है।

आतिशी ने केंद्र से मांगें 10,000 करोड़

● कहा, पिछले साल केंद्र सरकार को 2.07 लाख करोड़ आयकर और 25,000 करोड़ रुपये जीएसटी दिया, बदले में कुछ नहीं मिला

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

केंद्र के वार्षिक बजट पेश होने से पहले दिल्ली सरकार की वित्तमंत्री आतिशी ने शुक्रवार को बुनियादी ढांचे के विकास के लिए केंद्र सरकार से 10,000 करोड़ रुपये आवंटित करने का अनुरोध किया है।

उन्होंने दावा किया कि पिछले साल दिल्ली वालों ने केंद्र सरकार को 2.07 लाख करोड़ आयकर और 25,000 करोड़ रुपये जीएसटी दिया लेकिन इसके बदले केंद्र सरकार ने दिल्ली को एक पैसा तक नहीं दिया। वहीं मुंबई से 5 लाख करोड़ रुपये इनकम टैक्स के बदले महाराष्ट्र को केंद्र से 54,000 करोड़ रुपये मिले, कर्नाटक को भी 2 लाख करोड़ के बदले 33,000 करोड़ रुपये मिले। आतिशी ने राष्ट्रीय राजधानी को और अधिक धन जारी करने की वकालत करते हुए कहा कि इसे सड़क, परिवहन और बिजली क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास के साथ-साथ शहर के सौंदर्यीकरण पर खर्च किया जा सकता है। आतिशी ने शुक्रवार को संवाददाता सम्मेलन में कहा कि इस बार केंद्रीय बजट में दिल्ली की माँग है कि दिल्ली वालों के कुल इनकम टैक्स कंट्रीब्यूशन का मात्र 5फीसदी हिस्सा यानि दस हजार करोड़ दिल्ली तरक्की के लिए मिले। दिल्ली के लोगों ने ईमानदारी से टैक्स दिया फिर भी केंद्र उनके साथ सौतेला व्यवहार किया।

आतिशी ने दावा किया पूरी दुनिया में किसी भी शहर और राज्य के साथ ऐसा अन्याय नहीं होता होगा जो भाजपा शासित केंद्र दिल्ली के साथ कर रही है। उन्होंने कहा कि, इस केंद्रीय बजट में दिल्ली वाले भीख नहीं बल्कि केंद्र से अपना हक मांग रहे हैं। वित्त मंत्री ने कहा कि, 23 जुलाई को केंद्र सरकार का बजट आने वाला है। पिछले साल 2023-24 में ये 45 लाख करोड़ रुपये था। केंद्र सरकार बजट में जो पैसा खर्च करती है, वो पैसा देश के लोगों से मिलने वाले टैक्स से आता है।

किडनी रैकेट का भंडाफोड़, 15 गिरफ्तार

● दिल्ली एनसीआर, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश और गुजरात में था सक्रिय

● आधा दर्जन राज्यों के 11 अस्पतालों में हुई 34 किडनी ट्रांसप्लांट

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

अंतरराज्यीय किडनी रैकेट का सरगना समेत 15 पुलिस की गिरफ्त में।

अपराध शाखा ने अंतरराज्यीय किडनी रैकेट का भंडाफोड़ करते हुए सरगना समेत 15 लोगों को गिरफ्तार किया है। गिरोह के सदस्य दिल्ली एनसीआर समेत पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश और गुजरात में सक्रिय था और रुपये के बदले में प्रत्यारोपण के लिए फर्जी दस्तावेज तैयार कर डोनर को मरीज का रिश्तेदार बता देता था।

पुलिस ने गैंग से जुड़े जिन आरोपियों को गिरफ्तार किया उसमें गिरोह का सरगना, अस्पतालों के ट्रांसप्लांट कोऑर्डिनेटर, मरीज और डोनर समेत आठ लोग शामिल हैं। यह गिरोह सोशल मीडिया के जरिए गरीब डोनर को ढूंढते थे और उन्हें 5-6 लाख रुपए देकर उनकी किडनी को 35-40 लाख रुपए में मरीजों को बेचते थे।अपराध शाखा के पुलिस उपायुक्त अमित गोयल ने बताया कि रैकेट के सरगना संदीप आर्य को गोवा से गिरफ्तार किया गया है, साथ ही अन्य आरोपियों की पहचान देवेंद्र झा, विजय कुमार कश्यप, पुनीत कुमार, मोहम्मद हनीफ शेख, चीका प्रशांत, तेज प्रकाश और रोहित खन्ना के रूप में हुई है। संदीप एक सौदे में 7 से 8 लाख रुपए वसूलता था। आरोपियों से जो दस्तावेज जब्त किए गए हैं उसमें विभिन्न राज्यों के कई अधिकारियों के नाम की 34 स्टाम्प, किडनी मरीजों और दानदाताओं की छह जाली फाइलें, जाली दस्तावेज तैयार करनेके लिए विभिन्न लेबोरेट्रीज और अस्पतालों के दस्तावेज, सील बनाने वाली सामग्री, दो लैपटॉप जिनमें किडनी ट्रांसप्लांट से संबंधित डेटा और रिकॉर्ड मौजूद हैं। इसके अलावा 17 मोबाइल फोन, नौ सिम कार्ड और 1.5 लाख रुपए नगद, मरीजों को प्रभावित करने के लिए सरगना संदीप आर्य द्वारा उपयोग की जाने वाली मर्सिडीज कार शामिल है।

अमित गोयल ने बताया कि अपराध शाखा को भारतीय नागरिकों के अवैध किडनी ट्रांसप्लांट में शामिल इस रैकेट के बारे में मुखबिर से सूचना मिली थी। आरोपियों के बारे में जानकारी इकट्ठा करने और सिंडिकेट के पीड़ितों की पहचान करने के दौरान, एक महिला शिकायतकर्ता ने संदीप और विजय कुमार कश्यप उर्फ सुमित के खिलाफ शिकायत की, जिसमें उसने आरोप लगाया कि इन दोनों ने किडनी प्रत्यारोपण के बहाने उसके पति से 35 लाख रुपए ठगेहैं। 26 जून, को सर्विलांस की मदद से आरोपियों की पहचान की गई और विभिन्न टीमों द्वारा कई छापे मारे गए। डीसीपी ने बताया कि, इस रैकेट का सरगना संदीप आर्य नोएडा, उत्तर प्रदेश का रहने वाला है। वह फरीदाबाद, दिल्ली, गुरुगुग्राम, इंदौर और वडोदरा के विभिन्न अस्पतालों में ट्रांसप्लांट को-ऑर्डिनेटर के तौर पर काम करता था। वह मरीजों से संपर्क करता था और उन अस्पतालों में किडनी ट्रांसप्लांट की व्यवस्था करता था, जहां उसे ट्रांसप्लांट को-ऑर्डिनेटर के तौर पर तैनात किया गया था। वह प्रत्येक किडनी ट्रांसप्लांट के लिए करीब 35-40 लाख रुपए लेता था, जिसमें मरीजों द्वारा चुकाया जानेवाला अस्पताल खर्च, डोनर की व्यवस्था, रहने की व्यवस्था और सर्जरी के लिए जरूरी अन्य कानूनी दस्तावेज भी शामिल होते थे।

केंद्र दिल्ली की योजनाओं पर हर साल खर्च करता है डेढ़ लाख करोड़ : बिधूड़ी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● कहा, जब पास पैसे की कमी नहीं है तो फिर आतिशी विकास के लिए पैसा क्यों मांग रही हैं

दक्षिण दिल्ली से भाजपा सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी ने आतिशी पर पटलवार करते हुए कहा कि वित्तमंत्री ने फिर सफेद झूठ बोला है कि केंद्र सरकार के बजट में दिल्ली को एक रुपया भी नहीं मिलता। उन्होंने कहा कि यह कितनी हैरानी की बात है कि एक तरफ तो मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल यह दावा करते हैं कि दिल्ली में पैसे की कोई कमी नहीं है लेकिन दूसरी तरफ आतिशी यह मांग कर रही हैं कि केंद्र सरकार 10 हजार करोड़ रुपये दे तो दिल्ली का विकास हो सके।

बिधूड़ी ने कहा कि आम आदमी पार्टी की सरकार के भ्रष्टाचार के कारण दिल्ली जल बोर्ड 73 हजार करोड़ रुपये के घाटे में है। डीटीसी भी इस समय करीब 50 हजार करोड़ के घाटे में जा चुकी है। मुख्यमंत्री ने अपने ऐशो-आराम के लिए शीशमहल पर ही सैंकड़ो रुपये रुपए खर्च कर दिए हैं। दिल्ली अब विकास के लिए तरस रही है। दिल्ली वालों को भीषण गर्मी में पीने के पानी के लिए जूझना पड़ा, बिजली के बिलों से बेचैनी बढ़ी हुई है। सड़कों का बुरा हाल है और अपनी उम्र पूरी कर चुकी बूढ़ी बसों से दिल्ली का बोझ नहीं संभल रहा। भाजपा सांसद ने कहा कि आतिशी की झूठ बोलने की आदत से जनता में उनकी विश्वसनीयता खत्म हो गई है। वह प्रतिदिन एक नया झूठ गढ़ती है और अब केंद्रीय बजट पेश होने से पहले वह अपनी सरकार के भ्रष्टाचार से ध्यान हटाने के लिए फिर से झूठ बोल रही हैं।

सुनीता आज से हरियाणा में आप के चुनाव प्रचार का करेंगी आगाज

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

आम आदमी पार्टी हरियाणा के लिए पार्टी के संयोजक व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गारंटियों की घोषणा के साथ शनिवार को राज्य में विधानसभा चुनाव के लिए प्रचार अभियान का शुरू करेगी। केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल शनिवार को पंचकूला में एक जनसभा में केजरीवाल की गारंटी की घोषणा करेंगी। उनके साथ पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान, आप के राष्ट्रीय महासचिव संदीप पाठक और राज्यसभा सदस्य संजय सिंह भी होंगे।

मुख्यमंत्री और आप के राष्ट्रीय संयोजक केजरीवाल आबकारी नीति से संबंधित मामले में न्यायिक हिरासत में हैं। सुनीता केजरीवाल ने हालिया लोकसभा चुनाव में दिल्ली, हरियाणा और गुजरात में पार्टी उम्मीदवारों के लिए सक्रिय रूप से प्रचार किया था। आप ने पिछले मंगलवार को घोषणा की थी कि वह हरियाणा की सभी 90 विधानसभा सीट पर चुनाव लड़ेगी। हरियाणा में फिलहाल भाजपा की सरकार है। आप ने हरियाणा में कई चुनाव लड़े हैं, लेकिन उसे अब तक चुनावी सफलता नहीं मिली है।

यमुना में धार्मिक या अनधिकृत संरचना की अनुमति नहीं: कोर्ट

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली उच्च न्यायालय ने कहा है कि यमुना नदी के डूब क्षेत्र (पर्यावरण के लिहाज से संवेदनशील क्षेत्र) को अतिक्रमण से पूरी तत्परता के साथ संरक्षित करना पड़ेगा और इस क्षेत्र में धार्मिक या किसी अन्य संरचना को कायम रखने की अनुमति नहीं दी जा सकती तथा इसे आवश्यक रूप से हटाना ही पड़ेगा।

कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश मनमोहन और न्यायमूर्ति तुषार राव गेडेला की खंडपीठ ने एकल न्यायाधीश के उस आदेश में हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया, जिसमें प्राचीन शिव मंदिर को ध्वस्त करने की अनुमति दी गई है। इस मंदिर को गीता कॉलोनी क्षेत्र में नदी के पास बनाया गया है।

अदालत ने कहा कि याचिकाकर्ता प्राचीन शिव मंदिर एवं अखाड़ा समिति के पास किसी तरह की वैधता दर्शाने के लिए किसी दस्तावेज का एक टुकड़ा तक नहीं है। खंडपीठ ने 10 जुलाई के अपने आदेश में कहा, यह स्पष्ट है कि मंदिर का निर्माण पर्यावरण के लिहाज से संवेदनशील क्षेत्र में अतिक्रमित भूमि पर अनधिकृत रूप से किया गया है।

सिख दंगाः टाइटलर के खिलाफ फैसला सुरक्षित

● अदालत दो अगस्त को सुना सकती है आदेश

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली की एक अदालत ने शुक्रवार को सिख विरोधी दंगों के एक मामले में कांग्रेस नेता जगदीश टाइटलर के खिलाफ आरोप तय करने के बारे में अपना आदेश सुरक्षित रख लिया।

दंगे के इस मामले में तीन लोग मारे गए थे। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) मामलों के विशेष न्यायाधीश राकेश सियाल ने केंद्रीय जांच एजेंसी और बचाव पक्ष के वकीलों की दलीलें सुनने के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया। अदालत के दो अगस्त को फैसला सुनाने की संभावना है।

सीबीआई ने एक गवाह के हवाले से आरोपपत्र में आरोप लगाया था कि टाइटलर एक नवंबर 1984 को गुरुद्वारा पुल बंगश के सामने एक सफेद एम्बेसडर कार से बाहर निकले और भीड़ को सिखों की हत्या करने के लिए उकसाया। पूर्व केन्द्रीय मंत्री टाइटलर पर आरोप है कि उन्होंने भीड़ से कहा था, सिखों को मार डालो, उन्होंने हमारी मां को मार डाला है।

इस घटना के बाद तीन लोगों की हत्या कर दी गई थी। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की 31 अक्टूबर 1984 को उनके सिख अंगरक्षकों द्वारा हत्या किए जाने के बाद देश के कई हिस्सों में सिख विरोधी दंगे भड़क उठे थे।

पिछले वर्ष अगस्त में एक सत्र अदालत ने इस मामले में टाइटलर को अग्रिम जमानत दे दी थी। अदालत ने टाइटलर पर कुछ शर्तें भी लगाई थीं, जिनमें यह शर्तें भी थीं कि वह सबूतों के साथ छेड़छाड़ नहीं करेंगे और बिना अनुमति के देश नहीं छोड़ेंगे।

दिल्ली मेट्रो : 20 और 21 को येलो लाइन के समय में मामूली बदलाव

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली मेट्रो के चौथे चरण में जनकपुरी पश्चिम से आर.के.आश्रम के बीच बन रहे गलियारे के 490 मीटर खंड में निर्माणकार्य की वजह से येलो लाइन की सेवाओं के समय में मामूली बदलाव किया गया है। f

एलो लाइन गुरुग्राम के मिलेनियम सिटी सेंट को दिल्ली के समयपुर बादली से जोड़ती है। इसमें कहा गया है कि चौथे चरण में जनकपुरी पश्चिम से आरके आश्रम के बीच के गलियरे के 490 मीटर खंड पर पूर्व निर्धारित निर्माण कार्य करने के लिए शनिवार और रविवार की मध्यरात्रि को सेवाओं को कुछ समय के लिए विनियमित किया जाएगा। इस दौरान उस हिस्से का निर्माण किया जाएगा जो एलो लाइन पर हैदरपुर बादली मोड़ मेट्रो स्टेशन को पार करता है। परामर्श के मुताबिक शनिवार को समयपुर बादली से मिलेनियम सिटी सेंटर के लिए आखिरी ट्रेन रात 11 बजे के बजाय 10 बजकर 45 मिनट पर रवाना होगी और इसी प्रकार मिलेनियम सिटी सेंटर से समयपुर बादली के लिए आखिरी ट्रेन रात 11 बजे के बजाय रात साढ़े नौ बजे रवाना होगी। परामर्श के मुताबिक, रविवार को समयपुर बादली से मिलेनियम सिटी सेंटर से पहली ट्रेन सुबह छह बजे के बजाय सात बजे रवाना होगी। समयपुर बादली से जहांगीरपुरी स्टेशन के बीच शनिवार रात 11 बजे से रविवार सुबह सात बजे कोई ट्रेन सेवा उपलब्ध नहीं होगी।

एनडीएमसी ने जलभराव से निपटने के लिए 75 पंपों को रिजर्व रखा

नई दिल्ली। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद ने जलभराव की निगरानी के लिए 20 नए स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे लगाये हैं और भारी बारिश होने की स्थिति में अतिरिक्त पानी निकालने के लिए 75 पोर्टेबल पंप खरीदे हैं। ज्ञाता हो कि यहां विश्व धरोहर समिति की बैठक बैठक 21 से 31 जुलाई तक राष्ट्रीय राजधानी में आयोजित की जाएगी। एनडीएमसी के उपाध्यक्ष सतीश उपाध्याय ने कहा कि हमारे पास छह नियंत्रण कक्ष हैं जो स्थिति पर नजर रखेंगे, जबकि 175 कर्मी जमीन पर रहेंगे।

इनके अलावा, केंद्रीय कमान और नियंत्रण कक्ष भी स्थिति पर नजर रखेगा। उपाध्याय ने कहा कि सत्या सदन, लोधी एस्टेट, अफ्रीका एवेन्यू अंडरपास, पंचकुइयां रोड, रायसीना रोड, न्याय मार्ग, भारती नगर और जाकिर हुसैन मार्ग पर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। उन्होंने कहा कि खान मार्केट, कनॉट प्लेस और जनपथ पर एक विशेष सौंदर्यीकरण अभियान चलाया गया है। उन्होंने कहा कि नगर निकाय 26 जुलाई को कुतुब इंस्टीट्यूशनल क्षेत्र में प्रतिनिधियों के लिए एक विशेष रात्रिभोज का भी आयोजन करेगा। 28 जून को रिकॉर्ड 228 मिमी बारिश दर्ज की गई।

खेल प्रतिभाओं को खोज कर निखारा जाएगा : डॉ. मंडाविया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

खेलो इंडिया राइजिंग टैलेंट के दूसरे चरण का उद्घाटन करते केंद्रीय मंत्री मनसुख।

● खेल एवं युवा मामले एवं श्रम कल्याण मंत्री ने खेलो इंडिया राइजिंग टैलेंट के दूसरे चरण का किया उद्घाटन

खेल एवं युवा मामले एवं श्रम कल्याण मंत्री डॉ. मनसुख मंडाविया ने कहा कि देशभर से खेल प्रतिभाओं को खोज कर उन्हें स्तरीय प्रशिक्षण एवं सुविधाएं देकर निखारा जायेगा।

मोदी 3.0 सरकार के पहले 100 दिन के एजेंडे में देशभर से 1 लाख खेल प्रतिभाओं की पहचान की जाएगी। डॉ. मंडाविया ने यह बात युवा खेल प्रतिभाओं की पहचान के मकसद से केंद्र सरकार द्वारा संचालित जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में कीर्ति (खेलो इंडिया राइजिंग टैलेंट आइडेंटिफिकेशन के दूसरे चरण के उद्घाटन अवसर पर कही। कीर्ति कार्यक्रम के अंतर्गत दिल्ली नगर निगम के विद्यालयों में पढ़ने वाले 20 हजार छात्रों का चयन कर खेल प्रतिभाओं की पहचान की जाएगी। इस मौके पर डॉ. मंडाविया ने कहा कि उन्हें खुशी है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सपने को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। देश विविधताओं से भरा हुआ है। यहां प्रतिभाओं की कमी नहीं रही है। दिल्ली नगर निगम के आयुक्त अश्वनी कुमार ने इस अवसर पर कहा कि यह एक अहम कार्यक्रम है। यदि हम आरंभ से ही खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करें तो वो आगे चलकर बड़े खिलाड़ी बन सकते हैं। निगम ने फुटबॉल के क्षेत्र में एक प्रयोग के माध्यम से नजफगढ़ क्षेत्र में फुटबॉल अकादमी स्थापित की थी जिसके चलते निगम के छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया एवं वे अंडर 11 आयुवर्ग में दिल्ली में प्रथम स्थान पर रहे। कीर्ति कार्यक्रम के माध्यम से हमारा उद्देश्य है कि प्रतिभा के धनी बच्चे को उनके इलाके में मदद की जाए।

ई-कचरे के लिए 15 मेट्रो स्टेशनों पर रख जाएंगे डिब्बे

● डीएमआरसी के प्रबंध निदेशक विकास कुमार ने हौजखास से की शुरूआत

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उद्घाटन के मौके पर डीएमआरसी के प्रबंधक निदेशक डॉ. विकास और जापान के राजदूत सुजुकी व अन्य।

दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) ने जापानी कंपनी के साथ मिलकर इलेक्ट्रोनिक-अपशिष्ट पुनर्चक्रण यानि ई-कचरे के निस्तारण के लिए मेट्रो स्टेशन पर 15 डिब्बे रखने जा रही है। जापान के राजदूत और डीएमआरसी प्रबंधक ने हौजखास मेट्रो स्टेशन से इस सुविधा की शुरुआत की।

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (डीएमआरसी) ने जापानी रीसाइक्लिंग फर्म जेआईटी यामानाशी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से यात्रियों के लिए प्रिंटर स्याही की बोतलों और कार्टेज के निपटान के लिए ई-कचरा रीसाइक्लिंग बक्से की सुविधा शुरू की है। डीएमआरसी के प्रबंधक निदेशक डॉ. विकास कुमार और जापान के राजदूत सुजुकी हिरोशी की उपस्थित में इस सुविधा की शुरू हौज खास मेट्रो से शुरू की। ये रीसाइक्लिंग बॉक्स 15 प्रमुख इंटरचेंज मेट्रो स्टेशनों पर लगाये गए हैं। विकास कुमार ने बताया कि डीएमआरसी की यह पहल यात्रियों प्रिंटर स्याही की बोतलों और कार्टेज निपटान को प्रत्यसाहित करने के लिए की गई है। शुरुआत में यह ई-कचरे डिब्बे वेलकम, कश्मीरी गेट, नेताजी सुभाष प्लेस, गुरु तेग बहादुर नगर (नॉन इंटरचेंज स्टेशन), नई दिल्ली, राजीव चौक, केंद्रीय सचिवालय, दिल्ली हाट-आईएनए, हौज खास, द्वारका, जनकपुरी पश्चिम, राजौरी गार्डन, मंडी हाउस , यमुना बैंक, और लाजपत नगर पर लगाये जाएंगे।

एक अन्य अधिकारी के मुताबिक डीएमआरसी पर्यावरणीय जिम्मेदारी के प्रति प्रतिबद्ध है, जेआईसीए द्वारा उनके सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से संबंधित पहल के हिस्से के रूप में वित्त पोषित किया जा रहा है। कॉरपोरेशन का मनाना है कि एकत्रित ई-कचरे को जिम्मेदारीपूर्वक पुनर्चक्रित किया जाना चाहिए।

उमस भर रहा शुक्रवार, आज हल्की बारिश की संभावना

नई दिल्ली। दिल्लीवासियों को शुक्रवार को उमस भरी गर्मी का सामना करना पड़ा और पिछले 24 घंटों में शहर में 4.3 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई। मौसम विभाग ने यह जानकारी दी है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने बताया कि बृहस्पतिवार सुबह 8.30 बजे से शुक्रवार सुबह 8.30 बजे के बीच पीतमपुरा में 42.5 मिमी बारिश दर्ज की गई, जबकि आया नगर में (13.3 मिमी), पालम में (4.8 मिमी) और शहर के प्राथमिक मौसम केंद्र सफदरजंग में 4.3 मिमी वर्षा दर्ज की गई। आईएमडी ने कहा कि अधिकतम तापमान 35.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो इस मौसम के लिए सामान्य है। आईएमडी बुलेटिन के अनुसार, सापेक्षिक आर्द्रता 76 और 86 प्रतिशत के बीच रही।

राइट्स लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
शिखर, प्लॉट सं. 1, सैक्टर-29, गुरुग्राम-122001
सीआईएन : L74899DL1974GOI007227

जनशक्ति की नियुक्तिः

वीसी सं.	पद	रिक्तियों की संख्या
187/24	रेजिडेंट इंजीनियर – सिविल संविदा पर	05
188/24	रेजिडेंट इंजीनियर – मैकेनिकल संविदा पर	06
189/24	रेजिडेंट इंजीनियर – इलेक्ट्रिकल संविदा पर	03
190/24	उप महाप्रबंधक (ईएस एंड टी) नियमित आधार पर	02

पद, पारिश्रमिक, योग्यता, अनुभव, आयु, तिथि और स्थान, चयन प्रक्रिया आदि के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए, उम्मीदवार राइट्स की वेबसाइट www.rites.com पर कैरियर सेक्शन के अंतर्गत पोस्ट किए गए विस्तृत विज्ञापन को देख सकते हैं।

वीसी संख्या 187/24, 188/24 एवं 189/24 के लिए लिखित परीक्षा 18.08.2024 को गुवाहाटी, कोलकाता, भुवनेश्वर और गुरुग्राम में आयोजित की जाएगी।

पायनियर
नई दिल्ली, शनिवार, 20 जुलाई, 2024

ब्रजमंडल यात्रा को लेकर इस बार अधिक सतर्कता बरत रही पुलिस

● पिछले साल यात्रा के दौरान भड़क गई थी हिंसा

● सुरक्षा के लिए ड्रोन से नजर रखेगी पुलिस, मार्ग भी बदला जाएगा

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

बीते वर्ष 31 जुलाई को नूंह के नल्हड़ेश्वर मंदिर में जलाभिषेक के लिए निकाली गई ब्रजमंडल यात्रा में हुई हिंसा को देखते हुए इस बार पुलिस पहले से अधिक सक्रियता बरत रही है। यात्रा का रूट भी इस बार बदला गया है। साथ ही पुलिस चप्पे-चप्पे पर नजर रखेगी। ड्रोन के माध्यम से पुलिस लोगों पर नजर रखेगी।

यात्रा को लेकर आईजी संजय कुमार, सीआईडी प्रमुख आलोक मित्तल ने अधिकारियों को विशेष हिदायतें दी हैं। नूंह के पुलिस अधीक्षक विजय प्रताप का कहना है कि काफी संख्या में पुलिस बल की तैनाती यात्रा को लेकर की जाएगी। पिछली बार से सबक लेते हुए पुलिस, प्रशासन और सरकार इस यात्रा पर पूरी नजर बनाए हुए हैं। नूंह जिला की सीमाओं को सील किया जाएगा। नाकों पर पूरी जांच की जाएगी, उसके बाद ही वे आगे बढ़ पाएंगे। यात्रा के दौरान पुलिस के जवान, सीआरपीएफ, आरपीएफ, कमांडो व अन्य सुरक्षा कर्मियों को तैनात करने की योजना है।

तैयारी में जुटे हिंदू संगठन

ब्रजमंडल जलाभिषेक यात्रा 22 जुलाई को होगी। इसके लिए हिंदू संगठन अपने स्तर पर तैयारी में जुटे हैं। उम्मीद जताई जा रही है कि पिछली बार से अधिक भीड़ इस बार की जलाभिषेक यात्रा में होगी। यात्रा को और भव्यता से निकालते हुए श्रद्धालु नल्हड़ेश्वर मंदिर में जलाभिषेक करेंगे। पिछली बार की यात्रा में बिट्टू बजरंगी और मोनू मानेसर हिंसा भड़काने को लेकर रडार पर थे। उनके खिलाफ केस दर्ज करके पुलिस जांच भी कर रही है।

हथियारों पर रहेगी पाबंदी

पुलिस यात्रा को लेकर अभी से अलर्ट पर है। इस बार यात्रा वाले दिन ना केवल यात्रा का रूट बदला जाएगा, बल्कि यातायात रूट भी बदला जाएगा। यात्रा में आने वाले लोग हथियार, लाठी-डंडे व तेज म्यूजिक नहीं बजा सकेंगे। किसी भी तरह से धार्मिक भावनाएं भड़काने का प्रयास करने वाले लोगों पर पुलिस की कड़ी नजर रहेगी। पुलिस सूत्रों के अनुसार यात्रा के दिन क्षेत्र में मोबाइल नेटवर्क भी बंद किया जा सकता है, ताकि अफवाह न फैल सके।

लघु सचिवालय परिसर में आवश्यक बदलाव के साथ सौंदर्यीकरण कार्य प्रगति पर

गुरुग्राम। लघु सचिवालय परिसर के मौजूदा स्वरूप को पैदल यात्रियों के लिए और अधिक सुगम बनाने व सचिवालय में आने वाले वाहन सुव्यवस्थित तरीके से बिना किसी जाम के सरल तरीके से पार्किंग परिसर तक आवागमन कर सके। इन्ही उद्देश्यों की पूर्ति के लिए डीसी निशांत कुमार यादव के मार्गदर्शन में लोक निर्माण विभाग द्वारा लघु सचिवालय परिसर में विभिन्न श्रेणियों के पार्किंग क्षेत्र व पैदल पारपथ के सुंदरीकरण का कार्य प्रगति पर है।

दैनिक कार्यों से लघु सचिवालय आने वाले आमजन को जल्द ही इस दिशा में सुखद बदलाव देखने को मिलेंगे। डीसी निशांत कुमार यादव ने बताया कि लघु सचिवालय के सौंदर्यकरण के साथ-साथ यहां स्थित सरकारी कार्यालयों में काम के सिलसिले में प्रतिदिन आने वालों की सुविधा का भी ध्यान रखा गया है। उन्होंने बताया कि लघु सचिवालय आने वाले पैदल यात्री बिना किसी असुविधा के सुगम तरीके से अपने गंतव्य स्थान तक पहुंच सके। इसके मद्देनजर कोर्ट की ओर से आ रहे वनवे मार्ग की लेन में से एक-एक लेन को पैदल पारपथ में परिवर्तित किया गया है।

क्राउडस्ट्राइक से गुरुग्राम की कंपनियां भी हुईं प्रभावित

● इंजीनियर व अन्य तकनीकी स्टाफ रहा परेशान

● ऑनलाइन टिकट बुकिंग से लेकर हर तरह के काम पर पड़ा असर

संजय कुमार मेहरा। गुरुग्राम

दिन भर कंप्यूटर्स पर इस तरह की आती रही स्क्रीन।

यूएस रीजन से माइक्रोसॉफ्ट के विंडोज कंपयूटर्स पर हुई क्राउडस्ट्राइक के कारण विंडोज कंप्यूटर्स ने काम करना बंद कर दिया। वर्ल्ड वाइड इस समस्या से आईटी हब गुरुग्राम भी अछूता नहीं रहा। यहां बड़ी कंपनियों में भी उत्पादन व अन्य काम प्रभावित हुए। इंजीनियर कहते हैं कि जिस गति से यह गड़बड़ी आई है, उसे दुरुस्त किया जाना इतना आसान नहीं है। उसमें भी समय लगेगा।

शुक्रवार को क्राउडस्ट्राइक फाल्कन सेंसर अपडेट के कारण दुनिया भर में उत्पादन, शेयर बाजार, बैंकों का काम, एयरलाइंस में टिकटें बुकिंग हों या अन्य तकनीकी काम, सभी प्रभावित हुए। इस समस्या से कंप्यूटर्स अपने आप बंद होने लगे। ब्लू स्क्रीन नजर आने लगी। स्क्रीन पर लिखा आ रहा था-ऐसा लगता है कि विंडोज सही तरीके से लोड नहीं हुआ। यदि आप पुनः आरंभ करना चाहते हैं। फिर से प्रयास करना चाहते हैं, तो नीचे मेरा पीसी पुनः आरंभ करें चुनें। बताया गया कि ब्लू स्क्रीन तभी हो सकती है, जब कोई गंभीर समस्या विंडोज पर प्रभाव डालकर बंद कर दे। हालांकि माइक्रोसॉफ्ट ने बयान जारी करके कहा कि इस समस्या का निदान किया जा रहा है। सेवाओं में सुधार हो रहा है।

क्राउडस्ट्राइक के पैच में गड़बड़ी पता चली: कुलदीप

यहां एक आईटी कंपनी में सीनियर टेक्निकल ऑर्किटेक्ट सॉल्यूशन कुलदीप कादयान ने कहा कि सेंट्रल यूएस रीजन की सर्विसेज बंद हुई हैं। क्राउडस्ट्राइक का पैच आया है। जब पैच मशीनों में इंस्टॉल हुआ तो प्रोब्लम शुरू हुई। उस पैच में कुछ गड़बड़ी थी। उसी की वजह से कंप्यूटर री-स्टार्ट होने शुरू हो गए। उस रीजन में बनी हुई सर्विसेज डाउन हो गई। रात से ही यह शुरू हो गया था। माइक्रोसॉफ्ट ने तो अपनी चीजें ठीक कर दीं। क्राउडस्ट्राइक वाली समस्या अभी ठीक नहीं हुई है। इसे दुरुस्त करने में अभी समय लगेगा। जिस तरीके से पैच आया है, उस तरीके से इंस्टॉल नहीं होगा। अगर पैच ठीक करके देंगे तो भी इंस्टॉल कैसे होगा। क्योंकि कंप्यूटर बार-बार री-स्टार्ट हो रहे हैं। इसे मैन्युअली ठीक किया जाएगा। इंजीनियर्स को एक-एक कंप्यूटर को ठीक करना पड़ेगा।

साऊथ कोरियाई प्रतिनिधिमंडल ने की निगमायुक्त से मुलाकात

गुरुग्राम। शुक्रवार को साउथ कोरिया की कंपनी हंसामकोरा लिमिटेड के प्रतिनिधिमंडल ने नगर निगम गुरुग्राम के आयुक्त डा. नरहरि सिंह बांगड़ से मुलाकात की। नगर निगम गुरुग्राम कार्यालय में आयोजित बैठक में बेहतर जीवन के लिए जल गुणवत्ता प्रबंधन प्रस्ताव पर चर्चा हुई। कंपनी पायलट प्रोजेक्ट के तहत नगर निगम गुरुग्राम के वाटर बूस्टिंग भूमिगत टैंकों की कोटिंग करेगी, ताकि बेहतर एवं स्वच्छ जलापूर्ति सुनिश्चित की जा सके। कंपनी प्रतिनिधियों ने निगमायुक्त को बताया कि वाटर टैंकों के अंदरूनी दीवारों की कोटिंग होने से एक ओर जहां काई जमने की समस्या से छुटकारा मिलेगा, वहीं लीकेज का भी समाधान होगा। इसके अलावा, वाटर टैंक की लाइफ भी दोगुनी हो जाएगी तथा काई खत्म होने से पानी भी साफ रहेगा। कंपनी द्वारा पायलट प्रोजेक्ट के तहत एक वाटर टैंक का कार्य करवाएगी, इसके बाद अन्य टैंकों का कार्य किया जाएगा।

संयुक्त आयुक्त ने किया वजीराबाद क्षेत्र का दौरा

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

नगर निगम के जोन-3 क्षेत्र की संयुक्त आयुक्त सुमन भांखड़ ने अधिकारियों की टीम के साथ गांव वजीराबाद व आसपास के क्षेत्र का दौरा किया।

संयुक्त आयुक्त गांव वजीराबाद स्थित सामुदायिक केन्द्र में पहुंची। यहां पर उन्होंने निवर्तमान निगम पार्षद कुलदीप बोहरा व गांव के गणमान्य नागरिकों के साथ सामुदायिक केन्द्र परिसर में पौधारोपण किया तथा नागरिकों से आह्वान किया कि वे मानसून के सीजन में अधिक से अधिक पौधे लगाकर उनका पालन-पोषण करें। उन्होंने कहा कि पौधे हमें केवल फल व छाया ही नहीं, देते बल्कि जीवनदायिनी ऑक्सीजन भी हमें पौधों से ही मिलती है। इसके बाद संयुक्त आयुक्त ने सामुदायिक केन्द्र में आयोजित बैठक में वार्ड-31 की सफाई व्यवस्था की जिम्मेदारी वार्ड कमेटी तथा आरडब्ल्यूए आरडी सिटी को सौंपी। उन्होंने कहा कि वार्ड कमेटी तथा आरडब्ल्यूए क्षेत्र में सफाई कर्मियों की निगरानी करेंगी तथा उनकी उपस्थिति जांच भी उन्हीं के द्वारा की जाएगी।

1000 किमी पूरे होने पर हैप्पी कार्ड से रिचार्ज कराकर करें यात्रा

● गुरुग्राम डिपो से जारी हो चुके हैं 2665 हैप्पी कार्ड, एक लाख तक की आय वाले परिवार करें आवेदन

संजय कुमार मेहरा। गुरुग्राम

गुरुग्राम के रोडवेज डिपो से कार्ड लेते योजना के लाभार्थी।

हरियाणा में यात्रा की दृष्टि से हैप्पी कार्ड हिट हो रहा है। एक लाख रुपये तक की आय वाले परिवार इसके लिए आवेदन कर सकते हैं। इसकी खास बात यह है कि जब भी एक हजार किलोमीटर की सफर पूरा हो जाएगा तो यह रिचार्ज करवाकर यात्रा में प्रयोग किया जा सकता है। एटीएम की तरह यह काम करेगा। बस की टिकट लेने के लिए कंडक्टर को कैश देने की आवश्यकता नहीं होगी। कंडक्टर कार्ड को अपनी मशीन से पंच कर टिकट की राशि काट लेगा।

हरियाणा अंत्योदय परिवार परिवहन योजना अर्थात हैप्पी कार्ड की शुरुआत तो मार्च-2024 माह में कर दी गई थी। लोकसभा चुनाव में आचार संहिता लगने की वजह से मुख्यमंत्री नायब सिंह ने इसका वितरण जून माह में आरंभ किया। गुरुग्राम जिला में अभी तक हैप्पी कार्ड के लिए 4403 पात्र आवेदन कर चुके हैं। जिनमें से 2665 कार्ड जारी किए जा चुके हैं। परिवहन विभाग द्वारा लंबित 1738 कार्डों को भी जल्द जारी कर दिया जाएगा।

शुक्रवार को 93 हैप्पी कार्ड इश्यू किए गए हैं। इस कार्ड पर धारक परिवार के सभी सदस्य एक हजार किलोमीटर तक बस में फ्री यात्रा करने के पात्र हैं। उन्होंने बताया कि सीएससी सेंटर पर जाकर जिन परिवारों की फैमिली आईडी में इनकम एक लाख रुपए या इससे कम दर्शाई गई है, वे हैप्पी कार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। रोडवेज विभाग की ओर से 15 दिनों में इन आवेदकों को मोबाइल फोन पर एक ओटीपी भिजवाया जाता है।

हरियाणा रोडवेज के महाप्रबंधक प्रदीप अहलावत ने बताया कि एक कार्ड के लिए आवेदक को 50 रुपये का शुल्क देना होता है। एक साल के पश्चात कार्डधारक को फिर से 1000 किलोमीटर निःशुल्क यात्रा करने का लाभ प्राप्त होगा। उन्होंने बताया कि यह स्कीम आनलाइन है और इसके लिए पात्र व्यक्ति को बार-बार परिवहन विभाग के कार्यालय में आने की आवश्यकता नहीं है।

रोडवेज के महाप्रबंधक प्रदीप अहलावत ने बताया कि हैप्पी कार्ड की स्कीम का त्वरित लाभ पहुंचाने के लिए शनिवार और रविवार को भी उनका कार्यालय खुला रहेगा। इन दोनों दिन आवेदक कार्यालय समय में आकर अपना हैप्पी कार्ड बनवा सकते हैं।

संक्षिप्त समाचार

जिला एमएसएमई केंद्र के जागरूकता कैंप में भाग लेते अधिकारी।

एमएसएमई और आईएचएम ने लगाया जागरूकता कैंप

फरीदाबाद। जिला एमएसएमई केंद्र, फरीदाबाद की तरफ से होटल प्रबंधन संस्थान (आईएचएम), फरीदाबाद में एक दिवसीय जिला स्तरीय जागरूकता कैंप लगाया गया। इस कैंप का आयोजन उपायुक्त विक्रम सिंह के निर्देश पर भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना के तहत इकाइयों को प्रफुल्लित करने के उद्देश्य से किया गया। कैंप में संबंधित संस्थान में पढ़ने वाले बच्चों को विशेष तौर पर आमंत्रित किया गया। इस मौके पर जिला एमएसएमई केंद्र, बागवानी विभाग, जिला अग्रणी प्रबंधक (केनरा बैंक), पशुपालन एवं डेयरी विभाग, डीडीएम नाबार्ड, और ग्रामीण आजीविका कार्यक्रम के अधिकारी विशेष जानकारी देने पहुंचे। संयुक्त निदेशक, जिला एमएसएमई दिनेश कुमार शर्मा ने विद्यार्थियों को बताया कि खाद्य प्रसंस्करण के माध्यम से रोजगार सृजन एवं आर्थिक लाभ कर, आर्थिक क्रांति संभव है। प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना जो पिछले 3 वर्षों से चल रही है, जिसमें लोगों को लघु उद्योग के बारे में जानकारी दी जाती है और छोटे उद्योगों को खोलने के लिए विशेष जागरूकता कैंप लगाए जाते हैं।

29 जुलाई से 3 अगस्त तक लगेगी लोक अदालत

पलवल। सुप्रीम कोर्ट द्वारा सोमवार 29 जुलाई 2024 से शनिवार 3 अगस्त 2024 तक न्यायालय में लंबित मामलों के निपटारे के लिए विशेष लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। सर्वोच्च न्यायालय में लंबे समय से चलने वाले केस से संबंधित पार्टियां यदि विशेष लोक अदालत के सामने रखना चाहती है तो वे 28 जुलाई से पहले स्थानीय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के कार्यालय में संपर्क कर सकती हैं। जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण के सचिव एंव सीजेएम तैय्यब हुसैन ने बताया कि इसके तहत स्थानीय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के कार्यालय में ऑनलाइन या हाइब्रिड मोड के माध्यम से प्री-कंसिलीएटॉरी बैठकें आयोजित की जाएगी जिसमें पार्टियों के मध्य सुलह की संभावनाओं को परखते हुए ऐसे मामलों पर आगामी कार्रवाई की जाएगी। जिन मामलों में पार्टी सरकार है ऐसे मामले विशेष लोक अदालत में निपटाए जाने की संभावना है।

राजन मथुरेजा व गोल्डी अरोड़ा बने प्रभारी व सहप्रभारी

फरीदाबाद। भाजपा के जिलाध्यक्ष राजकुमार वोहरा ने आगामी चुनावों के मद्देनजर भाजपा के जिला कोषाध्यक्ष राजन मथुरेजा को भाजपा युवा मोर्चा का जिला प्रभारी तथा जिला सचिव गोल्डी अरोड़ा को भाजयुमो का जिला सहप्रभारी नियुक्त किया है। वोहरा ने बताया कि राजन मुथरेजा और गोल्डी अरोड़ा का पार्टी के प्रति समर्पण भावना के चलते यह जिम्मेदारी सौंपी गई है और उन्हें उम्मीद है कि वह इस जिम्मेदारी को बखूबी निभाते हुए संगठन को मजबूत करने का काम करेंगे। भाजपा जिलाध्यक्ष ने कहा कि विधानसभा चुनावों को कुछ समय शेष बचा है, ऐसे में संगठन में कर्मठ व मेहनती पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं को जिम्मेवारियां सौंपी जा रही हैं। ताकि भारतीय जनता पार्टी हरियाणा में लगातार तीसरी बार जीत की हैट्रिक लगा सके। वहीं भाजपा युवा मोर्चा के नवनियुक्त जिला प्रभारी राजन मुथरेजा तथा सह प्रभारी गोल्डी अरोड़ा ने अपनी नियुक्ति पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल, केंद्रीय सहकारिता राज्यमंत्री चौ. कृष्णपाल गुर्जर, भाजपा जिलाध्यक्ष राजकुमार वोहरा, निवर्तमान वरिष्ठ उपमहापौर देवेंद्र चौधरी का आभार जताया।

अब आसानी से पुलिस की पकड़ में आ सकेंगे अपराधी

● पुलिस आयुक्त कार्यालय में लगाई गई फॉरेन्सिक एण्ड मॉनिटरिंग यूनिट

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

फॉरेन्सिक एण्ड मॉनीटरिंग यूनिट के उद्घाटन अवसर पर बोलते सीपी विकास कुमार अरोड़ा।

स्थानीय पुलिस आयुक्त कार्यालय में शुक्रवार को पुलिस आयुक्त ने फॉरेन्सिक एण्ड मॉनीटरिंग यूनिट का उद्घाटन किया। यह फॉरेन्सिंक एण्ड मॉनीटरिंग यूनिट आईआईआरआईएस कंसल्टिंग व गेम्सक्राफ्ट टेक्नोलॉजी प्रा. लि. कंपनियों के सहयोग से स्थापित की गई है। इन्ही कम्पनियों के सहयोग से यह यूनिट संचालित की जाएगी। यह यूनिट पुलिस केसों की जांच, अपराधियों की पहचान करने, पुलिस कार्यशैली को प्रभावी गति प्रदान करने में सहायक होगी।

पुलिस आयुक्त कार्यालय के दूसरे तल पर स्थापित की गई इस फॉरेन्सिंक एण्ड मॉनीटरिंग यूनिट में डिजिटल फोरेंसिक, ओपन सोर्स इंटेलिजेंस, इमेज/सीसीटीवी एनालिसिस, हैंड राइटिंग एंड फिंगरप्रिंट्स एनालिसिस, साइबर मॉनिटरिंग, मोर्फ इमेज एनालिसिस आदि कार्य कुछ ही समय में पूरा करके पुलिस जांच में प्रभावी मदद मिलेगी।

पीएम स्वनिधि योजना में कोताही नहीं की जाएगी बर्दाश्तः अतिरिक्त आयुक्त

● आईडीएफसी, इंडसइंड तथा आईडीबीआई बैंकों पर कार्रवाई के डॉ. बलप्रीत ने दिए निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

नगर निगम के अतिरिक्त आयुक्त डा. बलप्रीत सिंह ने शुक्रवार को पीएम स्वनिधि योजना की समीक्षा बैठक के दौरान बैंक प्रतिनिधियों से कहा कि योजना के तहत किसी भी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जो बैंक योजना के तहत अपनी कार्यशैली में सुधार नहीं करेंगे, उनकी रिपोर्ट राज्य, केंद्र सरकार व भारतीय रिजर्व बैंक को भेजी जाएगी। यह बात उन्होंने बैंक प्रतिनिधियों के साथ आयोजित बैठक में कही। उन्होंने कहा कि जिन बैंकों ने लाभार्थियों के आवेदन वापिस किए हैं, वे एक सप्ताह में उन पर कार्रवाई करके उन्हें स्वीकृत तथा डिस्बर्समेंट करवाएं, ताकि जरूरतमंदों को योजना का लाभ मिल सके। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि जो बैंक योजना के तहत दिए गए लक्ष्यों में सुधार नहीं करते हैं, तो उनके यहां नगर निगम के बैंक खातों को बंद करने की भी कार्रवाई की जा सकती है। बैठक में न आने पर आईडीएफसी, इंडसइंड तथा आईडीबीआई बैंकों पर कार्रवाई के निर्देश अतिरिक्त निगमायुक्त द्वारा एलडीएम को दिए गए।

योजनाओं का लाभ जन-जन तक पहुंचाने को संकल्पबद्धः बोधराज सीकरी

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

बोधराज सीकरी की अगुवाई में पंजाबी बिरादरी महा संगठन के नए कार्यालय न्यू रेलवे रोड स्थित साकेत कॉमर्शियल काम्पलेक्स से आयुष्मान भारत स्वस्थ खाता आभा की शुरुआत की गई। यह सेवा सभी के लिए चाहे व्यक्ति किसी भी वर्ग का हो, निःशुल्क प्रदान की जायेगी।

इस अवसर पर बोधराज सीकरी में बताया कि मेडिकल क्षेत्र में डिजिटल माध्यम से भाजपा सरकार ने अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं का प्रचार-प्रसार कर उन्हें सुचारू रूप से क्रियान्वित किया है। इन्हीं अनुकरणीय प्रयासों का अनुसरण करते हुए पंजाबी बिरादरी महासंगठन ने आभा कार्ड की सेवा की शुरुआत की है। यह सुविधा जन-जन तक पहुंचे, यही हमारा प्रयास है। पंजाबी बिरादरी महासंगठन के प्रधान बोधराज सीकरी ने बताया कि इस कार्य के संयोजक राजेंद्र बजाज होंगे। इस अवसर पर बोधराज सीकरी, जी.एन. गोसाईं, धर्मेंद्र बजाज, के.एल. डुडेजा, हेमंत मोंगिया, रमेश कामरा, राजेंद्र बजाज, सतपाल नासा, सुखदेव चुटानी मौजूद रहे।

आभा के साथ जुडने से कई लाभ हैं। जैसे आभा के साथ आप भारत के डिजिटल हेल्थ इकोसिस्टम का हिस्सा बन जाते हैं।

मां को समर्पित एक पौधा जरूर लगाएं: विधायक

● माता अमृतानंदमयी अस्पताल में लगाए गए पौधे

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

तिगांव विधानसभा क्षेत्र से विधायक राजेश नागर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशभर में एक पेड़ मां के नाम अभियान को चलाया है। प्रधानमंत्री की प्रेरणा से हरियाणा प्रदेश में इस अभियान के तहत करीब लाखों पौधे लगवाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि जो भी नागरिक यह वृक्ष लगाएंगे, वे अपनी माता की स्मृति को तो हमेशा याद रखेंगे ही, यह धरती मां के लिए भी एक अनुपम सेवा होगी। आज के समय में बढ़ते हुए आधुनिकीकरण एवं औद्योगिकीकरण के कारण पर्यावरण की सुरक्षा करना एक गंभीर समस्या बन गई है। इसलिए जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए लोगों को व्यक्तिगत रूप से शामिल करने व अधिक से अधिक पौधे लगाने के लिए प्रोत्साहित करना अति आवश्यक है। विधायक राजेश नागर आज शुक्रवार को फरीदाबाद स्थित माता अमृतानंदमयी हस्पताल के प्रांगण में एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत आयोजित विशाल पौधरोपण कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत कर रहे थे।

गुरुग्राम के साईअंश ने बनाया मिर्गी के दौरे से अलर्ट करने वाला डिवाइस

छात्र वैज्ञानिक को दिया गया डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम इग्नाइटेड माइंड चिल्ड्रन क्रिएटिविटी एंड इनोवेशन पुरस्कार

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

● देश भर के 16,570 छात्र वैज्ञानिकों में से गुरुग्राम के तापड़िया ने मारी बाजी

गुरुग्राम के 9वीं कक्षा के छात्र 14 वर्षीय साईअंश तापड़िया ने डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम इग्नाइटेड माइंड चिल्ड्रन क्रिएटिविटी एंड इनोवेशन अवार्ड 2023-24 जीता है। इस अवार्ड के लिए देशभर से 16570 बच्चों में से मात्र 14 स्टूडेंट्स को चुना गया। इनमें से गुरुग्राम के श्रीराम स्कूल के छात्र साईअंश तापड़िया ने बाजी मारी और यह अवार्ड जीता।

छात्र साईअंश ने मिर्गी के मरीज के लिए एक ऐसे उपकरण का अविष्कार किया है, जो मिर्गी का दौरा आने पर देखभाल करने वाले व्यक्ति के मोबाइल पर अलार्म बज उठता है। छोटी सी उम्र में साईअंश तापड़िया द्वारा किए गए इस अविष्कार की देश भर में प्रशंसा हो रही है। छात्र ने अपने नवाचार के लिए एक प्रोटोटाइप बनाया है।

डिवाइस की लागत को कम करने की दिशा में काम कर रहे हैं, ताकि इसे आम लोगों तक आसानी से पहुंचाया जा सके। साईअंश ने उसी नवाचार के लिए प्लाक्षा विश्वविद्यालय के यंग क्रिएटर लीग पुरस्कार भी जीता। साईअंश को सम्मानित किया है। भारत रत्न और भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की स्मृति में आयोजित यह प्रतिष्ठित पुरस्कार, उन युवा वैज्ञानिकों को सम्मानित करता है जिनके विचारों में हमारे जीवन को बेहतर बनाने, अपशिष्ट को कम करने, ऊर्जा बचाने, पर्यावरण को बढ़ाने, उत्पादकता को बढ़ावा देने, सुरक्षा में सुधार करने या सुविधा बढ़ाने की क्षमता है। हनी बी नेटवर्क ने स्कूल जाने वाले छात्रों की रचनात्मक प्रतिभा को पहचानते हुए वार्षिक नवाचार पुरस्कारों के विजेताओं की घोषणा की।

इस वर्ष, हनी बी नेटवर्क को जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली, जिसमें भारत भर के 23 राज्यों के बच्चों द्वारा ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से लगभग 16,570 छात्र वैज्ञानिकों ने विचार प्रस्तुत किए गए। विशेषज्ञों की एक प्रतिष्ठित जूरी ने इन प्रस्तुतियों का मूल्यांकन किया और 10 अलग-अलग राज्यों के छात्रों की रचनात्मक प्रतिभा का प्रतिनिधित्व करते हुए पुरस्कारों के लिए 16 उत्कृष्ट विचारों का चयन किया। साईअंश के पिता सौरभ तापड़िया ने साईअंश की उपलब्धि पर खुशी जाहिर की है उन्होंने कहा कि ये पुरस्कार देश, प्रदेश के युवा वैज्ञानिकों को प्रेरित करेगा। साईअंश ने वायु प्रदूषण और प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने के लिए विभिन्न पर्यावरण संबंधी परियोजनाओं पर काम करके अपनी संवेदनशीलता का परिचय भी दिया है।

पर्यावरण संरक्षण बेहद जरूरीः एसएस बांगा

फरीदाबाद। विक्टोरा लाइफ फाउंडेशन द्वारा सेल्फी विथ प्लांटेशन के तहत एक पेड़ मां के नाम अभियान को आरडब्ल्यूए झाड़सेतली के प्रधान धर्म सिंह डागर ने आगे बढ़ाया। सेक्टर 58 के विक्टोरा पार्क तालाब पर आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में पहुंचे ट्री मैन के नाम से मशहूर उद्योगपति सरदार एस एस बांगा और विशिष्ठ अतिथि के रूप में पुलिस थाना सेक्टर 58 एसएचओ इंस्पेक्टर कृष्ण कुमार , वन विभाग से गार्ड हेमराज सिंह और हरियाणा प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के जेई विकास हुड्डा सहित कई उद्योगपति उपस्थित रहे। आरडब्ल्यूए प्रधान ने सभी अतिथियों को प्लांट देकर स्वागत किया।

रिपोर्ट लेकर पीएम के दरबार पहुंचे नायब

मुख्यमंत्री ने लोकसभा चुनाव के बाद लिए गए फैसलों पर प्रधानमंत्री को दी सिलसिलेवार जानकारी

● विधानसभा चुनाव की रणनीति पर भी की चर्चा

शिखा शर्मा। चंडीगढ़

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने शुक्रवार शाम को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात करके प्रदेश विधानसभा चुनाव की तैयारियों को लेकर जहां रिपोर्ट दी वहीं लोकसभा चुनाव के बाद लिए गए फैसलों के बारे में प्रधानमंत्री को बताया।

प्रदेश विधानसभा चुनाव के मद्देनजर मुख्यमंत्री की इस मुलाकात को काफी अहम माना जा रहा है। मुख्ययंत्री ने अग्निपथ योजना के तहत अग्निवीरों को हरियाणा सरकार की नौकरियों में दिए जाने वाले 10 प्रतिशत होरिजेंटल आरक्षण के निर्णय से पीएम को अवगत कराया, जिसे उन्होंने सराहा है। सैनी ने कहा कि हरियाणा सरकार अग्निवीरों के हित में बेहतर तरीके से काम करेगी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह 18 दिनों के अंतराल में दो बार हरियाणा का दौरा कर चुके हैं। भाजपा प्रभारी से लेकर चुनाव सह प्रभारी तक पूरी टीम चुनाव की तैयारियों में जुटी है। मोहन बडौली के रूप में भाजपा को राज्य का नया प्रदेश अध्यक्ष भी मिल चुका है। ऐसे में नायब सैनी अपने पूरे रोडमैप के साथ पीएम मोदी से मिलने पहुंचे। नायब सैनी ने प्रधानमंत्री को विधानसभा चुनाव की तैयारियों के साथ ही भविष्य में सरकार द्वारा लिए जाने वाले कुछ अहम फैसलों की जानकारी दी। मुख्यमंत्री की प्रधानमंत्री से राजनीतिक मुद्दों और गठबंधन पर भी चर्चा हुई है। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री से हरियाणा आने का अनुरोध किया है, जिस पर उन्होंने भाजपा संगठन को लोकसभा स्तरीय, जिला स्तरीय और विधानसभा स्तरीय कार्यक्रम तैयार करने को कहा है। नायब सैनी ने प्रधानमंत्री को सिख, ओबीसी, किसान और पिछड़ा वर्ग के लिए संचालित योजनाओं से भी अवगत कराया है।

नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात करते हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी।

प्रधानमंत्री से मुलाकात के बाद पत्रकारों से बातचीत में मुख्यमंत्री नायब सैनी ने कहा कि बातचीत काफी अच्छी हुई है और प्रधानमंत्री का हर विषय पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि मुख्य विषय विधानसभा चुनाव की तैयारियों से जुड़ा था। राज्य में जो विकास कार्य चल रहे हैं, उनके बारे में पीएम को जानकारी दी है तथा आगे क्या कुछ करना है, उसके बारे में अवगत कराया व मार्गदर्शन प्राप्त किया है।

प्रधानमंत्री ने जिला व विधानसभा सीटवार राज्य के राजनीतिक माहौल व परिदृश्य पर बातचीत की है। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व में हरियाणा में पूर्ण बहुमत के साथ भाजपा तीसरी बार सरकार बनाने जा रही है। भूपेंद्र हुड्डा के विरुद्ध ईडी की कार्रवाई से जुड़े सवाल पर नायब सैनी ने कहा कि ईडी एक स्वतंत्र एजेंसी है, जहां उन्हें ठीक लगता है, वह कार्रवाई करते हैं। आम आदमी पार्टी द्वारा अकेले चुनाव लडने् पर नायब सैनी ने कहा कि कांग्रेस और आप झूठ का सहारा लेकर साथ हुए थे।

कुवि के छात्र ह्यूस्टन, यूएसए में करेंगे भारत का प्रतिनिधित्व

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के भू-भौतिकी विभाग के अंतिम वर्ष के एमएससी (टेक.) एप्लाइड जियोफिजिक्स के छात्र रोहित चौहान (टीम लीडर), अभिषेक मनवाल और इशिका अग्रवाल (सदस्य) को प्रतिष्ठित इमेज 2024 सम्मेलन में सोसाइटी ऑफ एक्सप्लोरेशन जियोफिजिसिस्ट एसईजी इवॉल्व प्रोजेक्ट प्रेजेंटेशन का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया है। यह कार्यक्रम 26-29 अगस्त, 2024 के दौरान टेक्सास के ह्यूस्टन में आयोजित होगा।

इस उपलब्धि के लिए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने विभाग के शिक्षकों और छात्रों को बधाई देते हुए उन्होंने कहा, कि मुझे गर्व है कि विश्वविद्यालय के छात्र वैश्विक मंच पर अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन करेंगे। यह न केवल उनके लिए बल्कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय और देश के लिए भी एक शानदार अवसर है। एसईजी इवॉल्व प्रोजेक्ट प्रेजेंटेशन के लिए कुरुक्षेत्र टीम का चयन कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में शिक्षा और अनुसंधान की गुणवत्ता को रेखांकित करता है। इस उपलब्धि के लिए कुलसचिव प्रो. संजीव शर्मा ने विभाग के शिक्षकों और छात्रों को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

भूभौतिकी विभाग के अध्यक्ष प्रो. बी.एस. चौधरी ने गर्व और उत्साह व्यक्त करते हुए कहा कि कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा और कुलसचिव प्रो. संजीव शर्मा ने टीम के प्रयासों की सराहना की।

ट्रांसफार्मर खराब होने पर नहीं लिया जाएगा किसानों से शुल्क

● अन्नदाताओं के हित में हरियाणा सरकार ने लिया बड़ा फैसला

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

हरियाणा सरकार ने किसानों के हित में एक और बड़ा निर्णय लेते हुए ट्रांसफार्मर के चोरी/खराब होने की स्थिति में उनसे शुल्क न लेने का निर्णय लिया है। यह दिशा-निर्देश तत्काल प्रभाव से लागू होंगे।

हरियाणा विद्युत नियामक आयोग (एचईआरसी) के प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि मुख्यमंत्री द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार 15 जनवरी, 2024 को अधिसूचित एचईआरसी विद्युत आपूर्ति संहिता विनियम, 2014 में संशोधन किया गया है।

संशोधन के अनुसार, अब उपभोक्ताओं से ट्रांसफार्मर के चोरी या प्राकृतिक आपदाओं से खराब होने की स्थिति में बदलने या मरम्मत करवाने के लिए किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाएगा। जबकि पहले उपभोक्ताओं द्वारा ट्रांसफार्मर के वारंटी में खराब/चोरी होने पर उसकी कीमत का 20 प्रतिशत तथा वारंटी खत्म होने पर बदलने की स्थिति में ट्रांसफार्मर की कीमत का 10 प्रतिशत शुल्क जमा करवाया जाता था।

ट्रांसफार्मर बदलने या मरम्मत करने की एवज में किसानों पर अनावश्यक वित्तीय बोझ पड़ता था, इसे देखते हुए ही सरकार ने किसानों को राहत पहुंचाने के लिए मौजूदा प्रावधानों को संशोधित किया है, ताकि किसानों पर अतिरिक्त लागत का बोझ न पड़े। इस कदम से प्रदेश के किसानों को बड़ी राहत मिलेगी।

जनता की मांग और मुद्दों पर तैयार किया जाएगा कांग्रेस का घोषणा पत्रः अरोड़ा

● 20 अगस्त तक सम्मेलनों के जरिये सीधा संवाद करेगी पार्टी

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

कांग्रेस हरियाणा विधानसभा चुनावों में जनता की मांग और मुद्दों के आधार पर घोषणा-पत्र तैयार करेगी। घोषणा-पत्र तैयार करने को लेकर कांग्रेस नेता न केवल जनता से सीधा संवाद करेंगे, बल्कि हर वर्ग के सम्मेलनों के जरिये उनकी समस्या व मुद्दों को भी प्रमुखता के साथ घोषणा-पत्र में शामिल किया जाएगा। हरियाणा मांगे हिसाब अभियान के साथ आगामी 20 अगस्त तक अलग-अलग वर्गों के सम्मेलन होंगे, जिनमें उनकी डिमांड व मुद्दों को प्रमुखता दी जाएगी।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मंत्री अशोक अरोड़ा ने शुक्रवार को चंडीगढ़ में पत्रकारों से बातचीत में बताया कि घोषणा पत्र में सभी मांग व मुद्दों को प्रमुखता के आधार पर उठाया जाएगा। घोषणा-पत्र तैयार करने को लेकर सभी नेता जनता से सीधा संवाद कर रहे हैं। कांग्रेस नेता हरियाणा मांगे हिसाब अभियान में बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, कानून व्यवस्था समेत 15 मुद्दों पर जवाब मांग रहे हैं। इसको लेकर घर-घर दस्तक दी जा रही है। इसी कड़ी में आगामी 10 अगस्त को कुरुक्षेत्र में एससी सम्मेलन आयोजित होगा।

पूर्व मंत्री अशोक अरोड़ा ने प्रदेश की नायब सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल के कार्यकाल में लिए गए फैसलों को अब बदला जा रहा है। इसमें सरपंचों की वित्तीय पावर बढ़ाने के साथ क्रीमिलेयर की आय सीमा बढ़ाने और प्रॉपर्टी आईडी जैसे फैसले हैं, जिन्हें बदला जा रहा है। इसका कारण लोकसभा चुनाव में करारी हार है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार के गलत फैसलों से प्रदेश की जनता को हुए नुकसान को लेकर माफी मांगनी चाहिए।

सभी लोकसभा क्षेत्रों में प्रशिक्षण शिविर लगाएगी कांग्रेस

चंडीगढ़। हरियाणा प्रदेश कांग्रेस ने हरियाणा में प्रशिक्षण समन्वयकों की नियुक्ति की गई है। पार्टी ने सभी 10 लोकसभा क्षेत्रों के लिए समन्वयक बनाए हैं। कांग्रेस प्रभारी दीपक बाबरिया द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार कांग्रेस की नीतियों से अधिक से अधिक लोगों को अवगत करवाने के लिए कार्यकर्ताओं की एक टीम को तैयार किया जाए। लोकसभा स्तर पर प्रशिक्षण शिविरों का अयोजन करके उन्हें बूथ स्तर पर पार्टी के विस्तार के लिए तैयार किया जाए।

बाबरिया के निर्देश के बाद प्रदेश के सभी दस लोकसभा हलकों में प्रशिक्षण समन्वयकों की नियुक्ति की गई है। कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष उदयभान ने शुक्रवार को जारी एक जानकारी में बताया कि तरुण शर्मा को अंबाला, शम्मी रत्ती को सिरसा, बसंत अहलावत को हिसार व रोहतक, डॉक्टर गीता रानी रमेश कुमार को करनाल, मुकेश पन्नालाल को सोनीपत, श्याम शर्मा को कुरुक्षेत्र, अरुण शर्राफ को भिवानी, डॉ. अनिल पवार को गुरुग्राम और राहुल वशिष्ठ को फरीदाबाद की जिम्मेदारी दी गई है।

हिमाचल में पनबिजली प्रोजेक्ट केंद्र की प्राथमिकताः मनोहर

● हिमाचल के सीएम व अधिकारियों के साथ चंडीगढ़ में हुई बैठक

● शिमला के नजदीक विकसित होगी स्मार्ट सिटी

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

हिमाचल प्रदेश में पन बिजली परियोजनाओं की क्षमता बढ़ाने की संभावनाएं तलाशी जाएंगी, क्योंकि राज्य में जल स्त्रोत अत्याधिक हैं। लिहाजा इन जल स्त्रोतों का बिजली उत्पादन बढ़ाने में अच्छी तरह उपयोग किया जा सकता है। वहीं हिमाचल की राजधानी शिमला के नजदीक स्मार्ट सिटी विकसित की जाएगी।

हिमाचल प्रदेश में विद्युत परियोजनाओं और स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट को लेकर सहित अन्य विकास कार्यों को लेकर शुक्रवार को हिमाचल भवन चंडीगढ़ में केंद्रीय ऊर्जा, आवास एवं शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल के हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखिवंद्र सिंह सुक्खू, हिमाचल के शहरी विकास मंत्री विक्रमादित्य सिंह तथा अन्य अधिकारी मौजूद रहे। मनोहर लाल ने राज्य को बिजली उत्पादन बढ़ाने का सुझाव दिया क्योंकि राज्य में जल स्त्रोत प्रचुर मात्रा में हैं। राज्य को जल विद्युत ऊर्जा का दोहन करने के लिए बहते पानी का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करना चाहिए।

बैठक के बाद पत्रकारों से बातचीत में मनोहर लाल ने कहा कि बैठक में अर्बन डिवेल्पमेंट से जुड़े प्रोजेक्टों की समीक्षा की गई और उनमें तेजी लाने के निर्देश दिए गए, खासकर स्मार्ट सिटी विकसित करने पर प्राथमिकता रहेगी।

केंद्रीय मंत्री ने हिमाचल प्रदेश में विकास गति की सराहना करते हुए कहा कि हिल स्टेट में जो गति होनी चाहिए, उसमें हिमाचल प्रदेश पहले स्थान पर है।

शानन डैम पर न्यायालय का फैसला होगा लागू

केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने शानन डैम परियोजना पर पंजाब और हिमाचल प्रदेश द्वारा जताए जाने वाले अधिकार पर स्पष्ट किया कि इस प्रोजेक्ट की 99 साल की लीज समाप्त हो चुकी है। फिलहाल यह मामला न्यायालय में विचाराधीन है। न्यायालय की ओर से जो फैसला करेगा उसे लागू किया जाएगा।

अब समर्थन वापस नहीं लेंगे विधायक नयनपाल रावत

● पूर्व सीएम मनोहर लाल के साथ बैठक के बाद बदला फैसला

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

पिछले दो दिन से हरियाणा सरकार पर दबाव बना रहे निर्दलीय विधायक नयनपाल रावत मुख्यमंत्री नायब सैनी से मिलने के कुछ समय बाद ही यू-टर्न ले गए और फिर पूर्व मुख्यमंत्री एवं केंद्रीय मंत्री ने मोर्चा संभालकर उन्हें शांत किया। नयनपाल रावत द्वारा समर्थन वापस लिए जाने को लेकर तीन दिन चल रहे हाईवोल्टेज ड्रामे का पटाक्षेप हो गया है लेकिन शुक्रवार को सचिवालय के गलियारों में अधिकारियों के बीच दिन भर यह चर्चा का विषय बना रहा।

केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल गुरुवार को देरशाम चंडीगढ़ पहुंचे। जिसके बाद रात्रि के समय नयनपाल रावत ने मनोहर लाल से मुलाकात की। सूत्रों की मानें तो करीब एक घंटा चली इस मुलाकात में नयनपाल रावत ने अपने कई मुद्दों को मनोहर लाल के सामने रखा।

हरियाणा की भाजपा सरकार इस समय विधानसभा में संख्या बल के आधार पर अल्पमत में चल रही है। निर्दलीय विधायकों में अब केवल नयनपाल रावत ही ऐसे विधायक हैं जो सरकार को समर्थन दे रहे हैं। पिछले दो दिनों से रावत द्वारा समर्थन वापस लिए जाने की खबरें बड़ी तेजी से चल रही हैं।

बुधवार को हरियाणा विधानसभा के स्पीकर ज्ञान चंद गुप्ता ने नयनपाल रावत के साथ मुलाकात की। इसके बाद गुरुवार को रावत की मुख्यमंत्री नायब सैनी से मुलाकात हुई। इस मुलाकात के बाद खबरें आई कि सबकुछ सामान्य हो गया है। इसके बावजूद देररात फिर से रावत चंडीगढ़ पहुंचे और उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री एवं केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल के साथ मुलाकात की।

राहगिरी कार्यक्रम को बनाया जाएगा ऐतिहासिकः वैशाली

कुरुक्षेत्र। अतिरिक्त उपायुक्त डा. वैशाली शर्मा ने कहा कि एक पेड़ माॅ के नाम को समर्पित राहगिरी कार्यक्रम को ऐतिहासिक और यादगार बनाने में प्रशासन की तरफ से कोई कसर नहीं छोडी जाएगी। इसलिए इस कार्यक्रम का सफल आयोजन करने के लिए 23 विभागों के अधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी गई है।

बिना अनुमति केबल बदल रहे बिजली विभागकर्मी हाइवे टीम को देखकर भागे

पलवल। हाईवे पर बघौला गांव के समीप बिछाई जा रही नई केबल के काम को हाईवे टीम ने पुलिस की मदद से रूकवा दिया। हाईवे अधिकारियों का कहना है कि बिजली निगम ने इस कार्य की उनसे अनुमति नहीं ली, इसके चलते यह काम रूकवाया गया है। उधर, बिजली निगम अधिकारियों का कहना है कि पुरानी कैबल डैमेज होने के कारण उसे बदला जा रहा था, इसके चलते उसकी अनुमति नहीं ली गई। हाईवे घटना प्रबंधन टीम प्रबंधक राजकुमार ने बताया कि बिजली विभाग की ओर से कर्मचारियों के हाईवे की जमीन पर नई केबल बिना अनुमति के डाले जाने की जानकारी उन्हें मिली थी। इस पर उन्होंने पुलिस से समन्वय बनाकर मौके का दौरा किया। इस दौरान घटना प्रबंधन टीमों और पुलिस को देखकर बिजली विभाग के दर्जनों कर्मचारी मौके से भाग खड़े हुए। हाईवे टीम ने मौके से कुछ केबल भी अपने कब्जे में ली है। घटना प्रबंधक ने बताया कि मौके पर मिले ग्रामीणों ने बताया कि पूर्व में बिजली विभाग द्वारा डाली लाइनों से उनको जान का खतरा बना हुआ है। अब नई लाइन से खतरा और बढ़ जाएगा।

PUBLIC NOTICE

It is to inform to the public at large that Mr. Yogesh has acquired Entire Built-up Third Floor with roof rights area measuring 70 sq. yrds., Built on Property bearing No. 21, Khasra No. 11/25/2 and 11/25, situated at Village Pochanpur, Delhi Colony known as Pochanpur Extn. A-Block, New Delhi vide Sale Deed dt. 14.06.2024 executed by Mr. Yogesh as attorney of Mr. Kuldeep, Now Mr. Yogesh is the undisputed owner of above said property.

OR

Any person / firm / institution / company having any claim or right in respect of the said Property by way of inheritance, share, sale, agreement, lease, license, gift, possession, legal heirs, partners or encumbrance howsoever or otherwise is hereby required to intimate in writing to the undersigned within 07 days from the date of publication of this notice of his/her/their share or claim, if any, with all supporting documents at below mentioned address. After expiration of notice period, the claims, if any, of such person shall be treated null and void and also treated as waived and not binding on our client.

Ajay Kumar Giri (Advocate) H No. 26/161, Basement, Vikram Vihar, Lajpat Nagar 4, New Delhi -110024

सार्वजनिक सूचना

मेरी मुवक्किल श्रीमती सरोज बाला पत्नी श्री विनोद कुमार, मकान मालिक द्वारा बनाया गया मकान नंबर 172, क्षेत्रफल 110 वर्ग गज है। खसरा नंबर से बाहर 32, ग्राम पोचनपुर, नई दिल्ली के पुराने लाल डोरा (1908–069) में स्थित है। पंजीकृत उपहार विलेख दिनांक 06.09.2019 के माध्यम से श्री विनोद कुमार पुत्र श्री प्रेम सिंह द्वारा श्रीमती सरोज बाला पत्नी श्री विनोद कुमार के पक्ष में उपरोक्त SR-IX दिल्ली में पंजीकृत संख्या 7513 के माध्यम से निष्पादित किया गया। उपरोक्त संपत्ति फेड बैंक फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के पास बंधक होने जा रही है। यदि किसी व्यक्ति/बैंक/वित्तीय संस्थान के पास उपरोक्त संपत्ति के संबंध में कोई दावा/ग्रहणाधिकार, अधिकार, कोई आपत्ति है, तो उसे दस्तावेजी साक्ष्यों के साथ इस नोटिस के प्रकाशन की तारीख से 7 दिनों के भीतर पंजीकृत अधिवक्ता के माध्यम से अधोहस्ताक्षरी/ **एडवोकेट विशाल मेहन**, ई–713, कड़कड़डूमा कोर्ट, दिल्ली– 110092 के पते पर सूचित किया जाना चाहिए। ऐसा न करने पर किसी भी दावे, ग्रहणाधिकार या आपत्ति को माफ कर दिया गया माना जाएगा। **एडवोकेट विशाल मेहन,** ई–713, कड़कड़डूमा कोर्ट, दिल्ली– 110092, मोबाइल – 9811215181

इंडियन बैंक Indian Bank
इलाहाबाद ALLAHABAD
सार्वजनिक सूचना

एतत्द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता है कि रिहायशी फ्री होल्ड सम्पत्ति नं. 8, सम्पूर्ण ऊपरी भूतल, जोकि दिल्ली हाउसिंग एंड लैंड डेवलपमेंट को–ऑपरेटिव हाउस बिल्डिंग सोसाइटी लिमिटेड, जिसे "शांति विहार", कहते है, दिल्ली–110092 में स्थित, प्रस्तावित क्रेता श्री अक्षय बंसल और श्री अमित बंसल के माध्यम से गृह ऋण योजना के तहत बंधक के लिए सुरक्षा के रूप में बैंक को पेश किया गया है और प्रस्तावित विक्रेता श्री पवन जैन हैं। उक्त संपत्ति श्रीमती प्रेम शर्मा द्वारा श्री पवन जैन को बेची गई थी। उक्त बिक्री विलेख के अनुसार स्वर्गीय श्री प्रकाश चंद्र शर्मा अपने पीछे 3 कानूनी उत्तराधिकारी छोड़ गए हैं जिनके नाम श्री विपिन शर्मा, श्री विनीत शर्मा और श्रीमती प्रेम शर्मा हैं। यदि स्वर्गीय श्री प्रकाश चंद्र शर्मा का कोई अन्य कानूनी उत्तराधिकारी है तो कृपया इस सार्वजनिक सूचना के 7 दिनों के भीतर शाखा से संपर्क करें, अन्यथा बैंक संपत्ति को बंधक बना लेगा और किसी भी दावे/आपत्ति पर विचार नहीं किया जाएगा।

हस्ता/–
इंडियन बैंक
आनंद विहार शाखा, 117 राम विहार
आनंद विहार 110092
संपर्क नं. 9971928883

PUBLIC NOTICE

Flat No.91, 6th floor, Harmony Apartments, Harmony Sehkari Awas Samiti, Plot No.C-58/16, Sector 62, Noida.

That our client Kamal Kishore Jaiswal become sole and absolute owner in possession of the above said property vide Mutation letter dated 06.01.23 issued by NOIDA consequent upon death of co-owner Vijay Kumar Jaiswal, who dies intestate leaving behind Vidya Devi, Kamal Kishore Jaiswal, Munish Kumar Jaiswal, Nimmi Chhabra as only legal heirs and subsequently all above named legal heirs given their no objection to NOIDA to transfer/ Mutate the share of late Vijay Kumar Jaiswal in favour of Kamal Kishore Jaiswal.

Under the circumstances, notice is hereby given to the General Public, Bank/Financial institutions or other person/s, organization/s, company/ies, government authority/ies, having any claim, rights, title, or any interest of any nature whatsoever into or upon the said property, is hereby called upon to make the same known, in writing with documentary evidence by registered AD Post to the undersigned at the address mentioned hereinbelow within 10 days of the publication of this notice and in the event no response having been received to the notice, the title of Kamal Kishore Jaiswal to the said property shall be deemed to be clear of any claim, charge or encumbrance of any nature whatsoever and any subsequent claim shall not bind our client in any manner whatsoever.

Kumar Abhishek
Advocate
Legal Access
132A, Anarkali Complex, Jhandewalan Ext. New Delhi

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,

इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड (CIN:L65922DL2005PLC136029) (अब सम्मान कैपिटल लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते अधोहस्ताक्षरी ने सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेन्ट ऑफ सिक्योरीटी इंटरेस्ट एक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम **3** के साथ धारा **13(12)** के साथ सिक्योरीटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेन्ट) रूल्स, **2002** के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **अंकिता ए गुप्ता उर्फ अंकिता गुप्ता और रवींद्र कुमार जयस्वाल** को **05.02.2024** की सूचना में वर्णन के अनुसार कर्ज खाता नं. **HHLNOD00423970** की राशि **रू.19,22,214.41 /- (रुपए उन्नीस लाख बाईस हजार दो सौ चौदह और इकतालीस पैसे मात्र)** और **24.01.2024** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट **60** दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी। धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतत्तद्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा **13** की उप धारा **(4)** के साथ उक्त कानून के नियम **8** के तहत सिक्योरीटी ईन्ट्रेस्ट (एन्फोर्समेन्ट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **16.07.2024** को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है।

विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतत्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू.19,22,214.41 /- (रुपए उन्नीस लाख बाईस हजार दो सौ चौदह और इकतालीस पैसे मात्र) 24.01.2024** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड (अब सम्मान कैपिटल लिमिटेड के नाम से जाना जाता है)** के आधीन होगा ।

उधारकर्ताओं का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप - धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण

अपार्टमेंट नं.1602 मापित 860 स्के.फीट सोलहवीं मंजिल पर, टॉवर -बी, मरिना सूट्स से पहचाने जाने वाले प्रोजेक्ट में, जीएच-3/1, आदित्य पार्क टाउन, एनएच-24, गाज़ियाबाद-201001, उत्तर प्रदेश

दिनांक :16.07.2024
स्थान :गाज़ियाबाद

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
सम्मान कैपिटल लिमिटेड
(पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनांस लिमिटेड से जाना जाता था)

सार्वजनिक सूचना

सामान्य जनता को सूचित किया जाता है कि हरियाणा राज्य पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन प्राधिकरण (SEIAA), हरियाणा, बे 55-58, पर्यावरण भवन, सेक्टर–2, पंचकुला, हरियाणा, ने फाइल संख्या SEAC/HR/2024/066 और EC पहचान संख्या EC24C3801HR5890800N दिनांक 18-07-2024 द्वारा "पर्यावरण क्लीयरेंस" M/s पुरी कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड को, जिसका पंजीकृत कार्यालय है 4-7B, ग्राउंड फ्लोर, टोलस्टॉय हाउस, 15 और 17, टोलस्टॉय मार्ग, नई दिल्ली–110001, को उसके प्रस्तावित समूह आवासीय कॉलोनी के लिए जोकि सेक्टर–111 गांव चौमा, जिला गुरुग्राम, हरियाणा, में स्थित है के लिए जारी किया गया है।

सामान्य जनता को सूचित किया जाता है कि पर्यावरण क्लीयरेंस पत्र की प्रति हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, पंचकुला, और राज्य पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन प्राधिकरण (SEIAA), पंचकुला, हरियाणा के कार्यालय में और वेबसाइट पर उपलब्ध है: https://parivesh.nic.in

Dated: 20-07-2024

पुरी कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड।
सीआईएन: U45201DL19711PTC005522
पंजीकृत कार्यालय पता: 4-7B, ग्राउंड फ्लोर, टोलस्टॉय हाउस, 15 और 17, टोलस्टॉय मार्ग, नई दिल्ली
www.puriconstructions.com

एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")
CIN : U65993DL2002PLC115769
पंजीकृत कार्यालय: 14वीं मंजिल, ईआरओएस कॉर्पोरेट टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019. ई-मेल: acre.arc@acreindia.in, वेबसाइट: www.acreindia.in
कॉर्पोरेट कार्यालय: यूनिट नंबर 502, सी विंग, वन बीकेसी, प्लॉट नंबर सी - 66, जी - ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई – 400051. फोन: 022 68643101

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,

इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड ("आईएचएफएल") प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **सूरज बहादुर और पवित्र बहादुर उर्फ पवित्रा** को **19.01.2022** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. S141OXXIII-02 (आईएचएफएल का पूर्व कर्ज खाता नं. HHLNOD00434190)** की राशि **रू. 14,95,065.19 (रूपये चौदह लाख पंचानबे हजार पैंसठ और उन्नीस पैसे मात्र)** और **26.11.2021** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60 दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी। इसके अलावा **आईएचएफएल ने इंडियाबुल्स एसेट रिकन्स्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड** के पक्ष में **इंडियाबुल्स एआरसी –XXIII ट्रस्ट के ट्रस्टी** के रूप में उपरोक्त कर्ज खाते के अपने सभी अधिकार, शीर्षक और ब्याज **31.12.2021**. को एक असाइनमेंट समझौते के माध्यम से सौपा है, इसके अलावा **इंडियाबुल्स एसेट रिकन्स्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड, इंडियाबुल्स एआरसी –XXIII ट्रस्ट के ट्रस्टी** ने दिनांक **29.06.2022** के असाइनमेंट करार के माध्यम से **एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")** के पक्ष में उपरोक्त कर्ज खाते के अपने सभी अधिकार, शीर्षक और ब्याज और कर्ज खाता जिसे **एसीआरई** की पुस्तकों में कर्ज खाता नं.**S141OXXIII-02** के रूप में पुन: क्रमांकित किया गया है, सौंपा है ।

धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **18.07.2024** को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है ।

विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू. 14,95,065.19 (रूपये चौदह लाख पंचानबे हजार पैंसठ और उन्नीस पैसे मात्र) 26.11.2021** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.** के आधीन होगा.

उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण

"अर्बन होम्स " से पहचाने जानेवाले रेसिडेन्शियल ग्रुप हाउसिंग परियोजना में, टावर/ब्लॉक सी में बारहवीं मंजिल पर स्थित, आवासीय फ्लैट बेअरींग नं. सी / यू एच -1227, जिसका कारपेट एरिया 340 स्क्वे.फीट, जमिन बेअरींग सर्वे नं. 2377, 2378, 2380, 2381, 2382/1, 2406, 2407, 2410, 2410 एम, 2411और 2422, शाहपुर बम्हेटा पर स्थित, एनएच-24, गाज़ियाबाद-201001, उत्तर प्रदेश।

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
दिनांक : 18.07.2024
स्थान : गाज़ियाबाद
असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि. (102- ट्रस्ट)

किसी भी शिकायत के लिए आप **श्री मोहम्मद शारिक मलिक,** शिकायत निवारण अधिकारी, फोन नंबर **011-66115609,** ईमेल: **complaint@acreindia.in** से संपर्क कर सकते हैं। संगठन के अंतर्गत शिकायत निवारण तंत्र विस्तृत रुप से **https://www.acreindia.in/compliance** पर देखी जा सकती है।

कार्यालय ग्राम पंचायत रूहेरी विकास खण्ड सासनी जनपद हाथरस

पत्रांक: / ग्राम पंचायत/पंचम/15th/वित्त आयोग/निविदा/2024-25 दिनांक: 18.07.2024

निविदा प्रपत्र

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि पंचम/15 वां वित्त आयोग के अंतर्गत वर्ष 2024-25 में उपलब्ध धनराशि से कराये जाने वाले निम्नलिखित सामिग्री हेतु पंजीकृत कांट्रेक्टरों/सप्लायर्स से कार्य स्थल पर सामग्री आपूर्ति हेतु निविदायें दिनांक 24.07.2024 को सायं 02.00 बजे तक उक्त सामिग्री हेतु आमंत्रित की जाती है निविदा आवेदकों की उपस्थिति में उसी दिन दिनांक 24.07.2024 को सायं 03 बजे अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में अधोहस्ताक्षरी अथवा उनके द्वारा प्राधिकृत अधिकारी द्वारा खोली जायेगी।

कार्य का विवरण:

1. नगला उम्मेद ग्राम पंचायत रूहेरी के प्राथमिक विद्यालय में बालिका शौचालय निर्माण कार्य सामिग्री 99779.00 अवधि 03 माह।

2. ग्राम पंचायत रूहेरी में दालमील रोड पर पुलिया निर्माण कार्य सामिग्री 127972.00 अवधि 03 माह।

1. निविदा प्रपत्र कार्यालय दिवस एवं कार्यालय समय में शुल्क 250.00 रूपये देकर प्राप्त कर सकते हैं 2. सामिग्री आपूर्ति में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाये गुणवत्ता खराब होने पर निविदा बिना पूर्व सूचना के निरस्त की जा सकती है 3. सामिग्री आपूर्ति कार्य स्थल पर प्राप्त होने के बाद एवं सामग्री का बिल ग्राम पंचायत को प्राप्त होने के बाद भुगतान किया जायेगा 4. निविदा के साथ पंजीकरण/आयकर/बिक्री कर/हैसियम/चरित्र आदि प्रमाण पत्रों की छायाप्रति संलग्न करना अनिवार्य है 5. निविदा स्वीकृत होने के बाद आपूर्तिकर्ता आपूर्ति करने को बाध्य होगा।6. समस्त भुगतान वित्तीय एवं तकनीकी स्वीकृति में दी गयी दरों के अनुसार ही किया जायेगा।

प्रधान — ग्राम पंचायत रूहेरी वि. ख. सासनी
सचिव — ग्राम पंचायत रूहेरी वि. ख. सासनी

कार्यालय ग्राम पंचायत-नगला जलाल वि. ख. सिकन्दराराऊ जनपद हाथरस

पत्रांक -मीमो/ ग्राम पंचायत/चौ.वि.-च.रा.वि./टेन्डर/2024-25 दिनांक-18.07.2024

अति अल्पकालीन निविदा

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि 14वॉं वित्त आयोग/चतुर्थ राज्य वित्त आयोग के अन्तर्गत वर्ष 2024-25 में उपलब्ध धनराशि से कराये जाने वाले निम्नांकित कार्यो हेतु उनके नाम के सम्मुख अंकित विवरणानुसार सामग्री की कार्य स्थल पर आपूर्ति हेतु मुहर बन्द निविदाऐं दिनांक 25.07.2024 को दिन के 1.00 बजे तक आंमत्रित की जाती है, जो उसी दिन सांय 3.30 बजे उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय अधोहस्ताक्षरी अथवा उसके द्वारा प्राधिकृत अधिकारी द्वारा खोली जायेंगी। यदि उक्त निविदा प्राप्त करने एवं खोलने के दिनांक को राजकीय अवकाश घोषित होता है तो निविदा प्राप्त एवं खोलने की तिथि अगला कार्य दिवस होगा। निविदा खोलने के स्थल, समय एवं वैधता में कोई परिवर्तन नही होगा निविदा की वैधता मूल तिथि से मानी जायेगी। निविदा की शर्तें निम्नवत निर्धारित की जाती है:-

1. निविदा प्रपत्र कार्यालय ग्राम पंचायत नगला जलाल कार्यालय दिवस एवं समय में निविदा मूल्य देकर प्राप्त किये जा सकते है। 2. निविदा प्रपत्र के साथ 2 प्रतिशत धरोहर धनराशि की एफ.डी.आर./एस.टी.डी.आर. जो अधोहस्ताक्षरी के पक्ष में बन्धक होगी,जमा करनी होगी। 3. निविदा सशर्त अथवा निर्धारित समय के बाद प्रस्तुत निविदायें मान्य नही होगी तथा किसी भी निविदा को बिना कारण बतायें स्वीकृत/अस्वीकृत करने का पूर्ण अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा । 4. निविदा दरों की वैद्यता तीन माह अधिकतम होगी। इसके लिये निविदा प्रपत्र के साथ एक सौ रुपए का नॉन जुडिशियल स्टाम्प पेपर, एक रुपए का रिवेन्यू टिकट के साथ होना अनिवार्य है। 5. अनुबन्ध के समय धरोहर राशि को सम्मिलित करते हुए 10 प्रतिशत जमानत राशि जमा करनी होगी तथा कुल जमानत राशि पर नियमानुसार स्टाम्प डयूटी देनी होगी। 6. बिलों के भुगतान में नियमानुसार आयकर एवं जीएसटी आदि की कटौती की जायेगी। 7. सामग्री की आपूर्ति उच्च गुणवत्ता की होनी चाहिए। 8. कोई भी निविदादाता जो राज्य विधि बार कौंसिल में पंजीकृत हो, निविदा देने से प्रतिबंधित होंगे।

क्र. सं.	कार्य का नाम	अनु. लागत सामग्री (रु. में)	धरोहर धनराशि (रु. में)	निविदा प्रपत्र का मूल्य (रु. में)	कार्य की अवधि माह में
1	फरीदाबाद में राम नरेश के घर से पप्पू के घर तक इ.लॉ. एवं नाली निर्माण कार्य।	187072.00	3471	250+GST	06 माह
2	मलखान के प्लॉट से महुआ राम के घर तक इ.लॉ. एवं नाली निर्माण कार्य।	190846.00	3816	250+GST	06 माह
3	कालीचरन के घर से अतुल के घर तक इ.लॉ. एवं नाली निर्माण कार्य।	503443.00	10069	250+GST	06 माह

ग्राम प्रधान — ग्राम पंचायत नगला जलाल वि.ख. सिकन्दराराऊ
सचिव — ग्राम पंचायत नगला जलाल वि.ख. सिकन्दराराऊ

कार्यालय ग्रा. पंचा.-रामपुर नगला चटोल वि. ख. सिकन्दराराऊ जनपद हाथरस

पत्रांक -मीमो/ ग्राम पंचायत/चौ.वि.-च.रा.वि./टेन्डर/2024-25 दिनांक-18.07.2024

अति अल्पकालीन निविदा

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि 14वॉं वित्त आयोग/चतुर्थ राज्य वित्त आयोग के अन्तर्गत वर्ष 2024-25 में उपलब्ध धनराशि से कराये जाने वाले निम्नांकित कार्यो हेतु उनके नाम के सम्मुख अंकित विवरणानुसार सामग्री की कार्य स्थल पर आपूर्ति हेतु मुहर बन्द निविदाऐं दिनांक 25.07.2024 को दिन के 1.00 बजे तक आंमत्रित की जाती है, जो उसी दिन सांय 3.30 बजे उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय अधोहस्ताक्षरी अथवा उसके द्वारा प्राधिकृत अधिकारी द्वारा खोली जायेंगी। यदि उक्त निविदा प्राप्त करने एवं खोलने के दिनांक को राजकीय अवकाश घोषित होता है तो निविदा प्राप्त एवं खोलने की तिथि अगला कार्य दिवस होगा। निविदा खोलने के स्थल, समय एवं वैधता में कोई परिवर्तन नही होगा निविदा की वैधता मूल तिथि से मानी जायेगी। निविदा की शर्तें निम्नवत निर्धारित की जाती है:-

1. निविदा प्रपत्र कार्यालय ग्राम पंचायत रामपुर नगला चटोल से कार्यालय दिवस एवं समय में निविदा मूल्य देकर प्राप्त किये जा सकते है। 2. निविदा प्रपत्र के साथ 2 प्रतिशत धरोहर धनराशि की एफ.डी.आर./एस.टी.डी.आर., बचत पत्र जो अधोहस्ताक्षरी के पक्ष में बन्धक होगी,जमा करनी होगी। 3. निविदा सशर्त अथवा निर्धारित समय के बाद प्रस्तुत निविदायें मान्य नही होगी तथा किसी भी निविदा को बिना कारण बतायें स्वीकृत/अस्वीकृत करने का पूर्ण अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा । 4. निविदा दरों की वैद्यता तीन माह अधिकतम होगी। इसके लिये निविदा प्रपत्र के साथ एक सौ रुपए का नॉन जुडिशियल स्टाम्प पेपर, एक रुपए का रिवेन्यू टिकट के साथ होना अनिवार्य है। 5. अनुबन्ध के समय धरोहर राशि को सम्मिलित करते हुए 10 प्रतिशत जमानत राशि जमा करनी होगी तथा कुल जमानत राशि पर नियमानुसार स्टाम्प डयूटी देनी होगी। 6. बिलों के भुगतान में नियमानुसार आयकर एवं जीएसटी आदि की कटौती की जायेगी। 7. सामग्री की आपूर्ति उच्च गुणवत्ता की होनी चाहिए। 8. कोई भी निविदादाता जो राज्य विधि बार कौंसिल में पंजीकृत हो, निविदा देने से प्रतिबंधित होंगे।

क्र. सं.	कार्य का नाम	अनु. लागत सामग्री (रु. में)	धरोहर धनराशि (रु. में)	निविदा प्रपत्र का मूल्य (रु. में)	कार्य की अवधि माह में
1	सामुदायिक शौचालय से शेर सिंह के घर तक इ.लॉ. एवं नाली निर्माण कार्य।	299023.00	5980	250+GST	06 माह
2	प्रा.वि. के गेट से कमरे तक इ.लॉ. निर्माण कार्य	176025.00	3520	250+GST	06 माह

ग्राम प्रधान — ग्राम पंचायत रामपुर नगला चटोल वि.ख. सि.राऊ .
सचिव — ग्राम पंचायत रामपुर नगला चटोल वि.ख. सि.राऊ .

कर्नाटक सरकार

विवादास्पद विधेयक

कर्नाटक सरकार के विवादास्पद विधेयक में स्थानीय लोगों को 'आरक्षण' का प्राविधान किया गया था, लेकिन आईटी उद्योग की कठोर प्रतिक्रिया के बाद इसे ठंडे बस्ते में डाल दिया गया है। कर्नाटक सरकार को निजी क्षेत्र में स्थानीय लोगों को आरक्षण देने वाले विधेयक को उद्योग जगत से तीखी प्रतिक्रिया के बाद रोकना पड़ा है। सरकार राज्य विधानसभा में रखने के पहले इस पर पुनर्विचार करेगी। यह निर्णय राज्य कैबिनेट द्वारा विधेयक स्वीकार करने के कुछ ही घंटे के भीतर आया जिसमें निजी क्षेत्र में प्रबंधन के पदों पर 50 प्रतिशत तथा गैर-प्रबंधन पदों पर 75 प्रतिशत कन्नड़वासियों को आरक्षण का प्राविधान था। कर्नाटक 'स्टेट इम्प्लायमेंट आफ लोकल कैंडीडेट्स इन द इंडस्ट्रीज़, फैक्ट्रीज़ एंड अदर स्टैब्लिशमेंट बिल, 2024' को विधानसभा में गुरुवार को रखा जाना था। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया तथा उनके मंत्रियों ने विधेयक की प्रशंसा करते हुए इस बात पर जोर दिया था कि यह उनके 'कर्नाटक समर्थक' दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका मुख्य उद्देश्य 'कन्नडवासियों का कल्याण सुनिश्चित करना' है। लेकिन विधेयक का आईटी उद्योग की ओर से भारी विरोध हुआ और उसने इसकी आलोचना की। उसका तर्क था कि इससे बैंगलुरू में टेक्नोलोजी क्षेत्र प्रभावित होगा तथा कर्नाटक में आईटी उद्योगों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। विधेयक के पीछे राज्य के निवासियों में भारी बेरोजगारी को कारण बताया गया था। इसका उद्देश्य कर्नाटक में रोजगार के अवसरों में स्थानीय प्रतिभा को प्राथमिकता देना था।

लेकिन उद्योगपतियों का मानना था कि स्थानीय लोगों के लिए 'आरक्षण' की व्यवस्था से कंपनियों को उपलब्ध सर्वोत्तम प्रतिभा को नौकरी देने में बाधा आएगी जिससे उनकी प्रतियोगिता क्षमता तथा उत्पादकता पर विपरीत असर पड़ सकता है। वैसे भी इस विधेयक के क्रियान्वयन में विधिक व संवैधानिक मुद्दे सामने आते। यह विधेयक समानता और स्वतंत्र आवागमन का अधिकार बाधित करता जिनको भारतीय संविधान में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इस कारण इसके सामने अदालती बाधाएं आतीं और कानूनी दांवपेंच लंबे समय तक चलते। इसके साथ ही प्रस्तावित विधेयक से क्षेत्रवाद और सामाजिक तनाव बढ़ने की आशंका थी। आशंका थी कि ऐसी नीति से स्थानीय व गैर-स्थानीय के बीच विभाजन पैदा होगा। इससे समाज में विघटन तथा संभवत: टकराव पैदा हो सकता है। फेडरेशन आफ इंडियन चैंबर्स आफ कामर्स-फिक्की की एक रिपोर्ट के अनुसार कर्नाटक में कुल बेरोजगारी दर 2.7 प्रतिशत है जो 4.2 प्रतिशत के राष्ट्रीय औसत से कम है। लेकिन इन आंकड़ों से स्थानीय लोगों की कम रोजगार प्राप्त करने की क्षमता छिप जाती है। लेकिन इसे ठीक करने के लिए लोकरंजक उपाय सर्वोत्तम समाधान नहीं हैं। नौकरियों में आरक्षण को अनिवार्य बनाने के बजाय सरकार को स्थानीय लोगों में शिक्षा और कौशल बढ़ाने पर केन्द्रित विकास कार्यक्रम चलाने चाहिए। शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने तथा बेहतरीन व्यावसायिक प्रशिक्षण देने से स्थानीय नौजवानों का सशक्तीकरण होगा तथा वे रोजगार बाजार में प्रभावी ढंग से प्रतियोगिता कर सकेंगे। हालांकि, वापस लिया विधेयक अलग स्वरूप में वापस लाया जा सकता है। विधेयक को ठंडे बस्ते में डालने के गंभीर राजनीतिक प्रभाव होंगे। कर्नाटक सरकार ने फिलहाल आईटी उद्योग व अन्य बिजनेसों से टकराव बचा लिया है, पर रोजगार के अवसरों की प्रतीक्षा करने वाला उसका वोटबैंक प्रभावित हो सकता है।

अमेरिका में बढ़ती राजनीतिक हिंसा

डोनाल्ड ट्रंप पर हुआ हमला देश में उथलपुथल वाला राजनीतिक परिवेश रेखांकित करता है। यह अमेरिकन लोकतंत्र और समाज के लिए चिन्ताजनक है।

नीलांत इलांगमुवा
(लेखक, वरिष्ठ पत्रकार हैं)

क्या संयुक्त राज्य अमेरिका आंतरिक गृह युद्ध की ओर बढ़ रहा है? इस वर्ष के प्रारम्भ में आई एलेक्स गारलैंड की हालिया फिल्म 'सिविल वार' टकराव का एक काल्पनिक लेकिन भयावह परिदृश्य प्रदर्शित करती है। इससे हालिया दशकों में अमेरिका द्वारा शुरू किए युद्धों के परिणाम सामने आते हैं जिनका लक्ष्य अपना वर्चस्व स्थापित करना था, लेकिन अब देश में इसके अशुभ संकेत दिख रहे हैं। पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की पेंनसिलवानिया के बटलर में आयोजित रैली में हत्या का प्रयास एक खतरनाक मुद्दा सामने लाता है। इस घटना के कारण अनेक कथित षडयंत्रों की चर्चा हो रही है जिनसे सीक्रेट एजेंसियों के कामकाज पर सवाल उठता है, जिनके प्रमुखों ने सार्वजनिक रूप से ट्रंप की आलोचना की थी। एक पुलिस स्नाइपर ने शूटर थामस मैथ्यू क्रुक्स की फोटो लगभग आधे घंटे पहले खींची थी, जब इस 20 वर्षीय युवा ने ट्रंप पर रैली के दौरान गोली चलाई। इससे हत्या का यह प्रयास रोकने की अनेक विफलतायें सामने आती हैं। इस हमले के बावजूद ट्रंप का राजनीतिक कद मजबूत हुआ है।

उन्होंने रिपब्लिकन सिनेटर जेडी वांस को 2024 के राष्ट्रपति चुनाव में अपना सहयोगी चुना है। वांस एक समय ट्रंप के मुखर आलोचक थे, पर अब वे उनके मजबूत समर्थक बन गए हैं तथा उनकी व उनकी नीतियों की मजबूत पैरोकारी कर रहे हैं। ट्रंप का कान छूती निकली गोली के बाद ट्रंप का राजनीतिक विमर्श बदल गया है और घायल होने के बावजूद वे और मजबूत हुए हैं। हालांकि, यह आश्चर्यजनक हमला अमेरिका में लंबे समय से चली आ रही राजनीतिक हिंसा के इतिहास का नवीनतम प्रकरण है। यह परिघटना अमेरिका के राष्ट्र बनने के साथ ही शुरू हो गई थी। अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की हत्या सबसे पहले हुई थी जिनको 1865 में जान विल्किस बूथ ने गोली मारी थी। गृह युद्ध में लिंकन द्वारा 'अश्वेत अधिकारों' के समर्थन का परिणाम उनकी 'मुक्ति घोषणा' के रूप में सामने आया था और यही उनकी हत्या के पीछे प्रमुख कारण था। इसके बाद राष्ट्रपति जेम्स गारफील्ड, विलियम मैक्किनले और जान. एफ कैनेडी भी ऐसी हिंसा का शिकार हुए थे। गारफील्ड की हत्या 1881, मैक्किनले की 1901 व कैनेडी की 1968 में हुई थी।

इनमें से प्रत्येक हत्या ने देश और उसकी राजनीतिक संरचना पर व्यापक प्रभाव डाला था। राजनीतिक हिंसा केवल राष्ट्रपतियों तक सीमित नहीं थी। राष्ट्रपति के उम्मीदवार के रूप में राबर्ट एफ. कैनेडी व जार्ज सी. वैलेस पर भी निशाना लगाया गया था। कैनेडी की 1968 में हिंसा के साथ ही वैलेस 1972 में लकवे का शिकार हुए थे। जेराल्ड फोर्ड व रोनाल्ड रीगन जैसे राष्ट्रपतियों को कई बार हत्या के प्रयासों का सामना करना पडा था। इससे अमेरिकन राजनीति में हिंसा की धमकी स्पष्ट होती है। अमेरिका आजकल इस तथ्य का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण बन गया है कि जब नीति निर्माता बाहरी मामलों पर ज्यादा ध्यान देते हुए आंतरिक मुद्दों की अनदेखी करते हैं तो राज्य का ढांचा कमजोर हो सकता है। उदाहरणार्थ, 'फेंटानिल संकट' अमेरिकी समुदायों को प्रभावित कर रहा है और इके चलते छोटे बच्चे और शिशु लगातार इस 'ओपायड' का शिकार होते जा रहे हैं जो सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार हेरोइन से 50 गुना ज्यादा शक्तिशाली है। देश में पैदा हुआ यह आंतरिक संकट यूक्रेन और इसराइल को गोला बारूद व उत्कृष्ट हथियारों के निर्यात से नहीं रोका जा सकता है। ऐसे समाजों में समस्याओं का मुख्यकारण केवल संस्थान न होकर प्रमुख मूल्यों का क्षरण भी होता है। एक समग्र व व्यापक मूल्य व्यवस्था के अभाव में राजनीतिक प्रबंधन बहुत कठिन हो जाता है। यह द्वंद्व ऐसे समय पैदा होता है जब प्रगति से नए मूल्यों की मांग पैदा होती है, जबकि प्रमुख मूल्य बनाए रखना स्थायित्व व सद्भावना के लिए जरूरी होता है। इस संतुलन की अनदेखी करने से समाज में अराजकता तथा नैतिक संकट की स्थिति पैदा होती है। डूबते सूरज की तरह इस अपरिहार्य क्षरण को केवल शक्ति से नहीं रोका जा सकता है।

अमेरिका में पैदा राजनीतिक परिवेश उसकी वैश्विक कार्रवाइयों का परिणाम है और अनेक अभूतपूर्व घटनाओं के माध्यम से यह अवश्यंभावी पतन का संकेत देता है। डोनाल्ड ट्रंप लंबे समय से जारी उन नीतियों का उत्पाद हैं जो अक्सर घरेलू प्रभावों की अनदेखी से पैदा होते हैं। वे अमेरिकन राजनीति में कारणों के बजाय एक लक्षण का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अमेरिकन जनता की कीमत पर दूसरे देशों का शोषण करने के इतिहास से सामने आया है। कहने की आवश्यकता नहीं कि राजनीतिक हिंसा में शामिल होना एक विकृत गतिविधि है जिसके नकारात्मक परिणाम सामने आते हैं। किसी का जीवन छीनना नैतिक रूप से पूर्णत: गलत है, भले ही उसकी भूमिका तथा गलतियां चाहे जो हों। ट्रंप की हत्या का प्रयास अनेक सवाल खड़े करता है जिनके जवाब नहीं दिए गए हैं। इस बात के कोई प्रमाण नहीं हैं कि 'गनशाट डिटेक्टर्स' का रैली में प्रयोग किया गया था, जबकि ऐसे डिटेक्टर तेजी से शूटर का पता लगा सकते हैं। शूटर थामस क्रुक्स ने ऐसी बंदूक का प्रयोग किया जिसे विधिक रूप से उसके पिता ने विधिक रूप से खरीदा था। ऐसे में सवाल उठते हैं कि क्या बंदूक खासतौर से उसके लिए खरीदी गई थी क्योंकि पेंसिलवानिया के कानून 20 वर्षीय लोगों को बंदूक खरीदने का अधिकार देते हैं।

खबरों के अनुसार शूटर की पहचान उसके डीएनए से हुई, इसका अर्थ है कि परिवारी सदस्यों ने नमूने दिए थे। खबरों से यह भी पता चलता है कि बंदूक का सीरियल नंबर छिपाने के कोई प्रयास नहीं किए गए थे और शूटर ने हाल ही में 50 राउंड 5.56 एमएम गोलियां खरीदी थीं। प्राथमिक एकास्टिक प्रमाणों से संकेत मिलता है कि ट्रंप पर निशाना लगाने में अनेक शूटरों का प्रयोग किया गया था। खबरों के अनुसार, शुरुआती गोली शूटर की स्थिति से चलाई गई थी, जबकि बाद में अज्ञात स्रोतों से भी गोलियां चलाई गईं। सीक्रेट सर्विस स्नाइपरों द्वारा खतरे को समाप्त करने के लिए एक गोली चलाई गई, जबकि एकास्टिक प्रमाणों से इसमें असंगति दिखाई देती है। इससे घटना की और गंभीरता से जांच की आवश्यकता उजागर होती है। एक बीस वर्षीय युवा द्वारा तोड़ी गई सुरक्षा पर भी सवाल उठते हैं जिसके चलते वह ट्रंप की रैली के निकट एक छत तक पहुंच गया और उसने अनेक गोलियां चलाईं। प्रमुख शूटर के तौर पर थामस मैथ्यू क्रुक्स की पहचान की गई है, लेकिन एक संभावित दूसरे शूटर का अनुमान भी लगाया जा रहा है। बताया जाता है कि क्रुक्स एक अकेला व्यक्ति था और सोशल मीडिया पर उसकी कोई उपस्थिति नहीं थी। ऐसे में उसकी अप्रत्याशित भूमिका तथा उसके वाहन में बरामद हुए विस्फोटकों से घटना की और विस्तृत जांच की आवश्यकता उजागर होती है। रैली की सुरक्षा की आलोचना में खासकर बिल्डिंगों की अनुपयुक्त कवरेज पर ध्यान दिया जा रहा है जिसे शूटर को सीधे ट्रंप को देखने का मौका मिला। यह गंभीर सुरक्षा विफलता का उदाहरण है। ये कमियां सुरक्षा प्रोटोकालों में गंभीर गड़बड़ियों का संकेत देती हैं जिससे सुरक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधारों की आवश्यकता उजागर होती है।

इसके साथ ही यह कहना भी जरूरी है कि राजनीतिक हिंसा से विरले ही उन मुद्दों का समाधान होता है जिनके समाधान की आशा इससे की जाती है। ऐतिहासिक रूप से ऐसी हिंसा से केवल विभीषिका के दुष्चक्र पैदा होते हैं और वे उन लक्ष्यों को नुकसान हीं पहुंचाते हैं जिनको हिंसा के पैरोकार प्राप्त करना चाहते हैं। अमेरिकन संस्कृति में फैल रही आक्रामकता ने अमेरिका की संस्कृति और आध्यात्मिक विकास को घातक रूप से धक्का दिया है। इससे स्वयं लोकतंत्र को भारी नुकसान होता है। लोकतंत्र जहां लोगों को परंपरागत बाधाओं से मुक्ति दिलाता है वहीं यह आत्म-नियंत्रण व आत्म-मूल्यांकन की आवश्यकता भी उजागर करता है। विडंबना है कि परंपरागत पश्चिमी मूल्यों के क्षरण के कारण इसमें भारी बाधा आई है। सामाजिक मूल्य व्यवस्था की वास्तविक निर्देशक शक्ति के बिना किसी देश की राज्य संरचना अपरिहार्य रूप से विफल हो जाती है, जबकि यह व्यक्तियों के निर्णय तय करने में महत्वपूर्ण होती है। सामूहिक विचारों के ध्वस्त होने का सामाजिक संस्थानों व व्यवहारों से निकट संबंध है।

ट्रंप पर जानलेवा हमला अमेरिका में उन नीतियों की समीक्षा का अवसर देता है जो लफ्फाजी के साथ ही राजनीतिक हिंसा को सामान्य बना रही हैं।

सूचनाधिकार कानून के समक्ष चुनौतियां

नई सरकार के गठन के बावजूद, रिक्तियां अभी भी खाली हैं, जिससे देरी बढ़ रही है और बचे हुए कुछ आयुक्तों पर बोझ बढ़ रहा है।

प्रियदर्शी दत्ता
(लेखक, स्वतंत्र शोधकर्ता हैं)

पिछले साल 13 सितंबर को केंद्रीय सूचना आयोग (सीआईसी) ने आरटीआई अधिनियम, 2005 की धारा 19 (3) के तहत इस स्तंभकार की दूसरी अपील स्वीकार की थी। अपील में सूचना देने से इनकार करने के लिए सीपीआईओ पर जुर्माना लगाने के अलावा अधिनियम के बेहतर क्रियान्वयन के लिए कुछ प्रासंगिक सुझाव भी शामिल थे। हालांकि, 6 नवंबर को उस विशेष मंत्रालय के मामलों को देखने वाली सूचना आयुक्त सुश्री सरोज पुन्हानी अपने कार्यकाल के अंत में सेवानिवृत्त हो गईं। उसी दिन एक अन्य सूचना आयुक्त उदय माहुरकर सेवानिवृत्त हुए, जबकि उनके सहयोगी सुरेश चंद्र दो दिन पहले सेवानिवृत्त हुए थे। सुश्री वंजना एन. सरना, नीरज कुमार गुप्ता और डॉ. अमिता पांडोव जैसे कई अन्य सूचना आयुक्त पिछले साल की शुरुआत में अपने-अपने कार्यकाल के अंत में सेवानिवृत्त हो गए थे। मुख्य सूचना आयुक्त वाई. के. सिन्हा 3 अक्टूबर को सेवानिवृत्त हुए, जिसके बाद सूचना आयुक्त हीरालाल समारिया को मुख्य सूचना आयुक्त के पद पर पदोन्नत किया गया। वर्ष 2023 के अंत तक आयोग की कुल संख्या घटकर मात्र तीन रह गई, जबकि वर्ष की शुरुआत में अधिकतम दस सदस्य थे। पिछले महीने नई सरकार के गठन के बाद भी रिक्त पदों को भरने में बहुत कम रुचि दिखाई गई है।

आयोग की संख्या में कमी के कारण सीआईसी भवन में दूसरी अपीलों और शिकायतों का बोझ बढ़ गया है। इस स्तंभकार की दूसरी अपील, जो पहले से ही दस महीने से लंबित है, में अनिश्चितकालीन प्रतीक्षा अवधि देखने को मिल सकती है। इसके परिणाम की तुलना न्यायपालिका में लंबे इंतजार से नहीं की जा सकती। सूचना नाजुक होती है और न्याय से भी तेजी से पुरानी हो जाती है। यहीं पर इस स्तंभकार के सुझाव मददगार साबित हो सकते थे। 2010 से आरटीआई कार्यकर्ता के रूप में अपने सीमित अनुभव में उन्होंने पाया है कि सीपीआईओ (केंद्रीय लोक सूचना अधिकारी) आम तौर पर सूचना को कर्तव्यनिष्ठा से साझा करते हैं। हालाँकि, जहाँ वे ऐसा नहीं करते हैं, वहाँ अपीलीय प्राधिकारी, जो आम तौर पर विभाग/मंत्रालय में उनके वरिष्ठ अधिकारी होते हैं, बहुत कम मदद करते हैं। वे अपने कनिष्ठों के साथ मिलकर सूचना को दबाते हैं, जाहिर तौर पर कार्यालय की राजनीति में एहसान/दायित्वों के बदले में।

सूचना आयुक्त के रूप में उदय माहुरकर ने कथित तौर पर 2021-22 में 5056 आरटीआई अपीलों का निपटारा किया, जो आरटीआई अधिनियम, 2005 के अधिनियमन के वर्ष के बाद से सबसे अधिक है। हालाँकि, यह अपीलीय प्राधिकारी के पूर्ण गैर-निष्पादन का भी प्रतिबिंब है। यदि उन मामलों का विभाग के भीतर ही पहली अपील के चरण में संतोषजनक ढंग से निपटारा कर दिया गया होता, तो दूसरी अपील के लिए सीआईसी से संपर्क करने की बहुत कम आवश्यकता होती। कई कारणों से सूचना को दबाया जा सकता है। दुर्लभ मामलों में, ऐसा हो सकता है कि सीपीआईओ ने अपनी मूल क्षमता (अनुभाग अधिकारी या अवर सचिव के रूप में) में कुछ ऐसा कार्य किया हो जिसकी वह जांच करवाना चाहता हो। इस मामले में, एक व्यक्ति को झूठे आरोपों के आधार पर काली सूची में डाल दिया गया, जबकि उसका मंत्रालय के साथ कोई वित्तीय लेन-देन नहीं था।

काली सूची में डालने के आदेश पर, हालांकि सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी के साथ, सीपीआईओ ने अवर सचिव के रूप में अपनी वास्तविक क्षमता में हस्ताक्षर किए थे। जब उनसे फाइल नोट्स, यदि कोई शिकायत हो, नियमों का उल्लंघन हो, आदि के बारे में पूछा गया तो उन्होंने यह कहकर मामले को टाल दिया कि फाइल प्रस्तुत की जा रही है (आरटीआई अधिनियम, 2005 के तहत सूचना देने से इनकार करने का ऐसा कोई आधार नहीं है, भले ही फाइल पीएमओ या राष्ट्रपति भवन में प्रस्तुत की गई हो)। इस स्तंभकार ने एक साल बीत जाने के बाद (सीआईसी में महीनों से लंबित अपील के कारण) वही जानकारी मांगी, तो पाया कि फाइल अभी भी प्रस्तुत की जा रही है!

निष्कर्ष स्पष्ट हैं। दोनों ही अवसरों पर, प्रथम अपीलीय प्राधिकारी, जो एक आईएएस अधिकारी है, ने पारदर्शिता के बजाय दमन के कारण को बढ़ावा दिया। आरटीआई अधिनियम, 2005 की धारा 20 (1) के तहत आवेदक को सूचना देने से अनुचित तरीके से इनकार करने पर सीपीआईओ पर 25,000 रुपये से अधिक का जुर्माना लगाने का प्रावधान है।

हालांकि, प्रथम अपीलीय अधिकारी द्वारा अपने कर्तव्य में स्पष्ट रूप से विफल रहने या दुर्भावनापूर्ण तरीके से काम करने पर कोई जुर्माना नहीं लगाया जा सकता। अनुशासनात्मक कार्यवाही की किसी गुंजाइश के बगैर कार्यपालिका के किसी सदस्य को अर्ध-न्यायिक शक्ति प्रदान करना शक्ति के दुरुपयोग का ही एक तरीका है। अपील की सुनवाई के लिए सीआईसी नोटिस केवल सीपीआईओ को भेजा जाता है, न कि प्रथम अपीलीय अधिकारी को। सीपीआईओ, जो एक जूनियर अधिकारी है, के सामने सूचना आयुक्त द्वारा डांट दिए जाने का डर प्रथम अपीलीय अधिकारी की ओर से कार्रवाई की ईमानदारी सुनिश्चित करेगा।

प्रथम अपीलीय अधिकारी को अनुशासित करना केंद्रीय सूचना आयोग के डेस्क पर लंबित मामलों के बोझ को कम करने की कुंजी है। सरकार ने हाल ही में 25 जून को संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया है, जो 1975 में आपातकाल की घोषणा की याद में एक अजीब नाम है।

जबकि आपातकाल लोकतंत्र विरोधी हो सकता था, यह अनुच्छेद 352 के तहत घोषित होने के कारण अपने आप में असंवैधानिक नहीं था। अगर सरकार 21वीं सदी में लोकतंत्र को मजबूत करने में दिलचस्पी रखती है तो संविधान हत्या दिवस या यहां तक कि भारत लोकतंत्र की जननी जैसी बयानबाजी काम नहीं करेगी अगर सीआईसी की ताकत कम कर दी जाए। 2005 का आरटीआई अधिनियम पारदर्शिता, जवाबदेही और शासन के लिए एक प्रमुख उपकरण था।

आप की बात

पेट्रोलियम उत्पादों पर जीएसटी

पेट्रोलियम उत्पादों को जीएसटी के दायरे में लाया जाना अनेक प्रकार से लाभप्रद सिद्ध होगा। वर्तमान कर व्यवस्था में उत्पादन के प्रत्येक चरण पर केंद्र और राज्यों द्वारा किए जा रहे करारोपण व राज्यों द्वारा अधिकाधिक वैट लगाने के कारण देश में डीजल व पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों में काफी बढ़ोतरी होती है। इनके ऊंचे दामो से वस्तु परिवहन एवं माल भाडे की लागत बढ़ जाती है जो खाद्यान्न सहित अनेक वस्तुओं की महंगाई बढ़ने का कारण है। पेट्रोलियम उत्पदों को जीएसटी के दायरे में लाने से देश भर में इनकी मानक दरे तय होगी तथा कीमतों में एकरुपता आएगी। इससे जीएसटी का मूल उद्देश्य-एक राष्ट्र एक बाजार एक कर पूरा होगा। इससे राज्यों के बीच पैट्रोलियम उत्पादों की सुगम आवाजाही सूनिश्चित होगी, ढुलाई की लागत घटेगी और आपूर्ति श्रृंखला में सुधार आएगा। शराब के बाद पेट्रोलियम उत्पादो पर कर राज्यो की राजस्व आय का प्रमुख साधन हे। इसीलिए कोई भी राज्य इस पर वैट लगाने का अधिकार छोड़ना नहीं चाहता है। लेकिन केंद्र द्वारा राज्यो के बीच आम-सहमति बनाने एवं पेट्रोलिमय उत्पादों पर जीएसटी से प्राप्त कर राजस्व के अलग से वितरण के प्रस्ताव द्वारा उन्हें पेट्रोलियम उत्पादों पर जीएसटी लागू करने के लिए राजी किया जा सकता हे।

– **विमलेश पगारिया,** बदनावर

बाल विवाह

सिविल सोसाइटी संगठनों के नेटवर्क चाइल्ड मैरिज फ्री इंडिया से जुड़ी रिसर्च टीम इंडिया चाइल्ड प्रोटेक्शन ने 2011 की जनगणना से आंकड़ों के साथ एनसीआरबी और नैशनल फैमिली हेल्थ सर्वे-5 की सूचनाओं का विश्लेषण किया। इसकी रिपोर्ट के मुताबिक भारत में हर साल 16 लाख नाबालिग लड़कियों की शादी हो रही है। हालांकि, भारत में आजादी से पूर्व 1929 में ही नाबालिगों की शादी पर प्रतिबंध लगाया जा चुका है। अब प्रशासकीय अमले के साथ-साथ सुदूर गांवों में आंगनबाड़ी और आशा कार्यकर्ता तैनात हैं। इसके बावजूद नाबालिग लड़कियों की शादी प्रशासनिक व्यवस्था की प्रभावशीलता पर सवाल खड़े होते हैं। संचार क्रांति के चलते गांव-गांव तक स्मार्टफोन और टीवी के जरिए हर नागरिक को पता है कि बाल विवाह एक दंडनीय अपराध होने के साथ-साथ नाबालिग बच्चों के जीवन को भी बर्बाद करता है। बाल विवाह रोकने के लिए तहसील स्तर पर प्रशासनिक अधिकारियों की जिम्मेदारी तय होनी चाहिए। देश की व्यापक प्रगति के बावजूद सबसे गरीब लोगों में सामाजिक जागरूकता तथा शिक्षा का अभाव एवं सड़ी-गली पुरानी मान्यताओं का अब भी बना रहना बाल विवाह का मुख्य कारण है।

– **सुभाष बुड़ावन वाला,** रतलाम

तलाक की विभीषिका

तलाक खासकर बच्चों के लिए हृदयविदारक है जिससे उनका भविष्य चौपट हो सकता है। उन्हें असल माता-पिता का लाड़-दुलार जो एक घर में रह कर मिलता है वह माता पिता के दूर-दूर रहकर नहीं मिल सकता है। यदि बच्चे से माँ या पिता दूर रहे तो वह एक के प्यार से वंचित ही रहेगा। यदा-कदा बच्चे से मिलना और पेरेंट्स के साथ बारी-बारी से बच्चे के रहने से सामान्य जीवन की क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती है। बेहतर यही है कि या तो युगल शादी बहुत ही सोच समझ कर करें। विवाह बंधन में बंधने और बच्चा पैदा होने के पश्चात यदि कोई विवाद हो तो उसे बच्चे के सामने आने वाली कठिनाइयों को देख कर हल करने का प्रयास करें। युवाओं को समझना चाहिए कि तलाक एक मामूली सा सम्बन्ध विच्छेद नहीं है, बल्कि इससे पूरा जीवन प्रभावित हो सकता है। विडंबना है कि भारत में संयुक्त परिवार टूटने तथा एकल परिवारों में भी माता पिता के अलग-अलग स्थानों में काम करने अथवा अपने साथी की सोच से समझौता न करने की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण तलाक जैसी कुपृथा बढ़ती जा रही है। इस विभीषिका का सबसे हानिकारक प्रभाव बच्चों के साथ उन वृद्धों पर भी पड़ता है जो अपने युवा बेटे-बेटियों से दूर रहने पर मजबूर होते हैं।

–**शकुंतला महेश नेनावा,** इंदौर

कांवड़ यात्रियों को सुविधा

उत्तर प्रदेश में कांवड़ यात्रा मार्ग पर ढाबा, दुकानों या ठेलों पर मालिक का नाम प्रदर्शित करने के निर्देश पर सियासी घमासान मचा है। जबकि मुजफ्फरनगर पुलिस के निर्देश में कोई बुराई नहीं है। नाम प्रदर्शित होने से शुद्ध शाकाहारी कांवड़ियों को सुविधा मिलेगी जो कम से कम इस यात्रा के दौरान लहसुन, प्याज जैसी चीजों का उपयोग नहीं करते हैं। कई बार शुद्ध शाकाहारी लोग जाने अनजाने नाम के भ्रम में ऐसी दुकानों पर चले जाते हैं, जहां वेज व नानवेज दोनों प्रकार का भोजन बनता है। अतीत में ऐसे अनेक मामले विवाद का कारण बने हैं। विपक्षी दलों को ऐसे मुद्दों पर सियासत करने से बचना चाहिए। यह सियासत का मसला है ही नहीं। किसी भी ग्राहक को यह अधिकार है कि वह अपनी इच्छानुसार किसी दूकान से सामान खरीदे या नहीं। समस्या कुछ लोगों द्वारा अपनी पहचान छिपा कर फर्जी नाम से मुनाफा बटोरने के कारण पैदा होती है। दूकानों पर मालिकों का नाम प्रदर्शित होने से खाद्य वस्तुओं में मिलावट अथवा अन्य कारणों से किसी के बीमार होने पर पुलिस व प्रशासन को दोषी दूकानदारों के खिलाफ कार्रवाई में सुविधा होगी।

– **हेमा हरि उपाध्याय,** खाचरोद

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

स्लो प्वाइजन के रूप में धमनियों में जा रहा फर्टिलाइजरः योगी

● बोले सीएम, यूपी में जल्द एक कृषि विश्वविद्यालय होगा प्राकृतिक खेती को समर्पित

प्राकृतिक खेती पर आधारित क्षेत्रीय परामर्श कार्यक्रम में शामिल हुए सीएम योगी व केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान

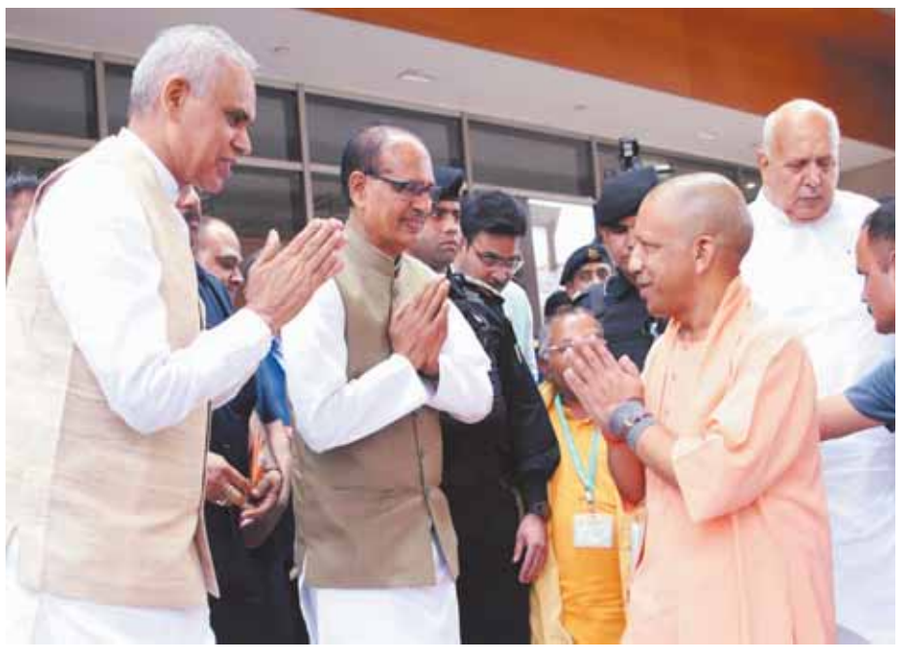

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि देश के एक राज्य में कृषि कार्य में अत्यधिक फर्टिलाइजर के उपयोग का हश्र ये हुआ कि आज वहां से 'कैंसर ट्रेन' चलानी पड़ रही है। उन्होंने कहा कि हरित क्रांति से कृषि उत्पादन जरूर बढ़ा, मगर ये अधूरा सच है। आज फर्टिलाइजर की अधिकता के कारण एक 'धीमा जहर' हमारी धमनियों में घुस रहा है। ये दुष्प्रभाव केवल मनुष्यों पर ही नहीं पड़ा है, बल्कि पशु-पक्षी भी इससे बुरी तरह से प्रभावित हो रहे हैं। सीएम योगी ने कहा कि देश में कई इलाके ऐसे भी थे जहां प्राकृतिक ढंग से भी कृषि उत्पादन अधिक था। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हमें बीज से लेकर बाजार तक कृषि उत्पादों के प्राकृतिक स्वरूप को बनाए रखना होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि यूपी में जल्द ही एक कृषि विश्वविद्यालय को प्राकृतिक खेती के लिए समर्पित किया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार को राजधानी लखनऊ में प्राकृतिक खेती के विज्ञान पर क्षेत्रीय परामर्श कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत रहे। वहीं केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान की मौजूदगी में आयोजित कार्यक्रम के दौरान सीएम योगी ने कहा कि हरित क्रांति का लाभ अन्न उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में हुआ है, मगर ये अधूरा सच है। हमें 17वीं और 18वीं सदी के भारत के उन प्रांतों में प्राकृतिक खेती से होने वाले उत्पादन दर को भी देखना होगा जब धरती अपने प्राकृतिक स्वरूप में थी और अन्न उत्पादन भी ज्यादा था। सीएम योगी ने कहा कि हमें खेती को लेकर पिछले सौ-डेढ़ सौ वर्ष में जो पढ़ाया गया है, उसमें और पुराने समय के विज्ञान में कितना अंतर है। हमें इतिहास के पन्नों को फिर से पलटना होगा। हरित क्रांति के बाद जब खेती में फर्टिलाइजर का उपयोग हुआ तो कुछ समय तक उत्पादन तो बढ़ा, मगर आज एक स्लो प्वाइजन के रूप में वह हमारी धमनियों में घुसता जा रहा है।

सीएम योगी ने कहा कि फर्टिलाइजर का दुष्प्रभाव केवल मनुष्यों में ही नहीं देखने को मिल रहा बल्कि पशु-पक्षी भी इससे प्रभावित हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि अमरोहा में निराश्रित गोवंश आश्रय स्थल में 12 से 14 गाय अचानक मर गईं, जब हमने वहां विशेषज्ञ भेजे तो ये पता लगा कि चारे में बड़े पैमाने पर फर्टिलाइजर मिला था, जिसके कारण उनकी मौत हुई। हमें समझना होगा कि जब गाय अत्यधिक फर्टिलाइजर को बर्दाश्त करने की स्थिति में नहीं है तो मनुष्य की स्थिति क्या होगी।

सीएम योगी ने कहा कि उनके पास मुख्यमंत्री राहत कोष से इलाज के लिए बड़ी संख्या में लोग धन की मांग करते हैं, इसमें सर्वाधिक मामले कैंसर के होते हैं। आज से कुछ साल पहले इतनी भयावह स्थिति नहीं थी। आज गांव-गांव में युवाओं में कोई किडनी, कोई हार्ट तो कोई कैंसर से पीड़ित हो गया है। इसका कारण है कि हमारा खानपान कहीं न कहीं प्रभावित हुआ है। जिसने नई-नई बीमारियों को जन्म दिया है। इससे बचाव का नया मंत्र पीएम मोदी ने प्राकृतिक खेती का दिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमें बीज से लेकर बाजार तक कृषि उत्पादों के प्राकृतिक स्वरूप को बनाए रखना होगा। यूपी में इसके लिए बड़ी संभावना है। हमारे पार देश की 12 प्रतिशत भूमि है। यूपी में देश की 17 प्रतिशत आबादी रहती है। हम देश के खाद्यान का 20 प्रतिशत उत्पादन करते हैं। हमारे पास पर्याप्त जल संसाधन है। हमें आज की आवश्यकता के अनुरूप उस क्वालिटी पर ध्यान देना होगा जो हमारे हैपिनेस इंडेक्स को ऊंचाई पर ले जा सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि यूपी सरकार ने इस दिशा में कार्य प्रारंभ किया है। हमारे पास अभी 4 कृषि विश्वविद्यालय हैं, पांचवां बनने जा रहा है। 89 कृषि विज्ञान केंद्र हैं और दो केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय हैं। हमने कह रखा है कि प्राकृतिक खेती से जो भी प्रोडक्ट आता है, उसके सर्टिफिकेशन के कार्यक्रम को तेज गति से आगे बढ़ाना है। बीज से इसकी शुरुआत हो और बाजार तक पहुंचने पर अच्छा दाम मिल सके, ऐसी व्यवस्था कर रहे हैं हम। हमने प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों को कह दिया है कि सर्टिफिकेशन लैब्स को अपग्रेड कीजिए, धन सरकार देगी।

प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों को सब्सिडी देगी भारत सरकारः शिवराज सिंह चौहान

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● केंद्रीय कृषि मंत्री बोले, ग्लोबल वार्मिंग और क्लाइमेट चेंज से पूरी दुनिया चिंतित मानव जाति के अस्तित्व पर खतरा

कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए केमिकल और फर्टिलाइजर के प्रयोग का परिणाम हम सबके सामने है। आज पूरी दुनिया ग्लोबल वार्मिंग और क्लाइमेट चेंज को लेकर चिंतित है, लेकिन इसके जिम्मेदार हम खुद हैं। इससे ये सिद्ध हो गया है कि आने वाली पीढ़ी के लिए ये धरती रहने लायक नहीं रहेगी। ऐसे में हमें समय रहते संभलना होगा। इसके लिए हमें प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना होगा। इसे ध्यान में रखते हुए भारत सरकार प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए सब्सिडी देने पर विचार कर रही है। ये बातें शुक्रवार को प्राकृतिक खेती पर आधारित 'भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति' कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कही।

शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि भारत सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया, को आत्मसात कर आगे बढ़ने वाला देश है। भारत की यह भावना प्राचीन खेती में भी निहित थी। उस समय खेती में केमिकल फर्टिलाइजर का इस्तेमाल नहीं होता था। ऐसे में धरती उपजाऊ होती थी और अन्न पोषक पैदा होते थे। वहीं धीरे-धीरे धरती पर दबाव बढ़ता गया और उत्पादन बढ़ाने के लिए ज्यादा से ज्यादा केमिकल फर्टिलाइजर का इस्तेमाल होने लगा। साथ ही नई-नई वैराइटी के लिए ऐसे बीज का प्रयोग होने लगा जिसमें ज्यादा खाद, पानी और कीटनाशक की जरूरत पड़ने लगी। इससे उत्पादन तो बढ़ा, लेकिन बीमारियां भी बढ़ती गयीं। इसके लिए कैंसर एक्सप्रेस जैसी ट्रेनें चलानी पड़ीं। आज हम सभी अपनी सेहत को लेकर काफी गंभीर हैं। यही वजह है कि लोग बिना केमिकल फर्टिलाइजर के कृषि उत्पाद को खरीदने के लिए दोगुने दाम देने को तैयार हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि प्राकृतिक खेती से उत्पादन में कमी आएगी, यह लोगों का भ्रम है। प्राकृतिक खेती से न तो उत्पादन कम होगा और न ही भंडारण में कमी आएगी। उन्होंने ऐसे किसानों को बधाई दी जो बिना केमिकल फर्टिलाइजर के अनाज का उत्पादन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कीटनाशक दवाइयों के इस्तेमाल से धरती की उर्वरक क्षमता प्रभावित होती है। इससे कीट मित्र जमीन से खत्म होते जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि दुनिया में आपदाएं बढ़ती जा रही है। यह मानव जाति के अस्तित्व पर खतरा है। ऐसे में हमे समय रहते सावधान रहना होगा और धरती के अस्तित्व को बचाने के लिए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना होगा।

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि भारत सरकार धरती के अस्तित्व को बचाने के लिए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दे रही है। इसके लिए भारत सरकार प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों को सब्सिडी देगी। इसके लिए उन्हे प्राकृतिक खेती के सर्टिफिकेशन की भी व्यवस्था करेगी। साथ ही तीन साल तक किसानों की क्षतिपूर्ति के लिए उनके खातों में पैसा भेजेगी।

ठगों के गिरोह के लिए बैंक खाते संचालित करने वाले सरगना सहित तीन गिरफ्तार

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

एसटीएफ ने टेलीग्राम ग्रुप्स के माध्यम स गूगल पर टास्क पूरा करने पर धन दोगुना करने का लालच देकर ठगी करने वाले संगठित गिरोह के लिए कमीशन पर लिए गए बैंक खातों का संचालन कर रुपए को यूएसडीटी में विभिन्न एप के माध्यम से कनवर्ट कर गैंग के वालेट में ट्रांसफर करने वाले सरगना सहित 3 अभियुक्तों को जोधपुर (राजस्थान) से गिरफ्तार किया है। पकड़ा गया सरगना प्रकाश नवल जोधपुर, राजस्थान का रहने वाला है। इसके अलावा अन्य दोनों अभियुक्त सतीश नवल उर्फ मोन्ट और कैलाश चन्द्र सुकेरिया भी राजस्थान के हैं। गिरफ्तार अभियुक्त प्रकाश नवल ने पूछताछ में बताया कि मैने वर्ष 2014 में आईटीआई की है। वर्ष 2016 से 2020 तक एसबीआई व आईसीआईसीआई बैंक में केडिट कार्ड डिपार्टमेंट में काम किया तथा वर्ष 2020 से 2023 तक जयपुर में भारत-पे में टीम लीडर के पद पर कार्यरत रहा। इसी दौरान सितम्बर-2023 में मेरे टेलीग्राम पर मैसेज आया कि आप को यूपीआई पेमेंट पोर्ट मल्टीनेशनल कंपनी में कलेक्शन मैनेजर के पद पर जाब का आफर है, यदि आप काम करना चाहे तो कर सकते है। हमारी कम्पनी क्रिप्टो में इनवेस्ट कराती है कस्टमर द्वारा आपके बैंक खाते में रूपये भेजे जायेंगे। जिसको आपको 12 प्रतिशत कमीशन काटकर यूएसडीटी में कनवर्ट करके कम्पनी के वालेट में ट्रांसफर करना होगा। आप जितने भी बैंक खाते उपलब्ध करायेगे उनमें प्रतिदिन 1-2 लाख रुपये आयेंगे। इसके बाद मैने मेरे चचेरे भाई सतीश नवल उर्फ मोन्टू से बात किया कि यदि हम लोग किराये के कुछ खाते मैनेज कर लें तो अच्छा फायदा हो सकता है जिसके लिए मोंटू तैयार हो गया। इसके बाद हम दोनो ने किराये के बैंक खाते लेकर काम करना प्रारम्भ कर दिया। कनवर्ट करने का काम कैलाश चन्द्र सुकेरिया द्वारा कराया जाने लगा। जिन बैंक खातें में रूपये आते थे वह 4-5 दिन में ब्लाक हो जाते थे।

हम लोग किराये के मल्टिपल बैंक खाते प्रयोग करते थे। हम लोगों द्वारा लगभग 200 बैंक खाते किराये पर लिए गये जिनमें अबतक विभिन्न चरणों में लगभग 7-8 करोड रुपये आये हैं जिसको हम तीनों मिलकर अपना कमीशन काटकर यूएसडीटी कनवर्ट कर कम्पनी के वालेट में ट्रांसफर कर दिये। जो रुपये कमीशन में आये उनको हम तीनों व एकाउण्ट होल्डर्स ने आपस में बांट लिया। प्रकाश नवल द्वारा बतायी गयी बातों का उपरोक्त सतीश नवल व कैलाश चन्द्र सुकेरिया ने समर्थन किया और बताया कि हम लोग रुपये के लालच में आकर यह कार्य करने लगे।

महाकुंभ-2025 के अवसर पर प्रयागराज में होम-स्टे तैयार कराए जाएंगे

● भवन स्वामियों को स्वरोजगार तथा आमदनी के स्रोत बढ़ेगेः जयवीर सिंह

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि अयोध्या की तर्ज पर प्रयागराज में बड़ी संख्या में पेइंग गेस्ट बनाने की तैयारी है। योजना से एक तरफ जहां पर्यटकों को उचित दर पर ठहरने के साथ-साथ भोजन की व्यवस्था उपलब्ध होगी, वहीं प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में रोजगार सृजित होंगे। वह भवन स्वामी जिनके पास अतिरिक्त कमरे हैं योजना का लाभ ले सकते हैं। उन्होंने कहा कि होम-स्टे से श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को एक नया परिवेश मिलेगा। साथ ही प्रदेश की गौरवशाली संस्कृति को नजदीक से देखने और समझने का अवसर प्राप्त होगा।

पर्यटन मंत्री ने बताया कि प्रयागराज में छह माह बाद भव्य और दिव्य महाकुंभ के आयोजन की तैयारी चल रही हैं। इस बार 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं के आने के संभावना है। अयोध्या की तरह प्रयागराज में भी बड़ी संख्या में ठहराव स्थल की आवश्यकता होगी। इसी पूर्ति के लिए होटल आदि के साथ-साथ पेइंग गेस्ट पर अधिक फोकस किया जा रहा है। अयोध्या की तरह प्रयागराज में भी होम स्टे योजना भवन स्वामियों के लिए आय के बड़े अवसर के रूप सामने आई है। जिस किसी मकान मालिक के पास पर्यटकों को ठहराने के लिए अतिरिक्त कमरे उपलब्ध हैं वह अच्छी-खासी कमाई कर सकता है। क्योंकि महाकुंभ में बड़ी संख्या में पर्यटक संगमनगरी आएंगे। इन्हें ठहरने के लिए बड़ी संख्या में कमरों की आवश्यकता होगी। भवन स्वामी का लाभ लेने के लिए क्षेत्रीय पर्यटन कार्यालय प्रयागराज में आवेदन कर सकते हैं। जयवीर सिंह ने बताया कि पेइंग गेस्ट योजना का उद्देश्य आवासीय सुविधाओं में वृद्धि के साथ ही साथ ऐसे भवन स्वामियों जिनके पास पर्यटकों को रुकवाने हेतु अतिरिक्त कमरे उपलब्ध हों, उनको अतिरिक्त आय का साधन उपलब्ध कराना है। इससे स्वतः रोजगार को बढ़ावा मिलेगा। मकान मालिक कमरे उपलब्ध कराने के साथ ही पर्यटकों को नाश्ता, भोजन की सुविधा उपलब्ध करा सकेगा। कमरे का किराया एवं भोजन आदि के लिए आवश्यक निर्धारित धनराशि पर्यटकों से प्राप्त कर सकेगा। पेइंग गेस्ट के लिए विभिन्न मानक निर्धारित किए गए हैं।

सपा ने मनाई पूर्व मंत्री शारदा नंद अंचल की जयंती

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मंत्री स्व. शारदा नंद अंचल की जयंती शुक्रवार को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय, लखनऊ और बलिया जनपद के मौरहवा में सादगी से मनाई गई। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव की ओर से राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल ने राज्य मुख्यालय लखनऊ में उनके चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की। इस अवसर पर डॉ॰ राजपाल कश्यप पूर्व एमएलसी, रामकुमार पूर्व विधायक, विजय प्रकाश अंचल, व्यासजी गोंड, रीबू श्रीवास्तव, शशि भूषण यादव, बृजेश सिंह बैचलर, अशोक यादव, दिनेश यादव लोहिया, शोभित वर्मा, राजा मान सिंह, रजनीश भारतीय पासी, अरशद खान, नजरीन इंतखाब, श्रीमती मनीषा शाहा, अनीता यादव, ममता यादव, मेहनाज खान, जीनत खान, शालिनी, शाहीन खान, डिम्पी राज, शहनाज बानो आदि नेताओं ने श्रद्धासुमन अर्पित किये। शारदानंद अंचल टेक्नीकल इंस्टीट्यूट मौरहवा बलिया में शारदानंद अंचल जी की जयंती पर उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर याद किया गया।

आरएसएस का एजेंडा लोकतंत्र की आड़ में तानाशाही थोपनाः अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा लोकतंत्र को कमजोर करने में लगी है और उसके मातृ संगठन आरएसएस का एजेंडा लोकतंत्र की आड़ में तानाशाही थोपना है। इन दोनों की कोशिश है कि विधानसभा के उपचुनाव में साजिश करके जैसे तैसे लोकतंत्र की पवित्रता भंग की जाए। समाजवादी पार्टी भाजपा की इन साजिशों से सतर्क है और उनके किसी भी कुत्सित इरादे को सफल नहीं होने देगी। जनता भी भाजपा को करारी शिकस्त देने के लिए मन बना चुकी है।

यादव शुक्रवार को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय, लखनऊ के डॉ. लोहिया सभागार में एकत्र पार्टी कार्यकर्ताओं को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भाजपा में सत्ता संघर्ष छिड़ा हुआ है। इस कारण राज्य में प्रशासनिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो रही है। थाना- तहसील और दूसरे विभागों में जनता भटक रही है, बिना रिश्वत कोई काम नहीं हो रहा है। जनता त्रस्त है। भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर है। यादव ने कहा कि भाजपा ने नफरत फैलाने के अपने एजेंडा के तहत उत्तर प्रदेश-उत्तराखण्ड में होटल, ढाबा और ठेला लगाकर जीवनयापन करने वालों को अपना नाम लिखने का सरकारी आदेश देकर साबित कर दिया है कि वह किसी भी कीमत पर सौहार्द और भाईचारा नहीं रहने देना चाहती है।

अखिलेश यादव ने कहा कि विगत लगभग आठ वर्ष में भाजपा ने सरकार में रहते हुए विकास का कोई काम नहीं किया है। विकास भाजपा सरकार में पूरी तरह ठप्प है। भाजपा की सरकार में नौजवानों को धोखा मिला है। उनकी रोटी-रोजगार के प्रति सरकार जरा भी फिक्रमंद नहीं है। उनका भविष्य अंधकार में है। नौकरियों में छंटनी हो रही है।

यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में किसान सर्वाधिक उत्पीड़ित है। किसानों की आय दोगुनी करने का झांसा दिया गया था, उसे भी पूरा नहीं किया। उसकी फसलों का लागत मूल्य भी नहीं मिल पाता है। भाजपा किसानों को एमएसपी का कानूनी अधिकार नहीं देना चाहती है। भाजपा सरकार में बाजार पर पूंजी घरानों का नियंत्रण बढ़ता जा रहा है। महंगाई चरम पर है। जनसामान्य के उपयोग की सभी वस्तुओं के दाम आसमान छू रहे हैं। भाजपा सरकार महंगाई और भ्रष्टाचार रोकने में पूरी तरह विफल साबित हुई है।

अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी सामाजिक न्याय, जातीय जनगणना के लिए प्रतिबद्ध है। पीडीए पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यकों, महिलाओं, गरीबों की साझा ताकत के आगे भाजपा कहीं भी टिक नहीं सकती है। भाजपा तो जनता के जनादेष को कुचल कर सत्तासीन है। विधानसभा उपचुनाव और 2027 के विधानसभा के आम चुनाव में अब जनता जनार्दन भाजपा का सूपड़ा साफ करने को तैयार है।

संगठन को ताकत देकर 2027 के चुनाव में प्रदेश में बनानी है कांग्रेस की सरकारः अजय राय

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने शुक्रवार को पार्टी मुख्यालय पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी निशक्तजन (विकलांग) प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों एवं सभी जिला-शहर चेयरमैन की एक महत्वपूर्ण बैठक की। बैठक की अध्यक्षता प्रकोष्ठ के चेयरमैन मनीष प्रसाद श्रीवास्तव तथा संचालन प्रकोष्ठ के उपाध्यक्ष जितेन्द्र कुमार वर्मा ने की।

इस मौके पर अजय राय ने कहा कि जो जज्बा आपके पास है, आप के अन्दर जो दृढ़ इच्छा शक्ति है आप लोग किसी भी तरह कमजोर नहीं हैं, इतनी दूर-दूर से आप लोग आये हैं, इसी जज्बे और मेहनत से संगठन को ताकत देकर आने वाले 2027 के चुनाव में कांग्रेस की सरकार प्रदेश में बनानी है। आप निश्चित मान लीजिए उप्र में अगली सरकार कांग्रेस की बनेगी। राय ने कहा कि हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपको मेरी जहां और जिस तरह की आवश्यकता होगी पूरा कांग्रेस परिवार आपके साथ खड़ा रहेगा। किसी भी संघर्ष में हम पीछे नहीं रहेंगे। राय ने प्रदेश के कोने-कोने से आये निशक्तजन (विकलांग) प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जनता आज कांग्रेस की ओर देख रही है, जनता का समर्थन पूरी तरह मिल रहा है। राहुल के नेतृत्व में कांग्रेस हर वर्ग के लिए संघर्ष कर रही है।

उन्होंने कहा कि वह आज सुबह अयोध्या गए वहां एक पुराने मामले में जिलाध्यक्ष को पुलिस प्रशासन द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया था। मैं जेल पहुंचकर उनसे मिला तो जिलाध्यक्ष ने कहा कि आपके आने से जो बल मुझे मिला है आम जनता की सेवा के लिए चाहे मुझे साल भर भी जेल में रहना पड़े तो मैं खुशी से रहा लूंगा। राय ने कहा कि मैं यह बात इसलिए बता रहा हूं कि आप लोग खुद को कमजोर व अकेला न समझें पूरी ताकत से काम करें, किसी भी समस्या पर मैं आपके साथ खड़ा रहूंगा। बैठक के दौरान दिव्यांगजनों की समस्याओं को लेकर प्रकोष्ठ के चेयरमैन मनीष प्रसाद श्रीवास्तव ने बताया कि भाजपा की केंद्र और प्रदेश सरकार ने जो वादे किये थे आज भी वह जस के तस हैं।

कोल आदिवासियों को एससी-एसटी में शामिल करने का केंद्र सरकार को प्रस्ताव भेजने की मांग

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कोल आदिवासी विकास समिति ने शुक्रवार को उत्तर प्रदेश में निवासरत आदिवासी जाति को अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में सम्मिलित कराने के लिए भारत सरकार को प्रस्ताव भेजने हेतु उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय जी को सम्बोधित पत्र सौंपा। कोल आदिवासी विकास समिति के अध्यक्ष जय नारायण कोल के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने कोल आदिवासी जाति की आर्थिक, सामाजिक स्थितियों से अवगत कराते हुए कहा कि देश के कई राज्यों में जहां-जहां कोल आदिवासी निवासरत हैं वहां कोल आदिवासी जाति को अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में रखा गया है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने तत्काल प्रदेश के मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर कोल आदिवासी जाति को अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में शामिल कराने हेतु भारत सरकार को अविलंब प्रस्ताव भेजने के लिए आग्रह किया।

बुंदेलखंड में 8 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाओं की शुरुआत

● 5 माह में बुंदेलखंड में कुल निवेश परियोजनाओं का 11 प्रतिशत उतरा धरातल पर

जीबीसी 4.0 में 69 हजार करोड़ की निवेश परियोजनाओं का हुआ था शुभारंभ

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश में कभी पिछड़े क्षेत्र के रूप में पहचान रखने वाले बुंदेलखंड को योगी सरकार ने निवेश का नया गंतव्य बना दिया है। फरवरी माह में आयोजित ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी के चौथे संस्करण (जीबीसी 4.0) में पीएम मोदी ने बुंदेलखंड के लिए करीब 69 हजार करोड़ रुपए की निवेश परियोजनाओं का शुभारंभ किया था। शुभारंभ के 5 माह के अंदर बुंदेलखंड में करीब 8 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाओं का कॉमर्शियल प्रोडक्शन शुरू हो चुका है, जिससे हजारों लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं। शुरू हो चुकी परियोजनाओं की यह राशि जीबीसी 4.0 में बुंदेलखंड के लिए निर्धारित परियोजना राशि की 11 प्रतिशत है और शेष परियोजनाओं के भी जल्द से जल्द शुरू होने की संभावना है।

प्रदेश में निवेश प्रक्रियाओं की निगरानी के साथ ही निवेश को प्रोत्साहित करने वाली नोडल एजेंसी इन्वेस्ट यूपी के आंकड़ों के अनुसार, प्रदेश में अब तक कुल 1,14,345 करोड़ रुपए की 3984 परियाजनाओं का कॉमर्शियल प्रोडक्शन शुरू हो चुका है। इनमें बुंदेलखंड में 7894 करोड़ रुपए की 156 परियोजनाएं शामिल हैं। यह राशि जीबीसी 4.0 में निर्धारित परियोजना राशि का 11 प्रतिशत है। जीबीसी 4.0 के दौरान बुंदेलखंड की 693 परियोजनाओं का शुभारंभ किया गया था, जिनकी कुल निवेश राशि 68,933 करोड़ रुपए थी। यह जीबीसी 4.0 में कुल 10 लाख करोड़ की परियोजनाओं का 7 प्रतिशत था। परियोजनाओं की शुरुआत से बुंदेलखंड में बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर उत्पन्न होने की संभावना है। साथ ही, बुंदेलखंड में लोगों को रोजगार के लिए प्रदेश के अन्य क्षेत्रों या दूसरे राज्यों का रुख नहीं करना होगा।

बुंदेलखंड के जिलों की बात करें तो झांसी में सर्वाधिक 6,237 करोड़ की 62 परियोजनाओं ने इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन शुरू कर दिया है। इससे यहां के युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं। जीबीसी 4.0 के दौरान झांसी में 27,533 करोड़ की 246 परियोजनाओं का शुभारंभ हुआ था। इस लिहाज से अभी यहां 21 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा की परियोजनाएं शुरू होनी शेष हैं, जो जल्द ही पूरी होंगी। इसी तरह, हमीरपुर में 963 करोड़ की 14 परियोजनाएं, ललितपुर में 246 करोड़ की 23 परियोजनाएं, महोबा में 195 करोड़ की 24 परियोजनाएं, बांदा में 58 करोड़ की 15 परियोजनाएं, जालौन में 46 करोड़ की 11 परियोजनाएं और चित्रकूट में 22 करोड़ की 7 परियोजनाएं शुरू हो चुकी हैं। जीबीसी 4.0 में हमीरपुर में 2,187 करोड़, ललितपुर में 15,735 करोड़, महोबा में 1,682 करोड़, बांदा में 1060 करोड़, जालौन में 13,577 और चित्रकूट में 7,157 करोड़ रुपए की परियोजनाओं का शुभारंभ किया गया था।

चित्रकूट में टस्को लि. 4700 करोड़, सहस्त्रभुज फूड प्रोडक्ट्स प्रा. लि. 500 करोड़, वरुण बेवरेजेस लि. 496 करोड़, श्री सीमेंट्र प्रा. लि. 202 करोड़ का निवेश कर रहा है। वहीं, हमीरपुर में राजेंद्र सिंह शर्मा 660 करोड़, हिंदुस्तान यूनिलिवर लि. 230 करोड़, यूजीआर साइलस हमीरपुर प्रा. लि. 54 करोड़ का निवेश कर रहा है। जालौन में बुंदेलखंड सौर ऊर्जा लि. 6000 करोड़, संचय न्यू एज डेवलपर्स प्रा. लि. 1000 करोड़, रोमिंग सोल्स टेक्नोलॉजी प्रा. लि. 900 करोड़ तो पालीवाल फूड्स प्रा. लि. 55 करोड़ के निवेश के लिए जीबीसी 4.0 में शामिल रहा है। झांसी में टस्को लि. 3430 करोड़, आरवीएनएल लि. 2840 करोड़, फोर्थ पार्टनर एनर्जी प्रा. लि.1200 करोड़ और सन सोर्स एनर्जी 600 करोड़ इन्वेस्ट कर रहा है। इसी तरह, ललितपुर में टस्को लि.3450 करोड़, यूजीआर साइलस 48 करोड़, वी एंड एस एंटरप्राइजेस 30 करोड़ का निवेश धरातल पर उतार रहा है। महोबा में टस्को लि. 1008 करोड़, आईबी वोओजीटी सोलर फोर प्रा. लि. 80 करोड़, देसी भोग 50 करोड़ और जीआरएस होटल प्रा. लि. 50 करोड़ से परियोजना पर काम कर रहा है। वहीं, बांदा में अवादा इंडसोलर प्रा. लि. 350 करोड़ रुपए के निवेश को तैयार है।

औद्योगिक क्षेत्र के तौर पर विकसित होगा हाथरस का सलेमपुर, ईपीसी मोड पर होगा निर्माण

● 325.54 करोड़ रुपए से 483 एकड़ क्षेत्र में होगा विकास

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश को उन्नत प्रदेश बनाने के लिए प्रतिबद्ध योगी सरकार राज्य को 1 ट्रिलियन डॉलर की इकॉनमी बनाने के लिए प्रदेश में इंडस्ट्रियल इंफ्रास्ट्रक्चर्स के विकास पर विशेष रूप से फोकस कर रही है। प्रदेश के सभी औद्योगिक प्राधिकरणों में औद्योगिक विकास की विभिन्न योजनाओं को गति दी जा रही है। इस क्रम में, सीएम योगी के विजन अनुसार हाथरस के सलेमपुर को इंडस्ट्रियल एरिया के तौर पर विकसित करने के लिए एक विस्तृत कार्ययोजना तैयार की गई थी। अब इस कार्ययोजना को क्रियान्वित करते हुए उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीसीडा) ने हाथरस के सलेमपुर की औद्योगिक क्षेत्र के तौर पर कायाकल्प की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस प्रक्रिया को कॉन्ट्रैक्टर एजेंसी की नियुक्ति और कार्यावंटन के जरिए पूरा किया जाएगा।

यूपीसीडा द्वारा सलेमपुर के विकास कार्यों को इंजीनियरिंग, प्रोक्योरमेंट व कंस्ट्रक्शन (ईपीसी) माध्यम के जरिए दो फेज में कराया जाएगा। इसमें कुल मिलाकर 325.54 करोड़ रुपए व्यय होंगे तथा कार्यावंटन के बाद एजेंसी द्वारा 18 महीने की अवधि के भीतर सभी निर्धारित निर्माण व विकास कार्यों को पूर्ण करना होगा। सीएम योगी के विजन अनुसार तैयार की गई कार्ययोजना को क्रियान्वित करते हुए यूपीसीडा द्वारा सलेमपुर में 483 एकड़ क्षेत्र को फिलहाल इंडस्ट्रियल एरिया के तौर पर विकसित किया जाएगा। आगे जरूरत के अनुसार इस क्षेत्र को और प्रसारित भी किया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि मास्टर प्लान के अनुरूप पहले फेज में 7,99,899 स्क्वायर मीटर व दूसरे फेज में 3,28,572 स्क्वायर मीटर क्षेत्र को इंडस्ट्रियल प्लॉटेड एरिया के तौर पर विकसित किया जाएगा। वेयरहाउस एरिया के तौर पर 40,118 स्क्वायर मीटर, कमर्शियल एरिया के तौर पर 26,579 स्क्वेयर मीटर तथा एमिनिटीज एरिया के तौर पर 1,22,467 स्क्वायर मीटर क्षेत्र का विकास होगा। यहां कुल दो फेज में 10.57 व 10.15 किलोमीटर सड़कों का निर्माण भी होगा। वहीं, पहले फेज में 92,312 तथा दूसरे फेज में 111335 स्क्वेयर मीटर क्षेत्र को लैंडस्केप एरिया के तौर पर विकसित किया जाएगा।

पेड़ रहेगा तो जीवन रहेगा, पौधों के संरक्षण पर दे विशेष बल: मण्डलायुक्त

● मण्डलायुक्त ने वृहद वृक्षारोपण अभियान की विभागावार समीक्षा कर दिये निर्देश ●वृक्षारोपण जन अभियान.2024 के अन्तर्गत जनपद में रोपे जायेंगे 61 लाख 90 हजार पौधे ●जनपदवासियों से वृक्षारोपण अभियान में सहभागिता करने हेतु अपील

कानपुर देहात। कानपुर मण्डल, मण्डलायुक्त/ नोडल अधिकारी वृक्षारोपण अमित गुप्ता की अध्यक्षता व जिलाधिकारी आलोक सिंह की उपस्थिति में दिनांक 20 जुलाई को जनपद में होने वाले वृहद वृक्षारोपण की तैयारी के संबंध में जिला वृक्षारोपण समिति के साथ समीक्षा बैठक मां मुक्तेश्वरी देवी सभागार कक्ष कलेक्ट्रेट में संपन्न हुई। मण्डलायुक्त महोदय ने कहा कि पेड़ रहेगा तो जीवन रहेगा। उन्होंने पौधों के संरक्षण पर विशेष बल देने के निर्देश दियें। उन्होंने फ्लदार वृक्षों के साथ ही उपयोगी वृक्षां का चयन किये जाने के निर्देश दिये। कंट्रोल रूम के माध्यम से सभी संबंधित विभागों द्वारा की जा रहीं वृक्षारोपण से सम्बन्धित कार्यवाही की निरंतर निगरानी की जायए उनके द्वारा अपलोड की जा रही फोटो आदि को देखा जाए। उन्होंने सभी संबंधित विभागों से प्राप्त लक्ष्य के सापेक्ष की गई तैयारियों तथा पौधों के संरक्षण के बारे में जानकारी लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। मण्डलायुक्त महोदय ने पौधों के संरक्षण पर विशेष बल देते हुए कहा कि हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम जितने भी वृक्ष लगाएए उनमें से अधिक से अधिक को बचा सके। उन्होंने सभी विभागों को लक्ष्य के सापेक्ष शत प्रतिशत वृक्षारोपण करनेए जियो टैगिंग करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जहां पर भी वृक्षारोपण कराया जाये वहां पर एक वृक्षारोपण रजिस्टर अवश्य रखा जाए, जिसमें लगाए गए पौधों की संख्या, उनके संरक्षणकर्ता का नामए नोडल अधिकारी आदि के बारे में जानकारी अंकित की जाए।

बैठक में प्रभागीय वनाधिकारी ने मण्डलायुक्त महोदय को बताया कि शासन द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार सभी संबंधित विभागों को आवंटित लक्ष्य के सापेक्ष पौधे उठान जारी कर दिए गए हैं, सभी विभागों द्वारा स्थल चयन, गड्ढा खुदान, पौधों की उठान तथा अन्य संबंधित तैयारियां समय सारणी के अनुसार संबंधित विभागों से समन्वय कर पूर्ण कर ली गई हैं। उन्होंने बताया कि सभी विभागों को प्रत्येक घंटे अर्थ एवं संख्याधिकारी को रिपोर्ट देने, हरीतिमा ऐप पर जियो टैगिंग करने, मेरी लाइफ पोर्टल पर फोटो अपलोड करने के निर्देश जिलाधिकारी द्वारा पूर्व से ही दिए जा चुके हैं।

उन्होंने बताया कि वृक्षारोपण हेतु ऐसे स्थान का चयन किया गया है जहां पर उन्हें संरक्षित रखा जा सकेए जैसा कि शासन के निर्देशानुसार नारा है पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ। नून नदी कैचमेंट एरिया में वृहद वृक्षारोपण कराया जाएगा। इस अभियान के अंतर्गत तीन वेटलैंडां का भी चयन किया गया है, बरिंगा वेटलैंड, मगही झीलए दुआरी तालाब। सभी विभागों को वृक्षारोपण के संबंध में बरती जाने वाली आवश्यक सावधानियां के बारे में वीडियो के माध्यम से बताया गया है। इस वृक्षारोपण महाअभियान में विभिन्न स्वयं सेवी संगठनों को भी जोड़ा गया है। जनपद में वृहद वृक्षारोपण अभियान के तहत लगभग 62 लाख पौधें लगायें जाये जायेंगे।

बैठक में पुलिस अधीक्षक बीबीजीटीएस मूर्ति, सीडीओ लक्ष्मी एन., अपर जिलाधिकारी प्रशासन अमित कुमार, अपर जिलाधिकारी न्यायिक अमित राठौर, डीएफओ एके द्विवेदी, सीएमओ डा. एके सिंह, सहायक निदेशक सूचना सुरजीत सिंह, पीडी वीरेन्द्र सिंह, डीसी एनआरएलएम गंगाराम वर्मा, डीएसटीओ प्रतिभा सिंह, डीसी मनरेगा सहित सम्बन्धित विभागों के अधिकारीगण आदि उपस्थित रहे।

मुख्य विकस अधिकारी ने परिषदीय विद्यालय राजापुर का किया निरीक्षण, परखी व्यवस्थाएं

लखीमपुर खीरी। पठन पाठन की गुणवत्ता, स्कूल की साफ सफाई, शिक्षकों व छात्र.छात्राओं की उपस्थिति, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता इत्यादि का जायज़ा लेने के उद्देश्य से सीडीओ अभिषेक कुमार ने शुक्रवार को ब्लाक लखीमपुर के तहत प्राथमिक विद्यालय राजापुर का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान सीडीओ ने विभिन्न पंजिकाओं का अवलोकन किया। शिक्षकों की उपस्थिति के सम्बंध में भी बच्चों से ही पूछताछ की। उन्होंने स्कूल में पढ़ रहे छात्र.छात्राओं को मन लगाकर पढ़ाई करने और अपने परिवार व जिले का नाम रोशन करने के लिए प्रेरित किया।

सीडीओ ने शिक्षण स्टाफ को निर्देश दिया कि बच्चों को गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करने के साथ.साथ सांस्कृतिक, खेल व उनके रूचि के अनुसार जागरूक भी करें। सीडीओ ने बच्चों से विभिन्न रंगोंए आकृतियों के बारे में पूछते हुए बच्चों को दी जा रही शिक्षा की गुणवत्ता की परख की। साथ ही पठन पाठन, साफ सफाई, मध्याह्न भोजन आदि की जांच की। निरीक्षण के दौरान सीडीओ ने छात्र.छात्राओं से रूबरू होते हुए उन्हें मन लगा कर पढ़ने, गुरूजनों व माता.पिता का आदर करने, स्वच्छता अपनाने की नसीहत दी।

डंपर व ट्रक की सीधे भिंडंत में दोनों के चालक जिंदा जले मौत, दो घायल

संवाददाता। हमीरपुर

धूधू कर जलते ट्रक व डंपर

कल देर रात हमीरपुर कोतवाली क्षेत्र के राठ मोड़ के पास डंपर व ट्रक की आमने सामने भिड़ंत में दोनो ट्रको के चालक जिंदा जलकर मर गये। दोनो वाहन जलकर राख हो गये है। कई घंटे जाम लगा रहा। पुलिस के मुताबिक डंपर कानपुर से कबरई गिट्टी भरने जा रहा था तभी कबरई से गिट्टी भरकर कानपुर जा रहे ट्रक की सीधे भिंडंत राठ मोड़ पर हो गयी जिससे दोनो ट्रको में आग लग गयी और चालक दोनो ही फंस गये पुलिस को जानकारी होते ही मौके पर जाकर चालक को निकाला मगर तब तक उसकी मृत्यु हो चुकी थी पुलिस ने दोनो की शिनाख्त योगेंद्र भदौरिया(38) निवासी दहेली थाना विधनू कानपुर नगर व दूसरे चालक की शिनाख्त नीरज गुप्ता(40) ग्राम इटर्रा थाना घाटमपुर जिला कानुपर नगर के रुप में की है। दो लोग शिवबरदानी ग्राम इटर्रा थाना घाटमपुर जिला कानपुर नगर व एक अनूय लोग घायल हो गये दोनो को हमीरपुर जिला अस्पताल से कानपुर रिफ्र कर दिया गया है। दमकल मौके पर जाकर आग पर काबू पाया,दोनो शवों को पोस्मार्मटम के लिये भेज दिया है।

भाकियू नेता ने कानूनगो पर रिश्वत का आरोप लगाया

● बोले जिलाध्यक्ष राजस्व कर्मियों के विरुद्ध जल्द होगा धरना प्रदर्शन

किसानों की समस्याओं को लेकर रणनीति बनाते जिलाध्यक्ष शमीम सिद्दीकी।

गुरसहायगंज (कन्नौज)। हजारों रुपए की सुविधा शुल्क लेने के उपरांत भी राजस्व निरीक्षक द्वारा भाकियू नेता को दो साल से पैमाइश के लिए दौडाया जा रहा है। किसान नेता ने मामले की शिकायत उच्चाधिकारियों से करने की चेतावनी दी है। जिलाध्यक्ष शमीम सिद्दीकी ने मामले को लेकर कहा कि लेखपाल एवं कानूनगो बेलगाम हो गए हैं। सबक सिखाने के लिए जल्दी ही जिला मुख्यालय पर अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन किया जाएगा।

बिलंदपुर निवासी अनबार खान पुत्र यासीन खान एवं साकिर खान पुत्र हनीफखान द्वारा जिलाधिकारी को भेजे गए प्रार्थना पत्र में कहा गया है कि मौजा असौलिया में उसकी लगभग 16 बीघा जमीन है। उनके पड़ोसी द्वारा उसकी जमीन का कुछ हिस्सा अवैध रूप से जोता जा रहा है। जमीन की पेमाइस के लिए तहसील दिवस में सितंबर 2022 में प्रार्थना पत्र दिया गया था। एसडीएम के निर्देश पर संबंधित कानूनगो उसके पास पहुंचे और पैमाइश करवाने एवं कब्जा दिलवाने के लिए कानून गो द्वारा उससे पचास हजार की मांग की गई। अनवर आदि ने बताया कि उसने अपनी पत्नी के जेवर गिरवी रखकर 42000 बतौर सुविधा शुल्क 03 अक्टूबर 2022 को कानून को छिबरामऊ को कार्यालय के निकट साकिर खान के सामने दिए। उसकी जमीन की पैमाइश की गई निशान लगाए गए। पैमाइश सही की गई लेकिन राजस्व कर्मी द्वारा दूसरे पक्ष से भी सुविधा शुल्क लेकर रिपोर्ट अनवर आदि के खिलाफ लगा दी गई तभी से लेकर अभी तक जमीन की पैमाइश के लिए उसके द्वारा डीएम सहित तमाम अधिकारियों को प्रार्थना पत्र दिए गए लेकिन सुनवाई नहीं हुई। उसने एसडीएम के आदेश के बावजूद भी स्थानीय लेखपाल पर कार्य में हीला हवाली करने का आरोप लगाया है। किसान नेता द्वारा जिलाध्यक्ष से मामले की शिकायत की गई। जिस पर जिलाध्यक्ष शमीम सिद्दीकी ने कहा कि उप जिलाधिकारी के कई आदेशों को लेखपाल एवं राजस्व निरीक्षक विपक्षी गणों से अधिकतर मामलों में मोटी रकम लेकर टालते चले आ रहे हैं।

ट्रैक्टर से टकराकर बाइक सवार वृद्धा की मौत, भाई बहन घायल

सुमेरपुर। सुमेरपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम मुंडेरा के पास एक तेज रफ्तार बाइक ट्रैक्टर के पीछे में जा घुसी। तो बाइक में सवार चालक, उसकी बहन घायल हो गई। जबकि उसकी नानी की मौके पर ही मौत हो गई। सिसोलर थानाक्षेत्र के बैजेमऊ गांव निवासी सत्येंद्र कुमार 28 वर्ष अपनी बहन बन्दों 25 वर्ष व नानी मुन्नी देवी 65 वर्ष के साथ बाइक से थानाक्षेत्र के मौहर गांव में शादी समारोह में शामिल होने आया था। शुक्रवार को शाम करीब 4 बजे यह तीनों बाइक से लौटकर बैजेमऊ जा रहे थे। तभी मुंडेरा मिहुना के मध्य सत्येंद्र की तेज रफ्तार बाइक ट्रैक्टर ट्राली में पीछे से जा घुसी। इस घटना में सत्येंद्र एवं उसकी बहन बंदों को मामूली चोटें लगी हैं। नानी मुन्नी देवी को गंभीर चोट लगने से उसकी मौके पर ही मौत हो गई। राहगीरों की सूचना पर एंबुलेंस चालक विपिन कुमार, ईएमटी अभिषेक कुमार मौके पर पहुंचे और तीनों को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र लाएं।

क्विक न्यूज

महिला से अश्लील हरकतें व मारपीट कर दी धमकी

गुरसहायगंज (कन्नौज)। किसी विवाद को लेकर महिला के साथ उसकी मां सहित गांव के चार लोगों ने घर में घुसकर अश्लील हरकतें कीं। महिला व उसके पति द्वारा विरोध करने पर उक्तगणों ने मारपीट कर धमकी दी। पीड़िता ने तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। क्षेत्र के ग्राम निवासी पीड़िता द्वारा कोतवाली में दर्ज कराए गए मुकदमे में कहा गया है कि विगत 07 जुलाई की शाम 05 बजे वह अपने घर में थी। तभी गांव के ही वकील, मेहताब, अख्तर, उसकी मॉ रहमुन निंशा आए और घर में घुसकर उसके साथ अश्लील हरकतें करते हुए गाली गलौज की। उसके एवं उसके पति द्वारा विरोध करने पर उक्तगणों ने लात घूसों से मारपीट कर घायल कर दिया तथा जान से मारने की धमकी दी। मुकदमा दर्ज कर जॉच शुरू कर दी गई है।

जहरीला पदार्थ खाकर युवक ने की आत्महत्या

सुमेरपुर। थाना सुमेरपुर क्षेत्र के ग्राम बिदोखर मेदनी में शुक्रवार को एक युवक ने जहरीला पदार्थ खा लिया गंभीर अवस्था में उसे सदर अस्पताल ले जाया गया जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। थाना सुमेरपुर क्षेत्रान्तर्गत ग्राम विदोखर मेदनी के सलमान 30 वर्ष पुत्र सुभानी शुक्रवार की सुबह घर से यह कहकर निकला कि वह इलाज कराने जा रहा हैए तभी रास्ते में अज्ञात कारणों के चलते उसने जहरीला पदार्थ खा लिया उसके पिता द्वारा गम्भीर अवस्था में जिला चिकित्सालय हमीरपुर लाया गया । इलाज के दौरान करीब डेढ़ बजे चिकित्सक द्वारा उसे मृत घोषित कर दिया गया। मृतक के शव को जिला मर्चरी हाउस हमीरपुर में रखवाया गया, थाना सुमेरपुर की पुलिस द्वारा शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराया गया है।

ट्रक की टक्कर से ई-रिक्शा सवार युवक की मौत

फतेहपुर। थरियांव थाना क्षेत्र के अंतर्गत खैराबाद गांव के समीप एनएच-2 में गुरूवार की देर शाम ट्रक की टक्कर लगने से ई-रिक्शा में सवार 48 वर्षीय युवक की मौत हो गई। दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे उपचार के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। हुसैनगंज थाना क्षेत्र के सरांय डडीरा गांव निवासी स्व. नंद कुमार का पुत्र शिवबली व छत्रपाल का 35 वर्षीय पुत्र विमलेश कुमार गुजरात जाने के लिए घर से निकले थे। बस न मिलने के कारण दोनों ई-रिक्शा में सवार होकर रिश्तेदारी में जा रहे थे। जैसे ही ई-रिक्शा खैराबाद मोड़ के समीप एनएच-2 पर पहुंचा तभी तेज रफ्तार ट्रक ने ई-रिक्शा में टक्कर मार दिया जिससे शिवबली की मौके पर मौत हो गई। वहीं विमलेश घायल हो गया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विच्छेदन गृह भेज दिया।

कुएं में गिरकर मासूम की मौत

फतेहपुर। थरियांव थाना क्षेत्र के ग्राम शिवपुर मजरे रामपुर में शुक्रवार की सुबह कुएं में गिरकर पांच वर्षीय मासूम की मौत हो गई। पुलिस ने शव को विच्छेदन हेतु भेजा है। जानकारी के अनुसार शिवपुर मजरे रामपुर गांव निवासी कोमल सिंह लोधी का पुत्र सतीश लोधी आज सुबह लगभग नौ बजे अपने हमजोली बच्चों के साथ खेलते-खेलते गांव से पांच सौ मीटर दूर पहुंच गया। वही आस-पास के खेतों में परिवार सहित अन्य लोग काम कर रहे थे। मासूम कुएं में गिर गया। कड़ी मशक्कत के बाद मासूम को बाहर निकाला और तत्काल उपचार के लिए अस्पताल लाए जहां इमरजेंसी में तैनात चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। शव को विच्छेदन गृह भेज दिया।

तखत से गिरकर युवक ने तोड़ा दम

फतेहपुर। थरियांव थाना क्षेत्र के ग्राम शिवपुर में गुरूवार की देर शाम तखत से गिरकर 34 वर्षीय युवक घायल हो गया था। जिसकी कुछ देर बाद ही मौके पर मौत हो गई। शिवपुर गांव निवासी स्व. शिवपरसन लोधी का पुत्र जगजीत लोधी गुरूवार की देर शाम खाना खाने के बाद तखत पर लेटा था तभी अचानक मुंह के बल नीचे गिर पड़ा जिससे उसकी नाक में गंभीर चोट आ गई। कुछ देर बाद ही उसकी मौके पर मौत हो गई। पुलिस ने शव को विच्छेदन गृह भेज दिया।

आकाशीय बिजली से चरवाहे की मौत

असोथर (फतेहपुर)। थाना क्षेत्र के गांव अब्बी का डेरा मजरे राम नगर कौहन निवासी 20 वर्षीय रामू पुत्र संतोष की आज दोपहर क्षेत्र के डा. चंद्रहास सिंह का डेरा के पास भैंस चराते समय अचानक गिरी आकाशीय बिजली की चपेट में आकर दर्दनाक मौत हो गई।

बीसीपी डिग्री कॉलेज में हुआ स्मार्ट फोन/टैबलेट वितरण

फतेहपुर। बाबू चंद्रिका प्रसाद महाविद्याल हुसैनगंज में स्वामी विवेकानन्द युवा शक्तिकरण स्मार्ट फ़ोन/टैबलेट वितरण योजना के अन्तर्गत 76 छात्र छात्राओं को स्मार्ट फ़ोन वितरित किए गए। महाविद्यालय के प्रबन्धक बृजेश कुमार शुक्ल, प्राचार्य एवं समस्त स्टाफ उपस्थित रहा। महाविद्यालय परिसर में सरस्वती पूजन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।

नवॉगुतक एसएचओ ने कहा ठेलिया दुकानदार फुटपाथ को छोड़कर लगाये दुकान

कानपुर देहात। एसपी बीबीजीटी एस मूर्ति द्वारा गुरूवार की रात्रि जनपद की कानून व्यवस्था को चुस्त दुरूस्त करने के लिये जारी की गयी तबादला एक्सप्रेस का परिणाम देखने को मिल गया, जनपद के सॅवेदनशील थाने रूरा का पदभार ग्रहण करते हुये प्रभारी निरीक्षक रामगोविन्द मिश्रा के नेतृत्व में पुलिस बल ने पैदल मार्च करते हुये सडक पर अतिक्रमण किये ठेलिया दुकानदारों को चेतावनी देते हुये अपनी दुकानों को फुटपाथ से हटकर नालों के दूसरी तरफ लगाने का आदेश दिया। अर्से बाद सडकों पर पुलिस का इकबाल देखकर अराजकतत्वों व अतिक्रमणकारियों में हडकम्प मच गया। एसपी ने जनपद के महत्वपूर्ण थानों के प्रभार में व्यापक स्तर पर फेरबदल किया था। रामगोविन्द मिश्रा को रूरा थाने का प्रभारी बनाया गया था, गजनेर थाने का प्रभारी निरीक्षक प्रवीण कुमार यादव को, मुकेश कुमार सोलॅकी को रनियॉ थाने का पदभार दिया गया।

आज रोपे जाएंगे 48 लाख से अधिक पौधे

● पिछले वर्षों में रोपण के बाद नहीं बचे थे अधिकांश पौधे ●इस दफा पौधों की देखरेख को बनाना होगा जिम्मेदार

फतेहपुर। जिले में पौधरोपण कर धरती के श्रृंगार का क्रम शुरू हो गया है। आज यानी 20 जुलाई को वन महोत्सव मनाया जाएगा। जिसके तहत जिले में 48.53 लाख से अधिक पौधों को रोपने की योजना है। अब सवाल यह है कि पौधरोपण के लिए इनकी देखरेख व सुरक्षा का जिम्मा कौन लेगा। पिछले वर्षों से सबक मिला है कि धरती की गोद में जगह पाने वाले अधिकतर पौधे अपना पहला जन्मदिन भी नहीं मना पाते। बीते सालों में पौधरोपण करने वाले विभाग अपने पौधों के अच्छे माली नहीं बन सके।

बीते वर्षों में जुलाई व अगस्त माह में रोपे गए लाखों पौधों में से बड़ी संख्या में पौधे अकाल मौत का शिकार हो गए। पौधों के सरंक्षण के प्रति गंभीरता नहीं दिखाई गई। डीएम हर बार पौधरोपण करने वाले सभी विभागों को पौधों की देखभाल का निर्देश देते हैं लेकिन धरातल पर यह नहीं दिखता है। जिसके चलते बड़ी संख्या में पौधे अपना पहला जन्मदिन नहीं मना पाते।

26 विभागों को दिया गया है लक्ष्य: इस वर्ष भी वन विभाग द्वारा 25 नर्सरियों में करीब 64 प्रजाति के 74.76 लाख पौधे तैयार किया गया है। वन महोत्सव में 26 विभागों को दिए गए लक्ष्य के मुताबिक पौधरोपण किया जाना है। इसके शुक्रवार को पूरे जिले में पौध वन विभाग से लोग ले जाते नजर आए। विभाग ही बनते हैं पौधों के माली: वृक्षारोपण अभियान के दौरान विभिन्न विभागों को दिया जाने वाला लक्ष्य तो पूरा कर दिया जाता है लेकिन पौधों को सुरक्षित बचाने का टारगेट न मिलने से जिम्मेदार बेपरवाह हो जाते हैं। चिंतकों का मानना है कि विभागों के माली बनने के बावजूद पौधों की अकाल मौत बड़ा सबक है।

कर्ज से परेशान मजदूर का पेड़ से लटकता मिला शव

सुमेरपुर। विकास खण्ड सुमेरपुर अंतर्गत कोतवाली हमीरपुर से जुड़े गांव बड़ागांव में कर्ज से परेशान एक मजदूर का शव पेड़ से लटकता हुआ मिला तो गांव में हड़कंप मच गयाए सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। सुरेश निषाद 55 वर्ष पुत्र रसपाल मूल रूप से बांदा जनपद के खपटिहा गांव का निवासी है 25 वर्ष पूर्व वह अपने गांव को छोड़कर अपनी ससुराल बड़ा गांव में रहने लगा था और मेहनत मजदूरी करके परिवार का पालन पोषण कर रहा थाए बताया जाता है कि एक पुत्र के बाद लड़की की शादी की थी तो उसके ऊपर ढाई तीन लाख का कर्ज हो गया थाए जिसको अदा न कर पाने से वह परेशान रहता था, 19 जुलाई की रात को गांव के बाहर एक नीम के पेड़ में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली सुबह लोगो ने देखा तो हड़कंप मच गया, नीम के पेड़ में फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर लेने की सूचना पर पुलिस के द्वारा मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर पंचायतनामा भरकर पोस्टमार्टम हेतु भेजा गया है।

कृषक पुरानी पद्धति को अपनाते हुए मोटे अनाज पैदा करें: डीएम

संवाददाता। फर्रुखाबाद

फतेहगढ़ स्थित विकास भवन में किसान दिवस का आयोजन जिला अधिकारी डॉक्टर बी के सिंह के अध्यक्षता में संपन्न हुआ जिसमें आए किसान एवं किसान नेताओं ने नहर बिजली बैंक खाद एवं बालू खनन मिट्टी खनन आदि अपनी-अपनी समस्याएं रखकर निस्तारण कराए जाने की मांग की जिस पर जिला अधिकारी मुख्य विकास अधिकारी ने संबंधित अधिकारियों गुणवत्ता पूर्ण रूप से निस्तारणकरने के निर्देश दिए।

जिलाधिकारी ने कहा है कि हमारे बुजुर्ग लोग मोटा अनाज खाकर स्वस्थ रहते थे इस पद्धति को अपनाते हुए आप लोग मोटा अनाज पैदा कर जहां लोगों को स्वस्थ बनाने का काम करें वही अपनी आमदनी भी दोगुनी करें क्योंकि मोटा अनाज काफी महंगे दामों पर बड़े-बड़े शहरों में बिक रहा है, वही किसी वैज्ञानिकों ने खाद बीज की मात्रा बताकर अधिक से अधिक जैविक खा। प्रयोग करने का आवाहन किया। इस मौके पर मुख्य विकास अधिकारी, अरविंद कुमार मिश्रा, नगर मजिस्ट्रेट संजय बंसल, उप कृषि निदेशक थान सिंह गौतम, जिला उ ान आलू विकास अधिकारी राघवेंद्र सिंह, डा आदेश आदि संबंधित विभागों के अधिकारी एवं किसान यूनियन के पदाधिकारी विभाग कृषक मौजूद रहे।

सीपी इंटरनेशनल स्कूल में पुलिस विभाग ने छात्राओं को दिया सुरक्षा संबंधी ज्ञान

फर्रुखाबाद। सीपी इंटरनेशनल स्कूल में मिशन शक्ति के तहत पुलिस विभाग ने छात्राओं को सुरक्षा से संबंधित ज्ञानार्जन कराया। महिला पुलिस अधिकारी ने छात्राओं को संबोधित करते हुए बताया कि वह किसी भी अनजान व्यक्ति पर विश्वास न करें, हर किसी को अपना नंबर नहीं दें, जब तक प्रोफाइल की सही जानकारी न हो तब तक किसी को फेसबुक पर रिक्वेस्ट न भेजें तथा कम उम्र के बच्चे अपनी अधिक आयु दर्शाकर फेसबुक अथवा इंस्टाग्राम पर आईडी न बनाएं , अनजान व्यक्ति का कोई कॉल रिसीव न करें, यदि किसी अनजान व्यक्ति का काल या वीडियो कॉल आता है तो फोन काट दें यदि धोखे से वीडियो कॉल रिसीव हो जाती है तो कैमरे पर तत्काल उंगली लगा दे जिससे आपकी फोटो उसके पास न पहुंचे और वह आपकी फोटो या वीडियो का दुरुपयोग न कर सके। इसके अलावा यदि कोई किसी भी प्रकार की धमकी देता है या किसी प्रकार का लालच देता है तो घर में अपने माता-पिता को अथवा स्कूल आने पर शिक्षकों को अवश्य बताएं।

नारी सुरक्षा, नारी सम्मान, नारी स्वाभिमान के प्रति सरकार कृत संकल्पित है लेकिन छात्राओं को भी जागरूक रहना उनका कर्तव्य तथा उनकी पढ़ाई का हिस्सा है। यदि कोई आपातकालीन समस्या आ जाती है तो महिलाओं, बालिकाओं को चाहिए कि वह वीमेन पावर लाइन 1090, महिला हेल्पलाइन 181, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076, पुलिस आपातकालीन सेवा 112, चाइल्ड हेल्पलाइन 1098, स्वास्थ्य सेवा 102, एंबुलेंस सेवा 108 आदि टोल फ्री नंबरों से सहायता प्राप्त करें । तथा उपरोक्त नंबरों को हमेशा ही अपने पास डायरी में लिखकर रखें। ये हेल्पलाइन आकस्मिक स्थिति से लेकर कानूनी मदद करने में मददगार हैं। साइबर सुरक्षा से लेकर महिलाओं और लड़कियों पर आने वाली समस्त आकस्मिक घटनाओं पर चर्चा की तथा उनका निदान बताया।

पलिया के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र पहुंचे डीएम, एसपी भ्रमण कर लिया बाढ़ की स्थिति का जायजा

संवाददाता। लखीमपुर खीरी

शुक्रवार सुबह सूचना मिली कि शारदा का जलस्तर इतना बढ़ गया कि भीरा.पलिया मार्ग पर भी पानी चल रहा है। इसी मार्ग से रास्ता तय करते हुए डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल, एसपी गणेश प्रसाद साहा पलिया तहसील के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का भ्रमण कर बाढ़ की स्थिति का जायजा लिया। सर्वप्रथम डीएम एसपी पलिया के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र श्रीनगर पहुंचेए आम जनता से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं जानी। नदी की वजह से क्षतिग्रस्त रेलवे ट्रैक का मौका मुआयना किया। एसडीएम कार्तिकेय सिंह को बाढ़ की स्थिति पर नजर बनाए रखने के निर्देश दिए। डीएम.एसपी ने एनएचएआई के सड़क मार्ग पर अतरिया में जल निकासी दूसरी तरफ किए जाने के उद्देश्य से ह्यूम पाइप डालने वाले कार्य का निरीक्षण कियाए संबंधित को जरूरी दिशा निर्देश दिए।

डीएम.एसपी ने तहसीलए ब्लाक पलिया के बाढ़ प्रभावित गांव बसंतापुरकला, मकनपुर का भ्रमण कर पीड़ितों का दर्द जाना। उन्होंने बाढ़ की स्थिति की बारीकी से जानकारी हासिल की। मौजूद किसानों, ग्रामीणों से वार्ता कर भोजन पैकेट, खाद्यान्न किट वितरण कर अद्यतन स्थिति जानी। डीएम ने आपदा से प्रभावित लोगों से कहा कि संकट की इस घड़ी में पूरा शासन.प्रशासन उनके साथ है। सरकार की ओर से हरसंभव सहायता प्रदान की जाएगी।

डीएम ने निरीक्षण में पाया कि गन्ने की फसल काफी खराब हो गई। एसडीएम को निर्देश दिए कि जल्द ही सर्वे कार्य पूर्ण किया जाए। हालांकि एसडीएम ने ज्यादातर प्रभावितो का सर्वे करा दिया गया है। अवशेष प्रभावितो का सर्वे 02 दिन में पूर्ण करने के निर्देश दिए। एसपी ने ग्रामीणों से संवाद किया। जाना कि उन्हें किसी बात का भय तो नहीं है।

बुखार से पीड़ित शालिनी के घर डीएम ने भेजी डॉक्टरों की टीम कराया उपचार

डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल के निरीक्षण के दौरान ग्राम बसंतापुरकला में मेडिकल टीम द्वारा ग्रामीणों का चेकअप कर जरूरी औषधीय प्रदान करती मिली। डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने एसपी गणेश प्रसाद साहा संग बाढ़ प्रभावित द्रौपदी पत्नी दुजई के घर जा पहुंचीए जहां उन्होंने परिवार से उनकी कुशलता जानी। उनकी निगाह अचानक बिस्तर पर लेटी उनकी पुत्री शालिनी पर पड़ी। डीएम के पूछने पर द्रौपदी ने बताया कि शालिनी बुखार से पीड़ित है। डीएम ने फॉरेन मेडिकल टीम भेजकर उपचार भी करवाया।

डीएम एसपी ने पलिया निघासन मार्ग पर पीडब्ल्यूडी का काम दिए निर्देश

डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने एसपी गणेश प्रसाद साहा संग पलिया.निघासन मार्ग पर लोक निर्माण विभाग निर्माण खंड.3 द्वारा 06.06 मीटर के चार स्पान बॉक्स कल्वर्ट के युद्धस्तर पर चल रहे निर्माण कार्य को देखा। डीएम ने मौके पर मौजूद अधिशासी अभियंता अनिल कुमार यादव को निर्देश दिया कि मैनपॉवर दोगुनी करते हुए इस माह के अंततक कार्य पूर्ण किया जाए। ताकि भविष्य में जलस्तर बढ़ने पर पलिया की लाइफलाइन कहे जाने वाला यह मार्ग अवरुद्ध न हो। इस दौरान एसडीएम कार्तिकेय सिंह, सीओ यादवेंद्र, सहायक अभियंता करिश्मा रावत, अवर अभियंता मान सिंह, प्रदीप कुमार भारती मौजूद रहे।

बड़ी संख्या में चेक बाउंस मामलों का लंबित रहना गंभीर चिंता का विषय: उच्चतम न्यायालय

नई दिल्ली। बड़ी संख्या में चेक बाउंस के मामलों के लंबित होने पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए उच्चतम न्यायालय ने कहा है कि यदि पक्ष समझौता करने के इच्छुक हैं तो अदालतों को परक्राम्य लिखत अधिनियम के तहत समझौता योग्य अपराधों के निपटान को प्रोत्साहित करना चाहिए। न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया और न्यायमूर्ति अहसानुद्दीन अमानुल्लाह की पीठ ने चेक बाउंस मामले में पी कुमारसामी नाम के एक व्यक्ति की सजा को यह देखते हुए रद्द कर दिया कि दोनों पक्षों ने समझौता कर लिया है और शिकायतकर्ता को 5.25 लाख रुपए का भुगतान किया गया है।

पीठ ने 11 जुलाई के अपने आदेश में कहा, चेक बाउंस होने से जुड़े मामले बड़ी संख्या में अदालतों में लंबित हैं जो हमारी न्यायिक प्रणाली के लिए एक गंभीर चिंता का विषय है। यह ध्यान में रखते हुए कि उपाय के प्रतिपूरक पहलू को दंडात्मक पहलू पर प्राथमिकता दी जाएगी, अदालतों को परक्राम्य लिखत अधिनियम के तहत अपराधों के शमन को प्रोत्साहित करना चाहिए, यदि पक्ष ऐसा करने के इच्छुक हैं। परक्राम्य लिखत अधिनियम सभी परक्राम्य लिखतों जैसे वचन पत्र, विनिमय पत्रों और चेक संबंधी मामलों के निपटान से संबंधित है।

समझौता योग्य अपराध वे होते हैं जिनमें प्रतिद्वंद्वी पक्षों द्वारा समझौता किया जा सकता है। पीठ ने कहा कि यह याद रखना होगा कि चेक का बाउंस होना एक नियामक अपराध है जिसे केवल सार्वजनिक हित को देखते हुए अपराध की श्रेणी में लाया गया है ताकि संबंधित नियमों की विश्वसनीयता सुनिश्चित की जा सके। इसने अपने आदेश में कहा, परिस्थितियों की समग्रता और पक्षों के बीच समझौते पर विचार करते हुए, हम इस अपील को स्वीकार करते हैं तथा एक अप्रैल 2019 के लागू आदेश के साथ-साथ निचली अदालत के 16 अक्टूबर 2012 के आदेश को रद्द करके अपीलकर्ताओं को बरी करते हैं। अपीलकर्ता नंबर 2 (पी) कुमारसामी), जिसे इस न्यायालय द्वारा आत्मसमर्पण करने से छूट दी गई थी, को आत्मसमर्पण करने की आवश्यकता नहीं है।

पीठ ने कहा कि 2006 में पी कुमारसामी उर्फ गणेश ने प्रतिवादी ए सुब्रमण्यम से 5,25,000 रुपए उधार लिए थे, लेकिन ऋण नहीं चुकाया। इसने कहा कि कर्ज चुकाने के लिए कुमारसामी ने अपनी भागीदार फर्म मेसर्स न्यू विन एक्सपोर्ट के नाम पर 5.25 लाख रुपए का चेक दिया।

पीठ ने कहा, चूंकि अपर्याप्त धनराशि के कारण चेक बाउंस हो गया था, इसलिए प्रतिवादी ने अपीलकर्ताओं के खिलाफ धारा 138 परक्राम्य लिखत अधिनियम के तहत शिकायत दर्ज कराई। निचली अदालत ने 16 अक्टूबर 2012 के आदेश में अपीलकर्ताओं को दोषी ठहराया और प्रत्एक को एक वर्ष के साधारण कारावास की सजा सुनाई। इसने कहा कि कुमारसामी ने अपीलीय अदालत के समक्ष दोषसिद्धि को चुनौती दी, जिसने निचली अदलत के निष्कर्षों को पलट दिया।

केरल की अदालत ने संदिग्ध माओवादी को न्यायिक हिरासत में भेजा

कोच्चि। कोच्चि की एक अदालत ने एक दिन पहले गिरफ्तार किए गए संदिग्ध माओवादी को शुक्रवार को न्यायिक हिरासत में भेज दिया। आरोपी को कड़ी सुरक्षा के बीच अदालत लाया गया। उसकी सुरक्षा में कम से कम छह सशस्त्र पुलिसकर्मी मौजूद थे। मनोज ने अदालत परिसर में प्रवेश और बाहर निकलते वक्त माओवाद समर्थित नारे लगाए। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक, आरोपी को शनिवार को फिर से अदालत में पेश किया जाएगा, जहां पुलिस हिरासत संबंधी याचिका पर सुनवाई होगी। उसे आज (शुक्रवार) जिला कारागार में बंद किया गया है। केरल पुलिस के आतंकवाद-रोधी दस्ते ने मनोज को बृहस्पतिवार को दक्षिण रेलवे स्टेशन से गिरफ्तार किया था। मनोज, गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) के 12 मामलों सहित कम से कम 16 मामलों में आरोपी है।

अदालत ने आईएएस अधिकारी के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति के 32 साल पुराने मामले को बंद किया

भाषा। नई दिल्ली

दिल्ली की एक अदालत ने 32 साल की सुनवाई के बाद एक पूर्व आईएएस अधिकारी के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति (डीए) का मामला बंद कर दिया है। अदालत ने कहा कि आरोपी की उम्र लगभग 90 वर्ष है और उनकी मानसिक स्थिति अस्थिर है। विशेष न्यायाधीश (भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम) अनिल अंतिल ने नगालैंड सरकार के मुख्य सचिव रह चुके सुरेन्द्र सिंह अहलूवालिया के खिलाफ मामला बंद कर दिया और उन्हें मुकदमे का सामना करने के लिए अस्वस्थ घोषित कर दिया।

न्यायाधीश ने कहा, जब व्यवस्था विफल हो जाती है तो सत्य अन्याय की छाया में छिप जाता है। उन्होंने 12 जुलाई को पारित आदेश में कहा, यह इस मामले की पूरी कहानी और नियति है। न्यायाधीश ने कहा कि इस समय तक, मुख्य आरोपी अहलूवालिया, जो अब लगभग 90 वर्ष के हो चुके हैं, मानसिक रूप से अस्थिर और अस्वस्थ हो गए हैं और उन्हें मुकदमे का सामना करने के लिए अयोग्य घोषित कर दिया गया है (उनके खिलाफ मुकदमा पहले ही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित हो चुका है)।

उन्होंने कहा कि केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने 327 गवाहों का हवाला दिया था। न्यायाधीश ने कहा कि इनमें से 48 को होटल और अतिथि गृह जैसे अस्थाई पतों पर रहते हुए दिखाया गया था और एजेंसी को अच्छी तरह पता था कि वे कभी गवाही के लिए उपलब्ध नहीं होंगे। न्यायाधीश ने कहा, शेष 200 गवाहों की या तो मृत्यु हो चुकी थी या वे अपना पता छोड़ चुके थे या अपनी बीमारियों के कारण अदालत में उपस्थित होने और गवाही देने में असमर्थ थे। अत: अंत में, वर्ष 1992 में, जब आरोप पत्र दायर किया गया था, शुरू हुए मुकदमे की इस अत्यधिक लंबी अवधि के दौरान, अर्थात लगभग 32 वर्षों के दौरान, केवल 87 गवाहों की ही जांच की गई।

सीबीआई के अनुसार, नगालैंड और नई दिल्ली में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए, अहलूवालिया ने अपनी आय के ज्ञात स्रोतों से अधिक संपत्ति अर्जित की। सीबीआई ने आरोप लगाया था कि उन्होंने 28 मार्च, 1987 तक अपनी आय के ज्ञात स्रोतों से अधिक लगभग 68 लाख रुपए की संपत्ति अर्जित की थी। न्यायाधीश ने अहलूवालिया के छोटे भाई इंद्रजीत सिंह को भी बरी करते हुए कहा कि अभियोजन पक्ष उनके खिलाफ मामला साबित करने में बुरी तरह विफल रहा।

न्याय पूर्वाग्रह नहीं जानता, कमजोर भी ताकतवर पर हावी हो सकता है

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने एक भूमि विवाद पर सुनवाई करते हुए शुक्रवार को कहा कि न्याय कोई पूर्वाग्रह नहीं जानता और इसकी मदद से कमजोर भी ताकतवर पर हावी हो सकता है। शीर्ष अदालत ने कहा, हमारे समाज की शक्ति संरचना ऐसी है कि जो लोग कमजोर हैं वे अकसर उन लोगों द्वारा खुद को शोषित और उत्पीड़ित पाते हैं जिनके पास अधिक शक्ति है। न्यायमूर्ति विक्रमनाथ और न्यायमूर्ति अहसानुद्दीन अमानुल्लाह की पीठ ने कहा, भूमि स्वामित्व एक ऐसा क्षेत्र है जहां हम शक्ति प्रदर्शन की तलवारों को निरंतर धोखाधड़ी, छल और लालच के साथ तेज होते देखते हैं। शीर्ष अदालत की ए टिप्पणियां महाराष्ट्र के ठाणे जिले में जमीन के एक टुकड़े से जुड़े मामले में आईं। इसने कहा, न्याय कोई पूर्वाग्रह नहीं जानता और इस प्रकार, इसकी सहायता से कमजोर भी मजबूत पर हावी हो सकता है। शीर्ष अदालत ने कहा, हालांकि हम वर्तमान मामले के तथ्यों पर बाद में विस्तार से विचार करेंगे, यह उन विक्रेताओं के गलत इरादों के कारण आम आदमी द्वारा झेली जा रही निरंतर पीड़ा का एक बड़ा उदाहरण है जो या तो दबाव बनाकर या कानूनी प्रक्रियाओं में हेरफेर के माध्यम से दोहरा लाभ प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। इसने कहा कि कभी-कभी वादी का दुख तब और गहरा हो जाता है जब न्याय का ऐसा उपहास दशकों तक चलता है और ऐसे मामलों में कानून कमजोरों की सहायता के लिए आता है।

यमुना के डूब क्षेत्र में धार्मिक या किसी अन्य अनाधिकृत संरचना की अनुमति नहीं: अदालत

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने कहा है कि यमुना नदी के डूब क्षेत्र (पर्यावरण के लिहाज से संवेदनशील क्षेत्र) को अतिक्रमण से पूरी तत्परता के साथ संरक्षित करना पड़ेगा और इस क्षेत्र में धार्मिक या किसी अन्य संरचना को कायम रखने की अनुमति नहीं दी जा सकती तथा इसे आवश्यक रूप से हटाना ही पड़ेगा। कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश मनमोहन और न्यायमूर्ति तुषार राव गेडेला की खंडपीठ ने एकल न्यायाधीश के उस आदेश में हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया, जिसमें प्राचीन शिव मंदिर को ध्वस्त करने की अनुमति दी गई है। इस मंदिर को गीता कॉलोनी क्षेत्र में नदी के पास बनाया गया है। याचिकाकर्ता प्राचीन शिव मंदिर एवं अखाड़ा समिति के पास किसी तरह की वैधता दर्शाने के लिए किसी दस्तावेज का एक टुकड़ा तक नहीं है।

खंडपीठ ने 10 जुलाई के अपने आदेश में कहा, यह स्पष्ट है कि मंदिर का निर्माण पर्यावरण के लिहाज से संवेदनशील क्षेत्र में अतिक्रमित भूमि पर अनधिकृत रूप से किया गया है। यदि ऐसा है, तो किसी भी धार्मिक या अन्य संरचना के मौजूद होने की अनुमति नहीं दी जा सकती और उसे आवश्यक रूप से हटाया जाना चाहिए। यमुना नदी के डूब क्षेत्र को इस तरह के अतिक्रमण और अनधिकृत निर्माण से तत्परता पूर्वक संरक्षित किया जाना चाहिए। इस बात का संज्ञान लेते हुए कि मंदिर की पूरी संरचना को दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) द्वारा पहले ही ध्वस्त कर दिया गया था, अदालत ने कहा कि आगे के विचार के लिए कुछ भी नहीं बचा है।

अपीलकर्ता ने दावा किया कि इसकी स्थापना एक प्रतिष्ठित पुजारी द्वारा एक सोसाइटी के रूप में की गई थी, जो 101 शिवलिंगों की स्थापना के लिए प्रसिद्ध हैं और यह मंदिर भी उन्हीं का हिस्सा है। याचिकाकर्ता ने इस आधार पर मंदिर ध्वस्त करने के आदेश का विरोध किया कि उसे अधिकारियों से कोई औपचारिक नोटिस नहीं मिला और भूमि उत्तर प्रदेश राज्य की थी, न कि डीडीए की। अपीलकर्ता ने यह भी आरोप लगाया कि ध्वस्त करने की सिफारिश करने से पहले धार्मिक समिति द्वारा कोई अवसर नहीं दिया गया था।

अदालत ने आदेश में कहा कि अपीलकर्ता के पास उस स्थान पर अपना स्वामित्व दिखाने के लिए कोई दस्तावेज नहीं है, जहां मंदिर बनाया गया था। अदालत ने यह भी कहा कि हालांकि भूमि उत्तर प्रदेश की थी, लेकिन एमओयू के अनुसार आवश्यक भूमि से किसी भी प्रकार के अतिक्रमण को हटाने का काम डीडीए को सौंपा गया था। अदालत ने धार्मिक समिति द्वारा प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों के उल्लंघन के आरोप को भी खारिज कर दिया और कहा कि सार्वजनिक भूमि पर अनधिकृत निर्माण करने वाला कोई भी व्यक्ति इसकी शिकायत नहीं कर सकता। अदालत ने कहा था कि भगवान शिव को किसी संरक्षण की जरूरत नहीं है और यदि यमुना नदी का किनारा एवं डूब क्षेत्र सभी तरह के अतिक्रमण से मुक्त रहता है तो वह (भगवान शिव) ज्यादा प्रसन्न होंगे।

न्यायालय चंडीगढ़-मोहाली मार्ग से प्रदर्शनकारियों को हटाने के आदेश के खिलाफ सुनवाई को सहमत

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के उस आदेश को चुनौती देने संबंधी याचिका पर सुनवाई करने पर शुक्रवार को सहमति व्यक्त की, जिसमें अधिकारियों को चंडीगढ़-मोहाली मार्ग से प्रदर्शनकारियों को हटाने को कहा गया था। उच्चतम न्यायालय ने गत मई में एक अलग याचिका पर सुनवाई करते हुए उच्च न्यायालय के नौ अप्रैल के आदेश के क्रियान्वयन पर रोक लगा दी थी। न्यायमूर्ति बी. आर. गवई, न्यायमूर्ति के. वी. विश्वनाथन और न्यायमूर्ति एन. कोटिश्वर सिंह की पीठ ने शुक्रवार को एक गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) और अन्य से नई याचिका पर जवाब मांगा। इसने इस याचिका को इसी मुद्दे को उठाने वाली एक लंबित याचिका के साथ संलग्न कर दिया। उच्च न्यायालय ने नौ अप्रैल के अपने आदेश में कहा था कि बार-बार अवसर दिए जाने के बावजूद, न तो पंजाब सरकार और न ही चंडीगढ़ प्रशासन, एसएएस नगर मोहाली और चंडीगढ़ के यात्रियों की शिकायतों का समाधान किया।

न्यायालय ने मतदाता गोपनीयता उल्लंघन संबंधी याचिका पर आदेश की समीक्षा का आग्रह खारिज किया

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने अपने उस आदेश की समीक्षा का आग्रह खारिज कर दिया है, जिसमे मौजूदा चुनाव प्रणाली मे मतदाता गोपनीयता के उल्लंघन का आरोप लगाने वाली जनहित याचिका को खारिज कर दिया गया था। न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता की पीठ ने कहा कि आदेश की समीक्षा का कोई मामला नही बनता है। इसने समीक्षा याचिका की खुली अदालत मे सुनवाई के अनुरोध को भी खारिज कर दिया। पीठ ने कहा, हमने समीक्षा याचिका और उसके समर्थन के आधारों का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया है। हमारी राय में 17 मई 2024 के आदेश की समीक्षा का कोई मामला नही बनता है। तदनुसार, समीक्षा याचिका खारिज की जाती है। शीर्ष अदालत सिख चैंबर ऑफ कॉमर्स के प्रबंध निदेशक एग्नोस्टो थियोस की याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमे 17 मई के आदेश की समीक्षा का आग्रह किया गया था। थियोस ने अपनी जनहित याचिका में दावा किया था कि मतदान अधिकारी वीवीपैट पर्चियों और मतदान उपकरण मे संग्रहीत डेटा को देख सकता है, जिससे मतदाता गोपनीयता का उल्लंघन होता है। उन्होंने दावा किया था, वीवीपैट पर्चियों और ईवीएम के डेटा से (पीठासीन) अधिकारी यह पहचान सकता है कि किस मतदाता ने किस पार्टी को वोट दिया है। शीर्ष अदालत ने 26 अप्रैल को ईवीएम मे हेरफेर पर संदेह को निराधार करार देते हुए पुरानी मतपत्र प्रणाली बहाल किए जाने के आग्रह को खारिज कर दिया था। इसने माना था कि मतदान उपकरण सुरक्षित हैं और ए बूथ कैप्चरिंग तथा फर्जी मतदान को रोकते हैं।

1984 के दंगा मामले में दिल्ली की अदालत ने टाइटलर के खिलाफ आरोप तय करने पर फैसला सुरक्षित रखा

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने शुक्रवार को सिख विरोधी दंगों के एक मामले में कांग्रेस नेता जगदीश टाइटलर के खिलाफ आरोप तय करने के बारे में अपना आदेश सुरक्षित रख लिया। दंगे के इस मामले में तीन लोग मारे गए थे। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) मामलों के विशेष न्यायाधीश राकेश सियाल ने केंद्रीय जांच एजेंसी और बचाव पक्ष के वकीलों की दलीलें सुनने के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया। अदालत के दो अगस्त को फैसला सुनाने की संभावना है। सीबीआई ने एक गवाह के हवाले से आरोपपत्र में आरोप लगाया था कि टाइटलर एक नवंबर 1984 को गुरुद्वारा पुल बंगश के सामने एक सफेद एम्बेसडर कार से बाहर निकले और भीड़ को सिखों की हत्या करने के लिए उकसाया। पूर्व केन्द्रीय मंत्री टाइटलर पर आरोप है कि उन्होंने भीड़ से कहा था, सिखों को मार डालो, उन्होंने हमारी मां को मार डाला है। इस घटना के बाद तीन लोगों की हत्या कर दी गई थी। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की 31 अक्टूबर 1984 को उनके सिख अंगरक्षकों द्वारा हत्या किए जाने के बाद देश के कई हिस्सों में सिख विरोधी दंगे भड़क उठे थे। पिछले वर्ष अगस्त में एक सत्र अदालत ने इस मामले में टाइटलर को अग्रिम जमानत दे दी थी। अदालत ने टाइटलर पर कुछ शर्तें भी लगाई थीं, जिनमें यह शर्तें भी थी कि वह सबूतों के साथ छेड़छाड़ नही करेंगे और बिना अनुमति के देश नही छोड़ेंगे। केंद्रीय एजेंसी ने टाइटलर के खिलाफ भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 147 (दंगा), 109 (अपराध के लिए उकसाना) और 302 (हत्या) के तहत आरोप लगाए हैं।

दो उच्च न्यायालयों के दस अतिरिक्त न्यायाधीशों को स्थाई न्यायाधीश बनाया गया

नई दिल्ली। विभिन्न उच्च न्यायालयों के 10 अतिरिक्त न्यायाधीशों को शुक्रवार को पदोन्नत कर स्थाई न्यायाधीश नियुक्त किया गया। इनमें दिल्ली उच्च न्यायालय के तीन न्यायाधीश शामिल हैं। कानून मंत्रालय ने यह जानकारी दी। बंबई उच्च न्यायालय के सात अतिरिक्त न्यायाधीशों को स्थाई न्यायाधीश नियुक्त किया गया है। बंबई उच्च न्यायालय के ही दो अन्य अतिरिक्त न्यायाधीशों को पुन: एक साल के नए कार्यकाल के लिए अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त किया गया है। उनकी नई नियुक्ति एक अक्टूबर से प्रभावी होगी। दिल्ली उच्च न्यायालय के तीन अतिरिक्त न्यायाधीशों- न्यायमूर्ति गिरीश कठपालिया, न्यायमूर्ति मनोज जैन और न्यायमूर्ति धर्मेश शर्मा, को भी स्थाई न्यायाधीश नियुक्त किया गया है।

न्यायालय एलोपैथिक, आयुष चिकित्सकों के लिए समान सेवानिवृत्ति आयु पर करेगा विचार

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय शुक्रवार को उच्च न्यायालय के उस फैसले को चुनौती देने वाली राजस्थान सरकार की अपील पर विचार करने के लिए सहमत हो गया जिसमें कहा गया था कि एलोपैथिक चिकित्सकों और चिकित्सा की वैकल्पिक प्रणालियों से जुड़े चिकित्सकों की सेवानिवृत्ति की आयु अलग-अलग नहीं हो सकती। एलोपैथिक चिकित्सकों की कमी को ध्यान में रखते हुए राजस्थान सरकार ने 31 मार्च 2016 से उनकी सेवानिवृत्ति की आयु 60 से बढ़ाकर 62 वर्ष कर दी थी जिसके कारण सरकारी आयुष (आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी) के चिकित्सकों की ओर से याचिकाएं दायर की गईं। सरकार द्वारा नियोजित आयुष चिकित्सकों की सेवानिवृत्ति की आयु 60 वर्ष है। राजस्थान उच्च न्यायालय ने अपने फैसले में कहा कि राज्य के सभी सरकारी चिकित्सकों के लिए सेवानिवृत्ति की आयु समान होनी चाहिए।आयुष चिकित्सकों की शिकायतों पर विचार करते हुए उच्च न्यायालय ने कहा कि यदि वे 31 मार्च 2016 के बाद सेवानिवृत्त होते हैं तो उन्हें 62 वर्ष की आयु तक सेवा में माना जाएगा। प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला तथा न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने राजस्थान की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता की दलीलों पर संज्ञान लिया और 10 आयुष चिकित्सकों को नोटिस जारी किए।

आरटीई आरक्षण: अदालत ने निजी स्कूलों को छूट संबंधी महाराष्ट्र सरकार की अधिसूचना खारिज की

भाषा। मुंबई

बंबई उच्च न्यायालय ने महाराष्ट्र सरकार की ओर से नौ फरवरी को जारी उस अधिसूचना को शुक्रवार को रद्द कर दिया जिसमें सरकारी या सहायता प्राप्त स्कूलों के एक किलोमीटर के दायरे में आने वाले निजी स्कूलों को शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम के तहत आरक्षित दाखिले से छूट दी गई थी। मुख्य न्यायाधीश डी के उपाध्याय और न्यायमूर्ति अमित बोरकर की खंडपीठ ने कहा कि यह अधिसूचना संविधान के अनुच्छेद 21 और बच्चों को निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का

अधिकार अधिनियम (आरटीई) 2009 के प्रावधानों के विरुद्ध है। उच्च न्यायालय ने कहा, अधिसूचना निरस्त मानी जाए। अदालत ने अपने फैसले में कहा कि कानून के तहत ना केवल सरकार, बल्कि निजी गैर-सहायता प्राप्त स्कूलों का भी कर्तव्य है कि वे समाज के वंचित वर्ग के छह से 14 वर्ष तक के बच्चों को शिक्षा प्रदान करें। अनुच्छेद 21-ए के तहत मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का आदेश लगभग निरपेक्ष है। अदालत ने कहा कि आरटीई अधिनियम के प्रावधान यह कहते हैं कि निजी गैर सहायता प्राप्त स्कूल भी इस तरह के अनिवार्य कर्तव्य का हिस्सा होंगे। पीठ ने कहा कि यदि आरटीई अधिनियम का उद्देश्य पूरी तरह से हासिल नहीं किया गया, तो इसका परिणाम लोगों को संविधान के अनुच्छेद 21-ए के तहत उल्लिखित मौलिक अधिकार से वंचित करना होगा। हालांकि, पीठ ने कहा कि मई में अधिसूचना के क्रियान्वयन पर रोक लगाने से पहले कुछ निजी गैर-सहायता प्राप्त स्कूलों ने छात्रों को प्रवेश दिया था।

न्यायालय ने 2024 में नीट-एसएस आयोजित न करने के फैसले के खिलाफ याचिका पर केंद्र से जवाब मांगा

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने वर्ष 2024 में राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा-सुपर स्पेशियलिटी (नीट-एसएस) आयोजित नही करने के राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान आयोग (एनएमसी) के फैसले को चुनौती देने वाली याचिका पर शुक्रवार को केंद्र और अन्य से जवाब मांगा। नीट-एसएस उन चिकित्सकों के लिए आयोजित की जाती है, जिनके पास एमडी, एमएस और डीएनबी जैसी स्नातकोत्तर डिग्री या सुपर-स्पेशियलिटी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए समकक्ष योग्यता है। प्रधान न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ को 13 उम्मीदवारों की ओर से पेश एक वकील ने बताया कि एनएमसी ने इस साल परीक्षा आयोजित नही करने का फैसला किया है।

पेज 1 का शेष

वैश्विक स्तर...

का उपयोग कर रहे हैं। हमारे आकलन से पता चलता है कि केवल 10 बैंकों और एनबीएफसी में मामूली व्यवधान थे जिन्हें या तो हल कर लिया गया है या हल किया जा रहा है। कुल मिलाकर बयान में कहा गया है कि रिज़र्व बैंक के क्षेत्र में भारतीय वित्तीय क्षेत्र वैश्विक आउटेज से अछूता है।ऑटो प्रमुख मारुति सुजुकी इंडिया ने कहा कि यह माइक्रोसॉफ्ट सिस्टम के वैश्विक आउटेज से आंशिक रूप से प्रभावित हुआ और उत्पादन और प्रेषण परिचालन कुछ समय के लिए रुक गया। हालाँकि, कंपनी ने कहा कि वह परिचालन फिर से शुरू करने में सक्षम है। ऑस्टिन, टेक्सास स्थित कंपनी के नैस्डैक-ट्रेडेड शेयर शुक्रवार की शुरुआत में प्रीमार्केट ट्रेडिंग में लगभग 15 प्रतिशत नीचे थे।

न्यूजीलैंड के कार्यवाहक प्रधानमंत्री, डेविड सेमुर ने कहा कि देश में अधिकारी संभावित प्रभावों को समझने के लिए तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि उनके पास ऐसी कोई जानकारी नहीं है जो यह दर्शाती हो कि यह एक साइबर सुरक्षा खतरा है।अमेरिका में एफएए ने कहा कि यूनाइटेड, अमेरिकन, डेल्टा और एलीगेंट सभी एयरलाइंस को बंद कर दिया गया है। यूके में एयरलाइंस और रेलवे भी प्रभावित हुए, प्रतीक्षा समय सामान्य से अधिक बढ़ गया। जर्मनी में, बर्लिन-ब्रैंडेनबर्ग हवाई अड्डे ने यात्रियों की जाँच में कठिनाइयों के कारण कई घंटों तक उड़ानें रोक दीं, जबकि ज्यूरिख हवाई अड्डे पर लैंडिंग निलंबित कर दी गई और हंगरी, इटली और तुर्की में उड़ानें बाधित हो गईं। डच वाहक केएलएम ने कहा कि उसे अपने अधिकांश परिचालन को निलंबित करने के लिए मजबूर होना पड़ा है। एम्स्टर्डम के शिफोल हवाई अड्डे ने चेतावनी दी कि इस रुकावट का व्यस्त यूरोपीय केंद्र से आने-जाने वाली उड़ानों पर बड़ा प्रभाव पड़ रहा है। ऑस्ट्रेलियाई हवाई अड्डों पर व्यापक समस्याएं दर्ज की गईं, जहां लाइनें बढ़ गईं और कुछ यात्री फंसे हुए थे क्योंकि ऑनलाइन चेक-इन सेवाएं और स्वयं-सेवा बूथ अक्षम कर दिए गए थे - हालांकि उड़ानें अभी भी चल रही थीं। भारत, हांगकांग और थाईलैंड में, कई एयरलाइनों को यात्रियों की मैन्युअल जांच करने के लिए मजबूर होना पड़ा। केन्या में एक एयरलाइन भी व्यवधान की रिपोर्ट कर रही थी। जबकि दुनिया भर में बिजली कटौती का अनुभव किया जा रहा था, ऑस्ट्रेलिया इस मुद्दे से गंभीर रूप से प्रभावित दिखाई दिया।

देश में कई...

सेवाएं प्रभावित हुई हैं और वह यात्रियों की असुविधा को कम करने के लिए काम कर रहा है। मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर औसतन 51 मिनट की देरी हुई, दिल्ली के आईजीआई हवाई अड्डे पर इसकी सेवाओं में लगभग 40 मिनट की देरी हुई। बेंगलुरु में, टर्मिनल 1 से संचालित होने वाली 90 प्रतिशत उड़ानें प्रभावित हुई हैं और एयरलाइंस यात्रियों की जांच के लिए मैन्युअल तरीकों का उपयोग कर रही हैं। हैदराबाद हवाई अड्डे पर 160 से अधिक उड़ानें प्रभावित हुईं।चूंकि चेक-इन मैन्युअल रूप से किया जा रहा है, इसलिए धीमी प्रक्रियाओं को ध्यान में रखते हुए यात्रियों को लगभग तीन घंटे पहले (यहां तक ??कि घरेलू उड़ानों के लिए भी) हवाईअड्डों पर रिपोर्ट करने के लिए कहा गया था। जबकि अभी तक यहां कोई फ्लाइट कैंसिल नहीं हुई थी और चेक-इन मैन्युअल तरीके से होने के कारण फ्लाइट्स में देरी हो रही थी। डीजीसीए ने तकनीकी चुनौतियों को देखते हुए एयरलाइंस से यात्रियों को यथासंभव देरी के बारे में सूचित करने को कहा है।अधिकांश एयरलाइंस ने फ़्लायर्स के साथ अपडेट साझा करने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म का सहारा लिया। एयर इंडिया ने कहा कि उसके डिजिटल सिस्टम वर्तमान माइक्रोसॉफ्ट आउटेज के कारण अस्थायी रूप से प्रभावित हुए हैं, जिसके परिणामस्वरूप देरी हुई है। इंडिगो ने चेतावनी दी कि चेक-इन धीमा हो सकता है और कतारें लंबी हो सकती हैं।कम लागत वाले वाहक ने यह भी कहा कि उड़ान को दोबारा बुक करने या रिफंड का दावा करने का विकल्प अस्थायी रूप से अनुपलब्ध है। स्पाइसजेट ने कहा कि वह व्यवधानों को कम करने के लिए अधिकारियों के साथ मिलकर काम कर रहा है। अकासा एयर ने कहा कि उसकी ऑनलाइन सेवाएं प्रभावित हुई हैं। विस्तारा ने भी कहा कि वह तकनीकी चुनौतियों का सामना कर रही है और इसे जल्द से जल्द ठीक करने के लिए काम कर रही है। हैदराबाद के राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर 23 उड़ानें - 12 प्रस्थान और 11 आगमन - देखी गईं, जिनमें विशाखापत्तनम, तिरूपति, अहमदाबाद और बेंगलुरु के लिए इंडिगो की उड़ानें भी रद्द की गईं। जीएमआर द्वारा संचालित हवाईअड्डा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक पोस्ट में कहा गया, हम अपने यात्रियों की असुविधा को कम करने के लिए अपने सभी हितधारकों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। आप कृपया अपनी उड़ान की जानकारी के अपडेट के लिए संबंधित एयरलाइन से संपर्क कर सकते हैं।

सीएम योगी...

कि वे कहां बैठे हैं। नकवी ने फैसले की आलोचना की और कहा कि जल्दबाजी में दिए गए आदेश से छुआछूत की बीमारी को बढ़ावा मिल सकता है। नरेंद्र मोदी के दूसरे कार्यकाल में पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा, आस्था का सम्मान किया जाना चाहिए, लेकिन अस्पृश्यता को संरक्षण नहीं दिया जाना चाहिए। केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने स्पष्ट रूप से इस सलाह का विरोध करते हुए कहा कि वह जाति या धर्म के नाम पर किसी भी विभाजन का 'बिल्कुल समर्थन या प्रोत्साहन नहीं करेंगे'। उन्होंने कहा, हमें इन दो वर्गों के लोगों के बीच की खाई को पाटने की जरूरत है। गरीबों के लिए काम करना हर सरकार की जिम्मेदारी है, जिसमें समाज के सभी वर्ग जैसे दलित, पिछड़े, ऊंची जातियां और मुस्लिम भी शामिल हैं। सभी वहां हैं। हमें इसकी जरूरत है। उन्होंने आगे कहा, जब भी जाति या धर्म के नाम पर इस तरह का विभाजन होता है, तो मैं न तो इसका समर्थन करता हूं और न ही इसे प्रोत्साहित करता हूं। मुझे नहीं लगता कि मेरी उम्र का कोई भी शिक्षित युवा, चाहे वह किसी भी जाति या धर्म से आता हो। ऐसी चीजों से प्रभावित होता है। उन्होंने आगे कहा, जब भी जाति या धर्म के नाम पर इस तरह का विभाजन होता है, तो मैं न तो इसका समर्थन करता हूं और न ही इसे प्रोत्साहित करता हूं। मुझे नहीं लगता कि मेरी उम्र का कोई भी शिक्षित युवा, चाहे वह किसी भी जाति या धर्म से आता हो। ऐसी चीजों से प्रभावित होता है। एक अन्य भाजपा सहयोगी जनता दल (यूनाइटेड) ने भी उस सलाह की आलोचना की, जिस पर पुलिस ने जोर दिया है, यह सुनिश्चित करने के लिए है कि कांवड़ियों के बीच कोई भ्रम न हो और कोई कानून न हो- एवं-व्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।कांग्रेस और समाजवादी पार्टी ने इस निर्देश की आलोचना की और इसे 'भारत की संस्कृति पर हमला' बताया, आरोप लगाया कि इसका उद्देश्य मुसलमानों के आर्थिक बहिष्कार को सामान्य बनाना है। प्रियंका गांधी ने कहा, हमारा संविधान प्रत्येक नागरिक को गारंटी देता है कि उसके साथ जाति, धर्म, भाषा या किसी अन्य आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा। उत्तर प्रदेश में ठेले, खोमचे और दुकानों के मालिकों के नाम का बोर्ड लगाने का विभाजनकारी आदेश हमारे संविधान, हमारे लोकतंत्र और हमारी साझा विरासत पर एक हमला है। योगी के नवीनतम संदेश पर नकवी ने दावा किया कि योगी आदित्यनाथ सरकार ने मुजफ्फरनगर पुलिस के आदेश से उत्पन्न 'भ्रम' को दूर कर दिया है, जिसमें कांवड़ यात्रा मार्ग पर भोजनालयों को अपने मालिकों के नाम प्रदर्शित करने के लिए कहा गया था और कहा कि अब उसने पवित्रता के लिए एक दिशानिर्देश दिया है।

राज्यपालों के...

अदालत ने इस मामले से निपटने में अटॉर्नी जनरल आर. वेंकटरमणी से सहायता करने को कहा। महिला का नाम न्यायिक रिकॉर्ड से हटा दिया गया है। महिला की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता श्याम दीवान ने सुनवाई की शुरुआत में कहा, ऐसा नहीं हो सकता कि कोई जांच ही न हो। सबूत अभी एकत्र किए जाने चाहिए। राज्यपाल के पद छोड़ने तक इसे अनिश्चित काल के लिए टाला नहीं जा सकता। याचिका में कहा गया है कि अनुच्छेद 361 के खंड दो के तहत राज्यपालों को दी गई छूट जांच पर रोक नहीं लगा सकती और वैसे भी, ऐसे मामलों की जांच में समय का बहुत महत्व है। पीठ ने राज्य सरकार और अन्य को नोटिस जारी करते हुए अपने आदेश में कहा, याचिका में संविधान के अनुच्छेद 361 के खंड (2) के तहत राज्यपाल को दिए गए संरक्षण के दायरे से संबंधित मुद्दा उठाया गया है। यह अनुच्छेद राष्ट्रपति और राज्यपालों के संरक्षण से संबंधित है और इसका खंड दो कहता है- राष्ट्रपति या किसी राज्य के राज्यपाल के कार्यकाल के दौरान किसी भी न्यायालय में उनके विरुद्ध कोई भी आपराधिक कार्यवाही शुरू नहीं की जाएगी या जारी नहीं रखी जाएगी। महिला याचिकाकर्ता ने राज्यपालों को आपराधिक अभियोजन से छूट प्रदान करने के संबंध में विशिष्ट दिशा-निर्देश तैयार करने के निर्देश दिए जाने का अनुरोध किया है। याचिका में कहा गया है, इस अदालत को यह तय करना है कि क्या याचिकाकर्ता जैसी पीड़िता के पास राहत पाने का कोई उपाय नहीं है, जबकि एकमात्र विकल्प आरोपी के पद छोड़ने तक इंतजार करना है और सुनवाई के दौरान यह देरी अतार्किक होगी और पूरी प्रक्रिया महज दिखावा बनकर रह जाएगी, जिससे पीड़िता को कोई न्याय नहीं मिलेगा।

खेडकर के...

दिया गया। उन्हें सिविल सेवा परीक्षा 2022 में योग्य घोषित किया गया था। यूपीएससी द्वारा पिछले साल घोषित परिणामों के आधार पर खेडकर को आईएएस और उनके गृह राज्य महाराष्ट्र को कैडर के रूप में आवंटित किया गया था। शुक्रवार को जारी एक आधिकारिक बयान में कहा गया, यूपीएससी ने सिविल सेवा परीक्षा-2022 की अनंतिम रूप से अनुशंसित उम्मीदवार सुश्री पूजा मनोरमा दिलीप खेडकर के दुर्व्यवहार की विस्तृत और गहन जांच की है। आयोग ने कहा, इस जांच से पता चला है कि उसने अपना नाम, अपने पिता और माता का नाम, अपनी तस्वीर/हस्ताक्षर, अपनी ईमेल आईडी, मोबाइल नंबर और अपनी पहचान बदलकर धोखाधड़ी से परीक्षा नियमों के तहत स्वीकार्य सीमा से अधिक प्रयास का लाभ उठाया। इसलिए, यूपीएससी ने उसके खिलाफ कार्रवाई की एक श्रृंखला शुरू की है, जिसमें पुलिस अधिकारियों के साथ प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) दर्ज करके आपराधिक मुकदमा चलाना शामिल है और 'सिविल सेवा परीक्षा -2022 की उसकी उम्मीदवारी को रद्द करने के लिए कारण बताओ नोटिस' जारी किया है। सिविल सेवा परीक्षा-2022 के नियमों के अनुसार, भविष्य की परीक्षाओं/चयनों से वर्जित किया जाएगा। परीक्षा आयोजित करने वाली संस्था ने कहा, यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि अपने संवैधानिक दायित्वों को पूरा करने में, यूपीएससी अपने संवैधानिक जनादेश का सख्ती से पालन करता है और सभी परीक्षाओं सहित अपनी सभी प्रक्रियाओं को बिना किसी समझौते के उचित परिश्रम के उच्चतम क्रम के साथ आयोजित करता है, इसमें कहा गया है कि यूपीएससी ने अत्यंत निष्पक्षता और नियमों के सख्त पालन के साथ अपनी सभी परीक्षा प्रक्रियाओं की पवित्रता और अखंडता सुनिश्चित की है। बयान में कहा गया है, यूपीएससी ने जनता, विशेषकर उम्मीदवारों से उच्च स्तर का विश्वास और विश्वसनीयता अर्जित की है।

आतंकी नेटवर्क को ध्वस्त करने के लिए प्रवर्तन एजेंसियों के बीच बेहतर तालमेल हो : शाह

भाषा। नई दिल्ली

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने देश में उभरते सुरक्षा खतरे के परिदृश्य से निपटने के लिए आतंकी नेटवर्क और उसके सहायक परिवेश को खत्म करने के लिए सुरक्षा और कानून लागू करने वाली एजेंसियों के बीच अधिक तालमेल पर शुक्रवार को जोर दिया। शाह ने एक उच्चस्तरीय बैठक की अध्यक्षता करते हुए सुरक्षा एजेंसियों और अन्य खुफिया और कानून लागू करने वाली एजेंसियों के प्रमुखों को राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति संपूर्ण सरकार का दृष्टिकोण अपनाने का निर्देश दिया। गृह मंत्री ने खुफिया ब्यूरो के मल्टी एजेंसी सेंटर (एमएसी) के कामकाज की भी समीक्षा की, जिसके पास देश की सुरक्षा चुनौतियों से निपटने की जिम्मेदारी है। एक आधिकारिक बयान में कहा गया कि शाह ने देश में उभरते सुरक्षा खतरे के परिदृश्य से निपटने के लिए आतंकी नेटवर्क और उसके सहायक परिवेश को खत्म करने के लिए सभी एजेंसियों के बीच बेहतर तालमेल पर जोर दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि एमएसी को विभिन्न हितधारकों के बीच कार्वाई योग्य खुफिया जानकारी को सक्रिय और वास्तविक समय पर साझा करने को लेकर एक मंच के रूप में 24 घंटे सातों दिन काम करना जारी रखना चाहिए। देश की समग्र आंतरिक सुरक्षा स्थिति और आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई की समीक्षा करते हुए, गृह मंत्री ने बैठक के सभी हितधारकों से एमएसी के साथ जुड़ाव बढ़ाने और इसे एक सुसंगत मंच बनाने पर जोर दिया, जो निर्णायक और त्वरित कार्वाई के लिए सभी कानून प्रवर्तन, मादक पदार्थ निरोधक, साइबर सुरक्षा और खुफिया एजेंसियों को एक साथ लाए। बैठक के दौरान, शाह ने राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी सभी एजेंसियों से युवा, तकनीकी रूप से कुशल और उत्साही अधिकारियों की एक टीम गठित करने पर भी जोर दिया, ताकि बड़े डेटा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग आधारित विश्लेषण और तकनीकी प्रगति का उपयोग करके आतंकवाद के तंत्र को नष्ट किया जा सके।

कांग्रेस परजीवी पार्टी, गठबंधन सहयोगियों को ही कमजोर करती है पार्टी : नड्डा

पुरी (ओडिशा)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने शुक्रवार को कांग्रेस को एक परजीवी पार्टी करार दिया, जो दूसरों के वोटों की बैसाखी पर खड़ी है और गठबंधन सहयोगियों को कमजोर कर रही है। केंद्रीय मंत्री ने भाजपा की ओडिशा इकाई की कार्यकारिणी की बैठक को संबोधित करते हुए कहा, जिन लोगों ने संविधान को सबसे ज्यादा चोट पहुंचाई है वे ही सत्ताधारी दल को सिखा रहे हैं कि लोकतंत्र की रक्षा कैसे की जाए। नड्डा ने आपातकाल का जिक्र करते हुए कहा, कांग्रेस एक परजीवी पार्टी बन गई है और दूसरों के वोटों की बैसाखी पर खड़ी है। जिन लोगों ने संविधान को सबसे ज्यादा चोट

पहुंचाई है, वे अब हमें सिखा रहे हैं कि लोकतंत्र की रक्षा कैसे की जाए। राहुल गांधी को पता नहीं है कि उनकी दादी (इंदिरा गांधी) ने संविधान का किस अलग तरीके से इस्तेमाल किया था। उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस ने अतीत में 90 बार निर्वाचित सरकारों को बर्खास्त किया जबकि केंद्र में नरेन्द्र मोदी सरकार ने पिछले 10 वर्षों में कभी भी अन्य दलों की सरकारों को बर्खास्त नहीं किया है।

नड्डा ने भारत के लोगों के बीच भाजपा की स्वीकार्यता पर प्रकाश डालते हुए दावा किया कि देश की 57 प्रतिशत आबादी भाजपा का समर्थन करती है और पार्टी की सरकारें देश के 58 प्रतिशत क्षेत्र में फैली हुई हैं।

नड्डा ने कहा, हम (भाजपा) एक अखिल भारतीय पार्टी हैं, जिसकी 18 राज्यों में गठबंधन की सरकार हैं और इनमें से 13 में अकेले भाजपा की सरकार है। दूसरी ओर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, मिजोरम, त्रिपुरा, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, दिल्ली, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और लद्दाख सहित 13 राज्यों में कांग्रेस शून्य है।

श्रृंगेरी के शारदा मंदिर में श्रद्धालुओं के लिए परिधान के नियम अनिवार्य किए गए

चिक्कमगलुरू (कर्नाटक)। (श्रृंगेरी स्थित शारदम्बा मंदिर ने 15 अगस्त से मंदिर में प्रवेश करने वाले श्रद्धालुओं के लिए परिधान संबंधी नियम लागू किया है। मंदिर प्रशासन के एक बयान के अनुसार मंदिर में दर्शन के लिए आने वालों को केवल पारंपरिक भारतीय परिधान पहनने की अनुमति होगी। इसमें स्पष्ट किया गया है कि श्रद्धालुओं को श्रृंगेरी शारदा मंदिर और तुंगा नदी के पार स्थित शंकराचार्य गुरु के मठ में जाते समय पारंपरिक भारतीय पोशाक पहननी होगी। परिधान संबंधी नियमों का पालन नही करने वालो को अर्ध मंडपम के बाहर से ही भगवान के दर्शन करने की अनुमति होगी। उन्हें गर्भगृह और आंतरिक परिक्रमा तक पहुंचने की अनुमति नही होगी। मंदिर में आने वाले सभी भक्तो पर परिधान संबंधी यह नियम 15 अगस्त से सख्ती से लागू होगा। इसमें कहा गया है कि निर्धारित परिधान मे पुरुषो के लिए धोती और अंगवस्त्रम और महिलाओं के लिए साड़ी-ब्लाउज, सलवार-दुपट्टा शामिल है।

ओला इलेक्ट्रिक वाहनों पर देगा जोर

नई दिल्ली। ओला इलेक्ट्रिक अपने ओला एस1 स्कूटरों की खरीद पर 25,000 रुपये तक के आकर्षक बेनेफ़िट्स प्रदान कर रहा है। 22 जुलाई तक लागू इन ऑफ़र्स में एस1 एक्स़ पर 10,000 रुपये और एस1 प्रो एवं एस1 एयर पर 5ए000 रुपये का फ्लैट डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसके अलावा कंपनी चुनिंदा क्रेडिट कार्ड ईएमआई पर ग्राहकों को 5,000 रुपये तक का अतिरिक्त डिस्काउंट भी दे रही है। इन ऑफ़र्स के अलावा ग्राहकों को ईएमपीएस 2024 के अंतर्गत 10,000 रुपये की सब्सिडी भी मिलेगी। इन आकर्षक ऑफ़र्स का लाभ उठाने के लिए ग्राहकों को कीमतें बढ़ने से पहले ओला इलेक्ट्रिक स्कूटर खरीदकर उसे रजिस्टर कराना होगा। ओला इलेक्ट्रिक एक विशाल एस1 पोर्टफ़ोलियो पेश करता है, जिसमें आकर्षक मूल्य में छः उत्पाद हैं, जो विभिन्न रेंज की जरूरत वाले ग्राहकों को सेवाएं प्रदान करते हैं।

इसुज़ू का मॉनसून कैम्प' 22 जुलाई तक

मुंबई। इसुज़ू मोटर्स इंडिया ने वाहन स्वामित्व का बेहतरीन और अतुलनीय अनुभव प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता के साथ पूरे देश में 'इसुज़ू आई केयर मॉनसून कैम्प' की घोषणा की है। इसुज़ू डी-मैक्स पिक-अप और एसयूवी के लिए डिजाइन किए गये ये शिविर पूरे देश में इसुज़ू वाहन मालिकों को आकर्षक लाभ और प्रिवेंटिव मेंटेनेंस जाँच प्रदान करेंगे। इसुज़ू केयर' द्वारा 10 से 22 जुलाई 2023 (ये दोनों दिन भी शामिल) के बीच सभी अधिकृत इसुज़ू डीलर सर्विस आउटलेट्स पर एक मॉनसून कैम्प लगाया जा रहा है। इस अवधि में ग्राहकों को उनके वाहनों के लिए विशेष ऑफर और लाभ दिये जा रहे हैं। इस शिविर में आने वाले ग्राहकों को निम्नलिखित लाभ होंगे। मुफ़्त 37-पॉइंट विस्तृत जाँच, लेबर पर 10प्रतिशज की छूट,पार्ट्स पर 5प्रतिशत की छूट,ल्यूब और फ्लूइड पर 5 प्रतिशत की छूट मिलेगी।

राज्यपाल के खिलाफ ममता बनर्जी ने दायर की अपील

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शुक्रवार को कलकत्ता उच्च न्यायालय की एक खंडपीठ के समक्ष अपील दायर करके एकल पीठ के उस आदेश को चुनौती दी, जिसमे उन्हे और तीन अन्य को राज्यपाल सी. वी. आनंद बोस के खिलाफ कोई मानहानिकारक या गलत बयान देने से रोक दिया गया था। उच्च न्यायालय की एकल पीठ ने राज्यपाल द्वारा दायर मानहानि वाद पर मंगलवार को यह अंतरिम आदेश पारित किया था। तृणमूल कांग्रेस के दो नवनिर्वाचित विधायकों के शपथ ग्रहण से जुड़े विवाद पर बोलते हुए बनर्जी ने कुछ टिप्पणियां की थी, जिसके खिलाफ बोस ने वाद दायर किया है। बनर्जी ने एकल पीठ के आदेश को चुनौती दी, जो 14 अगस्त तक के लिए है। अब इसे एक खंडपीठ के समक्ष सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया जाएगा।

असम 2041 तक मुस्लिम बहुल राज्य बन जाएगा: हिमंत

भाषा। गुवाहाटी

असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने शुक्रवार को दावा किया कि उनके राज्य में मुस्लिम आबादी हर 10 साल में लगभग 30 प्रतिशत बढ़ रही है और 2041 तक वे बहुसंख्यक हो जाएंगे। मुख्यमंत्री ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि सांख्यिकीय नमूने के अनुसार असम में मुस्लिम आबादी 40 प्रतिशत है। शर्मा ने कहा, 2011 में असम में 1.4 करोड़ मुसलमान थे। 2041 तक असम मुस्लिम बहुल राज्य बन जाएगा। यह एक वास्तविकता है और इसे कोई नहीं रोक सकता। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, असम में कुल मुस्लिम आबादी 1.07 करोड़ थी जो कुल 3.12 करोड़ निवासियों का 34.22 प्रतिशत थी। राज्य में 1.92 करोड़ हिंदू थे जो कुल आबादी का लगभग 61.47 प्रतिशत था। मुख्यमंत्री ने कहा, हर 10 साल में असम में मुस्लिम आबादी 11 लाख बढ़ जाती है... यह हिमंत विश्व शर्मा का डेटा नहीं है, बल्कि भारतीय जनगणना का डेटा है। ए सभी प्रकाशित डेटा हैं। उन्होंने कहा कि हिंदू समुदाय की आबादी हर 10 साल में लगभग 16 प्रतिशत बढ़ रही है। शर्मा ने कहा कि उनकी सरकार ने मुस्लिम समुदाय की जनसंख्या वृद्धि को कम करने के लिए कदम उठाए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा, कई लोगों ने हमारी मदद भी की है। अगर निजुत मोइना योजना सफल होती है तो लड़कियां चिकित्सक और इंजीनियर बनेंगी। फिर वे (बच्चों को) जन्म नहीं देंगी। इस योजना के तहत असम सरकार बाल विवाह को रोकने के उद्देश्य से कक्षा 11 से स्नातकोत्तर तक की छात्राओं को अगले पांच वर्षों तक 2,500 रुपए तक का मासिक मानदेय प्रदान करती है। उन्होंने कहा,"पिछले तीन वर्षों में हमारी सरकार द्वारा उठाए गए कदमों से हमें कुछ परिणाम मिलेंगे, लेकिन समस्या बहुत बड़ी है। उन्होंने कहा, 2041 तक असम मुस्लिम बहुल राज्य बन जाएगा।

असम में दो वर्षों में किशोरावस्था में गर्भधारण के मामलों में 64 प्रतिशत की कमी आई: सीएम

गुवाहाटी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने शुक्रवार को दावा किया कि बाल विवाह के खिलाफ सरकार के अभियान के परिणामस्वरूप पिछले दो वर्ष मे राज्य में किशोरावस्था मे गर्भधारण के मामलो मे लगभग 64 प्रतिशत की कमी आई है। शर्मा ने कहा कि यह प्रवृत्ति एक राष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) द्वारा हाल में किए गए आकलन में देखी गई, जिसने बाल विवाह के खिलाफ कड़े कानूनों की उपयोगिता पर असम के 3,000 गांवो का सर्वेक्षण किया था।शर्मा ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, बाल विवाह के खिलाफ हमारा अभियान न केवल सामाजिक परिवर्तन ला रहा है,।

धार्मिक गलियारेः मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने प्रकाश और ध्वनि शो शुरू करने का निर्देश दिया

भोपाल। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने शुक्रवार को कहा कि राज्य में विभिन्न स्थानों पर बनने वाले धार्मिक गलियारों या लोक पर विभिन्न घटनाओं को दर्शाने वाले प्रकाश और ध्वनि शो विकसित किए जाने चाहिए। यादव ने मप्र में बनाए जा रहे विभिन्न धार्मिक गलियारो की प्रगति की समीक्षा की और अधिकारियों से कहा कि वे सुनिश्चित करें कि ओरछा में निर्माणाधीन रामराजा लोक में भगवान राम के वनवास से संबंधित घटनाओं को दर्शाया जाए। उन्होंने इन स्थानों के महत्व को उजागर करने के लिए ऐसे गलियारों पर प्रकाश और ध्वनि शो बनाने का भी आदेश दिया। एक अधिकारी ने मुख्यमंत्री के हवाले से बताया कि इन गलियारों के लिए संस्कृति, पर्यटन, बंदोबस्त, राजस्व, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, नगरीय विकास एवं आवास विभाग जैसे संबंधित विभागों के स्थानीय स्तर पर समन्वय किया जाएगा। अधिकारी ने बताया कि राज्य पर्यटन विभाग 18 लोक विकसित कर रहा है, जिसमें 14 धर्म पर आधारित और चार संस्कृति पर आधारित हैं। धर्म पर आधारित 10 और संस्कृति पर आधारित चार लोक पर काम चल रहा है। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से श्रद्धालुओं और आगंतुकों के लिए आसपास के बुनियादी ढांचे और अन्य सुविधाओं का विकास सुनिश्चित करने को कहा।

भाजपा के पास अपने 10 साल के कार्यकाल का एक भी काम दिखाने के लिए नहीं हैः भूपेंद्र हुड्डा

रोहतक। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने शुक्रवार को कहा कि कांग्रेस 2014 से सत्ता मे न रहने के बावजूद भी अपने काम के नाम पर वोट मांग रही है, जबकि राज्य में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के पास अपने 10 साल के कार्यकाल का एक भी काम दिखाने के लिए नही है। हुड्डा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) कुछ भी हासिल नही कर पाई इसलिए वह अपने काम का हिसाब नही दे पा रही है और कांग्रेस से जवाब मांग रही है। हरियाणा में इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव के मद्देनजर कांग्रेस ने 15 जुलाई को हरियाणा मांगे हिसाब अभियान शुरू किया, जिसके तहत वह बेरोजगारी, कानून-व्यवस्था और किसानों की समस्याओं सहित कई मुद्दों पर भाजपा को आड़े हाथों ले रही है। हुड्डा ने कहा, सत्ता पक्ष विपक्ष से हिसाब मांग रहा है। प्रदेश के इतिहास में पहली बार ऐसी हास्यास्पद बात हो रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने सत्ता में रहते हुए या विपक्ष में रहते हुए हमेशा अपने काम का हिसाब दिया है क्योंकि हमारी सरकार ने हर क्षेत्र में विकास की नई ऊंचाइयां हासिल की है। हुड्डा ने भाजपा नेता अमित शाह के महेंद्रगढ़ के हालिया दौरे का भी जिक्र किया, जिस दौरान केंद्रीय गृह मंत्री ने हरियाणा मांगे हिसाब अभियान को लेकर हुड्डा पर निशाना साधा था।

टाटा प्ले बिंज से लें मानसून का आनंद

मुंबई। इस बारिश के मौसम में टाटा प्ले बिंज ने अपने दर्शको के लिए बनाया एक बेहतरीन लिस्ट जिनका लुफ्त गर्मागर्म चाय और भजिए के साथ उठाया जा सकता है। इन सुहाने दिनों में अगर पूरा दिन बिस्तर पर लेटकर मौसम का आनंद लेने की योजना हो या फिर बारिश के कारण बाहर जाने की योजना निरस्त हो गई हो, दोनों ही स्थितियों में टाटा प्ले बिंज आपके मनोरंजन का उत्तम साथी है। टाटा प्ले बिंज पर बारिश के मौसम के लिए विभिन्न ओटीटी मंचों के बेहतरीन कार्यक्रमों का संग्रह पेश किया गया है। अगर आप अपनी जेब पर भार डाले बिना ये कार्यक्रम देखना चाहते हैं, तो इसका हल टाटा प्ले बिंज के पास है। इस अकेले ऐप पर आप एक ही छत के नीचे सबसे कम सदस्यता शुल्क में 30 से ज्यादा राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय ऐप्स के कार्यक्रम देख सकते हैं। इस मौसम में अमेज़न प्राईम के पंचायत एवं अन्य कार्यक्रम, डिज़्नी हॉटस्टार पर लीजेंड्स ऑफहनुमान, सोनी लिव के गुल्लक और ओटीटी की दुनिया के कई अन्य बेहतरीन कार्यक्रम टाटा प्ले बिंज पर देखिए। इसलिए टाटा प्ले बिंज डाउनलोड करके बारिश के मौसम को और ज्यादा मनोरंजक बनाईये! मिर्जापुर;सारे सीज़न- अमेज़न प्राईम वीडियो- मिर्जापुर एक दिलचस्प भारतीय अपराध थ्रिलर है, जो उत्तर प्रदेश के एक अराजकतापूर्ण शहर की कहानी पेश करता है। इस सीरीज़ में गुड्डू और बबलू पंडित ताकत, ड्रग्स, और हिंसा की दुनिया में उतर पड़ते हैंए जिस पर एक निर्दयी माफिया डॉन, कालीन भैया का राज चलता है। सनफ्लॉवर सभी सीज़न- ज़ी5-सनफ्लॉवर अपनी तरह की एक अलग मौत की गुत्थी पर आधारित सीरीज़ है। इसमें पहले धारावाहिक से ही दिलचस्पी बन जाती है। इसमें सनफ्लॉवर नाम की एक मध्यमवर्गीय आवासीय संस्था के निवासियों का दैनिक जीवन दिखाया गया है।

मोबाईल इमेजिंग को मिलेगा बढ़ावा

नई दिल्ली। ऑनर ने भारत में अपने पोर्टफोलियो का विस्तार करते हुए आज ऑनर 200 सीरीज़ लॉन्च की। यह इसकी प्रतिष्ठित नंबर सीरीज़ में सबसे नया लॉन्च है। इस सीरीज़ में ऑनर 200 प्रो 5जी और ऑनर 200 5जी हैं, जो पॉवर और क्रिएटिविटी के दायरे बढ़ाकर ग्राहकों को अत्याधुनिक एआई पॉवर्ड पोर्ट्रेट क्षमताएंए आकर्षक डिस्प्लेए मजबूत हार्डवेयर परफॉर्मेंस, और इन्ट्यूटिव यूज़र केंद्रित एआई अनुभव प्रदान करेंगे। ऑनर 200 प्रो 5जी दो खूबसूरत रंगों . ओशन स्यान और ब्लैक में 57ए999 रुपये में 20 जुलाई अर्द्धरात्रि 12 बजे से अमेज़न इन परए ब्रांड की वेबसाईट पर और आपके नजदीकी मेनलाइन रिटेल स्टोर्स पर मिलना शुरू होगा। 20 और 23 जुलाई को यह स्मार्टफोन खरीदने वाले सभी ग्राहकों को 8000 रुपये की तत्काल छूट मिलेगी। आईसीआईसीआई बैंक और एसबीआई बैंक के क्रेडिट कार्ड पर 3000 रुपये की अतिरिक्त छूट मिलेगी। इसके अलावा ग्राहकों को कुछ चुनिंदा मेनलाइन स्टोर्स में 8ए499 रुपये मूल्य के मुफ़्त ऑनर उपहार मिलेंगे या इसके बदले 2000 रुपये की तत्काल कूपन छूट दी जाएगी। ऑनर 200 5जी भी दो रंगों के विकल्पों . मूनलाईट व्हाईट और ब्लैक में उपलब्ध होगा। यह स्मार्टफोन दो वैरिएंट्स में मिलेगा। इसके 12जीबी़512जीबी वैरिएंट का मूल्य 39ए999 रुपये और 8जीबी़256जीबी वैरिएंट का मूल्य 34,999 रुपये होगा। इस लॉन्च के बारे में सी पीण् खंडेलवाल जॉईंट मैनेजिंग डायरेक्टर एचटेक ने कहा कि ऑनर 200 सीरीज़ का लॉन्च भारत में स्मार्टफोन का अत्याधुनिक अनुभव प्रदान करते रहने के हमारे सफर में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

पीतांबर आचार्य को ओडिशा का नया महाधिवक्ता

भुवनेश्वर। जगन्नाथ मंदिर के रत्न भंडार को फिर से खोलने के लिए मुकदमा लड़ने वाले वरिष्ठ अधिवक्ता पीतांबर आचार्य को शुक्रवार को ओडिशा का नया महाधिवक्ता नियुक्त किया गया। इस संबंध में जारी एक अधिसूचना में कहा गया, भारत के संविधान के अनुच्छेद 165 के खंड(1) के अनुसरण में, ओडिशा के राज्यपाल उड़ीसा उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री पीतांबर आचार्य को तत्काल प्रभाव से राज्य का महाधिवक्ता नियुक्त करते हुए प्रसन्नता महसूस करते है। आचार्य (59) ने 2019 के विधानसभा चुनाव में हिन्जिली सीट पर तत्कालीन मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के खिलाफ भाजपा उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा था।

शेरवानी पैबल्स जंगल के अनुभव का शानदार संयोजन

लखनऊ। हॉस्पिटेलिटी उद्योग के जानेमाने नामों में से एक शेरवानी होटल्स ने 48 कमरों के बुटीक होटल शेरवानी पैबल्स एण्ड पाइन्स कॉर्बेट का लॉन्च किया हैए जो आराम और एडवेंचर का अनूठा संयोजन होगा। जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क में स्थित यह होटल प्रकृति एवं रोमांच प्रेमियों को खूब लुभाएगाए जहां आने वाले मेहमान जंगल की भव्यता का यादगार अनुभव पा सकेंगे। तो जंगल के नज़ारों और आवाज़ों में खो जाने के लिए तैयार हो जाएंए क्योंकि यहां प्रकृति के साथ बिताया गया हर पल हमेशा के लिए यादगार बन जाएगा। जंगल सफारी हो या नदी के नज़दीक आकर्षक पल या शहर की हलचल से दूर शांत माहौल, जिम कॉर्बेट का बुटीक होटल अनूठा अनुभव प्रदान करेगा। शेरवानी पैबल्स एण्ड पाइन्स कॉर्बेट में 48 कमरे और सुईट्स हैं, जिन्हें स्मार्ट तरीके से सजाया गया हैए ये कमरे मेहमानों की हर ज़रूरत को पूरा करते हैं। इसके अलावा होटल की सफारी डेस्क, जंगल सफारी की सुविधा भी पेश करती है, जहां आप प्राकृतिक आवास में रहने वाले राजसी रॉयल टाइगर को देखने का दुर्लभ अवसर पा सकते हैं।

विश्व धरोहर समिति का सत्र भारत की सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित करेगा, प्रधानमंत्री करेंगे उद्घाटन

नई दिल्ली। केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने शुक्रवार को कहा कि जी20 की मेजबानी के बाद 21 से 31 जुलाई तक यहां आयोजित विश्व धरोहर समिति का 46वां सत्र मील का पत्थर साबित होगा। सत्र से पहले यहां एक संवाददाता सम्मेलन में उन्होंने यह भी कहा कि कार्यक्रम के उद्घाटन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मौजूदगी के लिए सैद्धांतिक मंजूरी मिल गई है। हालांकि, बाद में संस्कृति मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि प्रधानमंत्री मोदी 21 जुलाई को सत्र का उद्घाटन करेंगे। यह पहली बार है जब सत्र भारत में आयोजित किया जा रहा है। शेखावत ने कहा कि विश्व धरोहर समिति (डब्ल्यूएचसी) का सत्र भारत को अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, अपने स्थलों के रख-रखाव और प्रबंधन तथा भारत द्वारा अपनी विरासत को दी जाने वाली प्राथमिकता को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करेगा। यह पूछे जाने पर कि इस महत्वपूर्ण बैठक के लिए मेजबान शहर के रूप में दिल्ली को किस मानदंड के तहत चुना गया, केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण इस आयोजन के लिए दिल्ली स्वाभाविक पसंद थी। डब्ल्यूएचसी के सत्र से पहले, सरकार ने हाल में एक लोक कला परियोजना शुरू की है, जिसमें भारत की सांस्कृतिक विरासत और देश के यूनेस्को विरासत स्थलों पर आधारित कार्य शामिल हैं। विश्व धरोहर सम्मेलन का सत्र भारत मंडपम में होगा, जो जी20 शिखर सम्मेलन का आयोजन स्थल भी था।

ट्रेन हादसे में मृतकों की संख्या बढ़कर चार हुई

भाषा। गोंडा

उत्तर प्रदेश के गोंडा में चंडीगढ़-डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस के पटरी से उतरने की घटना में मरने वालों की संख्या बढ़कर चार हो गई है, जबकि 31 लोग घायल हैं। एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। चंडीगढ़-डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस के दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद शुक्रवार की शाम पहली मालगाड़ी चलाई गई। इस बीच घटना के कारणों की उच्च स्तरीय जांच शुरू हो गई है। रेलवे सुरक्षा आयुक्त (सीआरएस) 21 जुलाई को हादसे की जांच करेंगे। गोंडा की जिलाधिकारी ने भी घटना की मजिस्ट्रेट जांच के आदेश दे दिए हैं। पूर्वोत्तर रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में रेल पटरियों के मरम्मत का कार्य लगभग पूरा कर लिया गया है। रेल प्रशासन का दावा है कि देर रात तक आवागमन बहाल कर दिया जाएगा। पूर्वोत्तर रेलवे के गोंडा-गोरखपुर रेल खंड पर मोतीगंज और झिलाही रेलवे स्टेशन के बीच बृहस्पतिवार दोपहर को ट्रेन के आठ डिब्बे पटरी से उतर गए थे। गोंडा की जिलाधिकारी नेहा शर्मा ने कहा, अब तक चार यात्रियों की मौत हो चुकी है और 32 घायल हैं। घायलों में से करीब छह की हालत गंभीर है। शर्मा ने कहा, मृतकों में राहुल (38), सरोज कुमार सिंह (31) तथा दो अज्ञात शामिल हैं। अज्ञात में से एक व्यक्ति का शव आज सुबह बरामद किया गया। उन्होंने बताया कि गंभीर रूप घायल दो यात्रियों का उपचार लखनऊके ट्रामा सेंटर में किया जा रहा है। आधिकारिक बयान में शर्मा ने कहा कि दुर्घटना के कुछ घंटों बाद बृहस्पतिवार रात जब चंडीगढ़-डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस के 600 यात्रियों को एक विशेष ट्रेन से असम के लिए रवाना किया गया वह उस समय मनकापुर जंक्शन पर मौजूद थीं। जिलाधिकारी ने बताया कि उन्होंने कई यात्रियों से बातचीत की और उनमें से किसी ने भी अपने सहयोगी के लापता होने की शिकायत नहीं की। उन्होंने यह भी बताया कि रेल की पटरियों की मरम्मत का काम जारी है और जल्द ही इसे पूरा कर लिया जाएगा। जिलाधिकारी शर्मा सुबह में जिला अस्पताल पहुंचीं तथा यहां भर्ती घायलों से मिलकर उनका हालचाल जाना।

रूसी सशस्त्र बलों में कार्यरत 50 भारतीय छोड़ना चाहते हैं नौकरी : विदेश मंत्रालय

भाषा। नई दिल्ली

रूस के सशस्त्र बलों में कार्यरत भारतीयों की वापसी सुनिश्चित करने के लिए भारत और रूस काम कर रहे हैं। विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आठ और नौ जुलाई की दो दिवसीय मॉस्को यात्रा के दौरान रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के समक्ष यह मुद्दा उठाया था। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, हमें लगभग 50 भारतीय नागरिकों के बारे में जानकारी है जो वर्तमान में रूसी सशस्त्र बलों की नौकरी छोड़ना चाहते हैं। प्रवक्ता ने अपने साप्ताहिक प्रेस वार्ता में कहा, ए ऐसे मामले हैं जिनमें व्यक्ति या उसके परिवार के सदस्यों ने उनकी सेवा की यथाशीघ्र समाप्ति सुनिश्चित करने में सहायता के लिए हमसे संपर्क किया है। जायसवाल ने कहा कि इस मुद्दे को रूस के साथ नेतृत्व स्तर सहित विभिन्न स्तरों पर उठाया गया है। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री ने अपनी हालिया रूस यात्रा के दौरान इस मामले को उठाया था।

विदेश मंत्री जयशंकर ने अपने यूक्रेनी समकक्ष के साथ फोन पर बात की

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने शुक्रवार को फोन पर यूक्रेन के अपने समकक्ष दमित्रो कुलेबा के साथ वार्ता की। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मॉस्को यात्रा के करीब दस दिन बाद दोनो नेताओ के बीच यह वार्ता हुई है। जयशंकर ने कहा कि बातचीत द्विपक्षीय संबंधों को और विकसित करने पर केंद्रित थी। दोनो देशो के विदेश मंत्रियो के बीच फोन पर बातचीत मोदी की आठ-नौ जुलाई की मॉस्को यात्रा की यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की द्वारा आलोचना किए जाने की पृष्ठभूमि मे हुई। जयशंकर ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, आज दोपहर मे यूक्रेन के विदेश मंत्री दमित्रो कुलेबा के साथ एक अच्छी बातचीत हुई।

गुजरात के कुछ जिलों में भारी बारिश, पोरबंदर तालुका में 36 घंटे में 565 मिमी वर्षा

भाषा। पोरबंदर

गुजरात के पोरबंदर, जूनागढ़ और देवभूमि द्वारका जिले में शुक्रवार शाम छह बजे तक पिछले 36 घंटे की अवधि में भारी बारिश हुई। वहीं, पोरबंदर तालुका में इस अवधि के दौरान 565 मिलीमीटर बारिश हुई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि अगले चार दिनों में पोरबंदर में और बारिश होने की संभावना है। उन्होंने बताया कि भारी बारिश के कारण इन जिलों के कई इलाकों में जलभराव हो गया, जिससे कुछ सड़कें, पुल और अंडरपास बंद होने से यातायात बाधित हुआ और लोगों को कई परेशानियों का सामना करना पड़ा। राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र द्वारा जारी किए गए आंकड़ों के मुताबिक, सौराष्ट्र क्षेत्र के पोरबंदर तालुका में शाम छह बजे तक पिछले 36 घंटे की अवधि में सबसे ज्यादा 565 मिमी बारिश हुई। इसके बाद देवभूमि द्वारका के कल्याणपुर तालुका में 412 मिमी, जूनागढ़ के केशोद तालुका में 401 मिमी, वंथली में 353 मिमी और पोरबंदर के राणावाव में 330 मिमी बारिश हुई। पोरबंदर के जिलाधिकारी केडी लखानी ने संवाददाताओं को बताया, भारी बारिश और तटीय क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति के कारण कई निचले इलाकों में बाढ़ आ गई है।

राष्ट्रपति ने सेनाध्यक्ष और नौसेना अध्यक्ष को परम विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया

भाषा। नई दिल्ली

राष्ट्रतपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को सेनाध्यक्ष जनरल उपेंद्र द्विवेदी और नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी को राष्ट्र के प्रति उनकी विशिष्ट सेवा के लिए परम विशिष्ट सेवा पदक (पीवीएसएम) से सम्मानित किया। रक्षा मंत्रालय ने एक विज्ञप्ति में बताया कि यहां राष्ट्रपति भवन में आयोजित रक्षा अलंकरण समारोह के दूसरे चरण में राष्ट्रपति मुर्मू ने सशस्त्र बलों और भारतीय तटरक्षक बल के 94 कर्मियों को विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया। रक्षा अलंकरण समारोह का पहला चरण पांच जुलाई को आयोजित किया गया था। उस समय राष्ट्रपति ने कर्तव्य के दौरान अदम्य साहस और असाधारण वीरता का प्रदर्शन करने के लिए सेना और अर्धसैनिक बलों के 10 जवानों को कीर्ति चक्र प्रदान किए थे जिनमें से सात को यह सम्मान मरणोपरांत दिया गया। कीर्ति चक्र भारत में शांतिकाल के दौरान वीरता के लिए दिया जाने वाला दूसरा शीर्ष अलंकरण हैं। विज्ञप्ति के मुताबिक, शुक्रवार को आयोजित समारोह के दूसरे चरण में राष्ट्रपति ने 31 पीवीएसएम, चार यूवाईएसएम (उत्तम युद्ध सेवा पदक), दो एवीएसएम (अति विशिष्ट सेवा पदक) और 57 एवीएसएम (अति विशिष्ट सेवा पदक) प्रदान किए। सेना प्रमुख जनरल द्विवेदी और नौसेना प्रमुख एडमिरल त्रिपाठी को शुक्रवार को पीवीएसएम से सम्मानित किया गया। पीवीएसएम से सम्मानित होने वाले अन्य अधिकारियों में लेफ्टिनेंट जनरल एम वी सुचिन्द्र कुमार, लेफ्टिनेंट जनरल एन एस राजा सुब्रमणि, लेफ्टिनेंट जनरल जॉनसन पी मैथ्यू और एयर मार्शल रवि गोपाल कृष्ण कपूर के अलावा सेना और भारतीय वायु सेना के कई सेवानिवृत्त अधिकारी शामिल हैं। राष्ट्रपति भवन ने एक्स पर सिलसिलेवार पोस्ट में समारोह की तस्वीरें साझा कीं।

सोशल मीडिया मंच एक्स पर जारी एक पोस्ट के मुताबिक, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी, सेनाध्यक्ष जनरल उपेंद्र द्विवेदी, लेफ्टिनेंट जनरल एमवी सुचिंद्र कुमार, लेफ्टिनेंट जनरल एनएस राजा सुब्रमणि को परम विशिष्ट सेवा पदक प्रदान किया।

एनसीएपी कोष का दो-तिहाई हिस्सा धूल प्रबंधन के लिए इस्तेमाल किया गयाः रिपोर्ट

नई दिल्ली। राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनसीएपी) के तहत 131 शहरों को आवंटित धनराशि का लगभग दो-तिहाई हिस्सा धूल प्रबंधन के लिए इस्तेमाल किया गया है, जबकि औद्योगिक क्षेत्र से उत्पन्न होने वाले वायु प्रदूषण से निपटने के लिए एक प्रतिशत से भी कम का उपयोग किया गया है। एक नई रिपोर्ट में शुक्रवार को यह बात कही गई। साल 2019 में शुरू किया गया एनसीएपी स्वच्छ वायु लक्ष्य निर्धारित करने का भारत का पहला राष्ट्रीय प्रयास है। इसका लक्ष्य 2017 को आधार वर्ष मानकर 2024 तक पीएम10 प्रदूषण में 20-30 प्रतिशत की कमी लाना है। संशोधित लक्ष्य 2019-20 को आधार वर्ष के रूप में उपयोग करते हुए 2026 तक इस प्रदूषण में 40 प्रतिशत की कटौती का है।

भारत भूटान के साथ और घनिष्ठ करेगा संबंध

विदेश सचिव मिसरी की पहली विदेश यात्रा

भाषा। थिम्पू

भारत ने शुक्रवार को भूटान के साथ अपने घनिष्ठ मैत्रीपूर्ण संबंधों की पुष्टि की तथा द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने के लिए दृढ़ प्रतिबद्धता का संकल्प जताया। विदेश सचिव मिसरी ने यहां प्रधानमंत्री ल्योंछेन दाशो शेरिंग तोबगे को भूटान के विकास के लिए एकजुटता की भावना से अवगत कराया। भूटान स्थित भारतीय मिशन ने बैठक की तस्वीरें एक्स पर साझा करते हुए कहा, विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग तोबगे से मुलाकात की। विदेश सचिव ने भूटान के साथ भारत के घनिष्ठ मैत्रीपूर्ण संबंधों की पुष्टि की तथा भूटान की शाही सरकार और जनता की प्राथमिकताओं के अनुरूप भारत-भूटान संबंधों को और मजबूत करने की भारत की दृढ़ प्रतिबद्धता दोहराई। इससे पहले, मिसरी ने प्रधानमंत्री तोबगे से मुलाकात की, जिन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आपसी विश्वास और लाभ पर आधारित घनिष्ठ द्विपक्षीय संबंध निरंतर मजबूत होने चाहिए। मिसरी अपने समकक्ष पेमा चोडेन के साथ भारत-भूटान विकास सहयोग वार्ता की सह-अध्यक्षता करने के लिए दो दिवसीय आधिकारिक यात्रा पर शुक्रवार को यहां पहुंचे। कार्यभार संभालने के एक सप्ताह से भी कम समय में यह उनकी पहली आधिकारिक विदेश यात्रा है। विदेश

सचिव मिसरी ने प्रधानमंत्री तोबगे से मुलाकात की। इस दौरान तोबगे ने मिसरी को उनकी नियुक्ति पर बधाई दी। तोबगे ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, यह जानकर खुश हूं कि विक्रम मिसरी ने भारत के विदेश सचिव के रूप में अपनी नियुक्ति के मात्र चार दिन बाद ही अपनी पहली विदेश यात्रा के रूप में भूटान का दौरा करने का फैसला किया है। मैं उनकी नियुक्ति पर उन्हें बधाई देता हूं। हमारी वार्ता में द्विपक्षीय संबंधों के सभी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित रहेगा। हमने भूटान और भारत के बीच घनिष्ठ संबंधों पर जोर दिया तथा इस बात पर सहमति व्यक्त की कि आपसी विश्वास और लाभ पर आधारित हमारी साझेदारी निरंतर मजबूत होनी चाहिए। तोबगे ने कहा, मैंने सरकार और भारत के लोगों के प्रति उनके दृढ़ समर्थन के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया..।

भारत के साथ घनिष्ठ संबंध निरंतर मजबूत होने चाहिए : भूटान के प्रधानमंत्री तोबगे

थिम्पू। विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने शुक्रवार को भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग तोबगे से मुलाकात की, जिन्होने इस बात पर जोर दिया कि आपसी विश्वास और लाभ पर आधारित घनिष्ठ द्विपक्षीय संबंध निरंतर मजबूत होने चाहिए। मिसरी अपने समकक्ष पेमा चोडेन के साथ भारत-भूटान विकास सहयोग वार्ता की सह-अध्यक्षता करने के लिए दो दिवसीय आधिकारिक यात्रा पर शुक्रवार को यहां पहुंचे। कार्यभार संभालने के एक सप्ताह से भी कम समय में यह उनकी पहली आधिकारिक विदेश यात्रा है। विदेश सचिव मिसरी ने प्रधानमंत्री तोबगे से मुलाकात की। इस दौरान तोबगे ने मिसरी को उनकी नियुक्ति पर बधाई दी। तोबगे ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट मे कहा, यह जानकर खुश हूं कि विक्रम मिसरी ने भारत के विदेश सचिव के रूप मे अपनी नियुक्ति के मात्र चार दिन बाद ही अपनी पहली विदेश यात्रा के रूप मे भूटान का दौरा करने का फैसला किया है। मै उनकी नियुक्ति पर उन्हें बधाई देता हूं।

संरा की शीर्ष अदालत ने क्षेत्रों पर इजराइल के कब्जे की वैधता पर विशेषज्ञ राय देने के लिए बैठक बुलाई

भाषा। हेग (नीदरलैंड्स)

संयुक्त राष्ट्र की शीर्ष अदालत ने फलस्तीनी राष्ट्र के लिए मांगी गई भूमि पर इजराइल के 57 वर्षों के कब्जे की वैधता पर एक गैर-बाध्यकारी सलाहकारी राय देने के लिए सुनवाई शुरू की है। यह निर्णय इजरायल की नीतियों की तुलना में अंतरराष्ट्रीय राय पर अधिक प्रभाव डाल सकता है। अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के अध्यक्ष नवफ सलाम को विश्व भर के 15 न्यायाधीशों की समिति की राय पढ़ने में लगभग एक घंटे का समय लगने की उम्मीद है।शुक्रवार की सुनवाई गाजा पर इजराइल के 10 महीने के भीषण सैन्य हमले की पृष्ठभूमि में हो रही है। दक्षिणी इजराइल में हमास के हमलों के बाद उसने यह जवाबी कार्वाई शुरू की थी। एक अलग मामले में, अंतरराष्ट्रीय न्यायालय दक्षिण अफ्रीका के इस दावे पर विचार कर रहा है कि गाजा में इजराइल का अभियान नरसंहार के बराबर है। इस दावे का इजराइल पुरजोर खंडन करता है।पश्चिम एशिया युद्ध में इजरायल ने 1967 में पश्चिमी तट, पूर्वी यरुशलम और गाजा पट्टी पर कब्जा कर लिया था। फलस्तीनी तीनों क्षेत्रों को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में चाहते हैं।इजराइल पश्चिमी तट को विवादित क्षेत्र मानता है, जिसका भविष्य बातचीत से तय किया जाना चाहिए। उसने हालांकि अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए वहां बस्तियां बसा दी हैं। उसने पूर्वी यरुशलम पर कब्जा कर लिया है,।

मालदीव में भारतीय सहायता से बन रहा नया हवाई अड्डा पूरा होने के करीब

माले। मालदीव ने कहा है कि भारतीय सहायता से बन रहे हनीमाधू अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का लगभग 68 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। भारत ने कहा है कि इस परियोजना का द्वीपसमूह देश के संपूर्ण उत्तरी क्षेत्र पर परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ेगा। बुनियादी ढांचा मंत्रालय ने घोषणा की है कि हनीमाधू अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का निर्माण कार्य 67.5 प्रतिशत पूरा हो चुका है, जिसे भारत सरकार द्वारा 80 करोड़ एमवीआर (मालदीव की मुद्रा) ऋण सहायता से वित्त पोषित किया जा रहा है। परियोजना का कार्य तेजी से आगे बढ़ रहा है। समाचार पोर्टल ट्रूथएमवीडॉटकॉम ने बृहस्पतिवार को कहा, सितंबर में भारत की जीएमसी को सौंपे गए हवाई अड्डे के विस्तार में 2.7 किलोमीटर की हवाईपट्टी, 13 लाख यात्री क्षमता वाला टर्मिनल और जेट ईंधन भंडारण सुविधा शामिल है।

वियतनाम कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख गुएन फु ट्रोंग का 80 वर्ष की उम्र में निधन

हनोई। वियतनाम की सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव और देश के सबसे कद्दावर नेता गुएन फु ट्रोंग का कई महीनो तक बीमार रहने के बाद निधन हो गया। आधिकारक मीडिया ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।वह 80 वर्ष के थे। हान डान समाचार पत्र की खबर के मुताबिक, पार्टी की केंद्रीय समिति के महासचिव गुएन फु ट्रोंग का 19 जुलाई 2024 को एक बजकर 38 मिनट पर 108 केंद्रीय सैन्य अस्पताल में वृद्धावस्था और गंभीर बीमारी के कारण निधन हो गया। ट्रोंग को 2011 में पार्टी प्रमुख चुना गया था, जिसके बाद से वह वियतनाम की राजनीति पर छाए हुए थे।ट्रोंग ने अपने कार्यकाल के दौरान वियतनाम की एकदलीय राजनीतिक व्यवस्था मे कम्युनिस्ट पार्टी की ताकत को मजबूत करने का काम किया।

रूस की अदालत ने अमेरिकी पत्रकार को कारावास की सजा सुनाई

एकातेरिनबर्ग। रूस की एक अदालत ने शुक्रवार को वॉल स्ट्रीट जर्नल के रिपोर्टर इवान गेर्शकोविच को जासूसी के मामले में दोषी ठहराते हुए 16 साल के कारावास की सजा सुनाई। गेर्शकोविच के नियोक्ता और अमेरिका ने पूरी प्रक्रिया को पाखंड बताकर आरोपों को खारिज किया है। देश की राजनीतिक प्रभाव वाली कानूनी प्रणाली मे त्वरित मुकदमे के तहत गेर्शकोविच को 16 साल के कारावास की सजा सुनाई गई। गेर्शकोविच (32) को मार्च 2023 मे यूराल पर्वतीय शहर एकातेरिनबर्ग की रिपोर्टिंग यात्रा के दौरान हिरासत में लिया गया था और उन पर अमेरिका के लिए जासूसी करने का आरोप लगाया गया था।

उत्तरी चिली में 7.4 तीव्रता का शक्तिशाली भूकंप

सैंटियागो (चिली)। अर्जेंटीना की सीमा के पास उत्तरी चिली मे बृहस्पतिवार को 7.4 तीव्रता का भूकंप आया। अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (यूएसजीएस) ने यह जानकारी दी।इस भूकंप के कारण जान-माल के नुकसान की फिलहाल कोई जानकारी नही मिली है। यूएसजीएस के अनुसार, भूकंप चिली के समयानुसार रात नौ बजकर 51 मिनट पर 117 किलोमीटर गहराई में आया। इसका केंद्र चिली के सैन पेड्रो डी अटाकामा से 45 किलोमीटर (28 मील) दक्षिण-पूर्व मे था।चिली प्रशांत महासागर मे तथाकथित रिंग ऑफ फायर मे स्थित है और यहां अक्सर भूकंप आते रहते है।

पाक में आतंकवादियों के हमले में एक पुलिसकर्मी की मौत

पेशावर। पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत मे आतंकवादियो द्वारा शुक्रवार को एक पुलिस चौकी पर किए गए हमले मे एक पुलिसकर्मी की मौत हो गई जबकि कई अन्य घायल हो गए। हमला सूबे के मरदान जिले मे तख्तभाई तहसील स्थित पुलिस चौकी पर हुआ। इसमे एक पुलिस कर्मी की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री अली अमीन गंडापुर ने हमले की निंदा की और पुलिस से मामले मे रिपोर्ट तलब की है। उन्होंने कहा, आतंकवाद का खात्मा करने के लिए यह पुलिस का बलिदान है। यह अभियान ऐसे कायराना हमलो से नही रुकेगा। एक अन्य घटना मे एक व्यक्ति की उस समय मौत हो गई जब सूबे मे रिमोट संचालित बम से विस्फोट किया गया।

ब्रिटेन में दंगे में बस में आगजनी, पुलिस की गाड़ी में तोड़फोड़

लंदन। उत्तरी इंग्लैंड के लीड्स मे दंगा भड़कने के दौरान पथराव और अव्यवस्था के बीच एक डबल डेकर बस मे आग लगा दी गई और एक पुलिस वाहन को पलट दिया गया। स्थानीय परिषद ने इसे पारिवारिक घटना बताया है। लीड्स नगर परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी टॉम रिओर्डन ने शुक्रवार को बीबीसी को बताया, अब स्थिति शांत हो गई है। हमने पहले ही घटनास्थल पर सफाई का काम शुरू कर दिया है।

अमेरिकी लोगों की सेवा करने वाली सरकार देने को प्रतिबद्ध : ट्रंप

मिलवाउकी। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने उन पर जानलेवा हमले के बाद अमेरिकी जनता द्वारा दिए गए समर्थन और प्यार के लिए आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि वह अपने संकल्प पर अडिग हैं और अमेरिकी जनता की सेवा करने वाली सरकार बनाने को प्रतिबद्ध हैं। डोनाल्ड ट्रंप ने यह बयान आगामी राष्ट्रपति चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी की ओर से आधिकारिक रूप से नामांकन स्वीकार करने से पहले दिया। रिपब्लिकन पार्टी ने मिलवाउकी में बृहस्पतिवार को आयोजित अपने राष्ट्रीय सम्मेलन में ट्रंप को तीसरी

बार राष्ट्रपति चुनाव के लिए अपना उम्मीदवार घोषित किया। ट्रंप (78) ने कहा, आज रात मैं श्रद्धा और आस्था से एवं गर्व से अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के लिए नामांकन स्वीकार करता हूं। पेनसिल्वेनिया में शनिवार को ट्रंप पर असफल जानलेवा हमला किया गया था जिसके बाद अपने पहले भाषण में उन्होंने कहा कि वह अमेरिकियों के साथ विश्वास, ताकत और उम्मीद के साथ खड़े हैं। रिपब्लिकन पार्टी के राष्ट्रीय अधिवेशन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, आज से चार महीने बाद हमारी शानदार जीत होगी और हम अपने देश के इतिहास में चार सर्वश्रेष्ठ सालों की शुरुआत करेंगे। हम एक साथ मिलकर सुरक्षा, समृद्धि और सभी जातियों, धर्मों, रंगों और नस्लों के लोगों की आजादी के लिए नए युग की शुरुआत करेंगे।

यमन के हूती विद्रोहियों ने ली तेल अवीव में हवाई हमले की जिम्मेदारी, एक मौत और 10 लोग घायल

तेल अवीव। यमन के हूती विद्राहियों ने इजराइल के तेल अवीव पर शुक्रवार तड़के हुए ड्रोन हमले की जिम्मेदारी ली है। यह हमला ऐसे स्थान पर किया गया जो अमेरिकी दूतावास के काफी नजदीक था। इस घटना में एक व्यक्ति की मौत हो गई और कम से कम 10 लोग घायल हो गए। हवाई हमले से सड़कों पर छें गिरने लगे तथा कांच के टुकड़े चारों ओर फैल गए। इजराइल और हमास के बीच नौ माह से युद्ध जारी है।

ब्रिटेन, रूस के और भीतरी इलाकों में हमले के लिए यूक्रेन की मदद करे : जेलेंस्की

भाषा। लंदन

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने ब्रिटेन की नई सरकार से आग्रह किया कि वह यूक्रेन की सेना को रूस के और भीतरी इलाकों पर हमला करने में मदद करे ताकि उनके देश पर रूस के घातक मिसाइल हमलों को रोका जा सके। उन्होंने एक दुलर्भ घटनाक्रम में ब्रिटेन की कैबिनेट (मंत्रिमंडल) बैठक को संबोधित करते हुए यह बात कही। जेलेंस्की ने कहा कि जहां रूसी हथियार रखे गए हैं उन केंद्रों को नष्ट करने के लिए लंबी दूरी की मारक क्षमता हासिल करना यूक्रेनी रक्षा पंक्ति के लिए अहम है। जेलेंस्की ने प्रधानमंत्री केअर स्टॉर्मर से कहा, पश्चिमी हथियारों के इस्तेमाल को लेकर यूक्रेन पर लगाए गए प्रतिबंध को हटाने के लिए मैं आपसे नेतृत्व करने के लिए कहता हूं। रूस ने विनाशकारी अग्नेयास्त्र तैनात किए हैं क्योंकि वह गर्मी से ही पूर्वी यूक्रेन में हमला जारी रखे हुए है। रूस के हमले से जहां गांव के गांव मलबे में तब्दील हो गए हैं, वहीं यूक्रेन की सेना को कई स्थानों से पीछे हटना पड़ा है। रूस की ओर से यूक्रेन पर किए गए मिसाइल और ड्रोन हमले में दर्जनों लोगों की मौत हो चुकी है। इन हमलों में कीव स्थित बच्चों के अस्पताल समेत अन्य संरचानाओं को निशाना बनाया गया है। कीव के कुछ सहयोगी यूक्रेन को रूसी क्षेत्र पर हमला करने के लिए अपने हथियारों का उपयोग करने देने के प्रति अनिच्छुक हैं क्योंकि उन्हें चिंता है कि इससे पश्चिमी देशों का

रूस से सीधा टकराव हो सकता है। ब्रिटिश सरकार ने कहा है कि जब तक कि अंतरराष्ट्रीय कानून कायम है तब तक यह यूक्रेन पर निर्भर है कि वह ब्रिटेन द्वारा आपूर्ति की गई मिसाइलों का उपयोग कैसे करे। बीबीसी के साथ एक साक्षात्कार में जेलेंस्की ने कहा कि वह रूस में स्थित ठिकानों के खिलाफ ब्रिटेन से प्राप्त स्टॉर्म शैडो मिसाइलों का उपयोग करने की यूक्रेन की क्षमता के बारे में स्पष्टीकरण मांग रहे थे।

अमेरिका ने यूक्रेन के मुद्दे पर भारत से समर्थन मांगा

वाशिंगटन। अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने विभिन्न क्षेत्रो मे भारत के साथ द्विपक्षीय सहयोग को रेखांकित करते हुए कहा है कि अमेरिका चाहता है कि भारत यूक्रेन में स्थाई और न्यायपूर्ण शांति स्थापित करने के उसके प्रयासों का समर्थन करे। विदेश मंत्रालय के प्रधान उप प्रवक्ता वेदांत पटेल ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मॉस्को मे रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ हाल मे हुई बैठको के बारे मे बृहस्पतिवार को पूछे गए एक सवाल के जवाब मे ए बाते कही। उन्होंने कहा भारत अनेक प्रमुख क्षेत्रो मे हमारा साझेदार है, और यह बात पिछले ग्रीष्मकाल में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हुई थी, जब प्रधानमंत्री मोदी राजकीय यात्रा पर अमेरिका आए थे। पटेल ने कहा, इसके अलावा, यूक्रेन-रूस के बीच जारी जंग और यूक्रेन की क्षेत्रीय अखंडता व संप्रभुता पर उसके प्रभाव के संदर्भ में, हम भारत समेत अपने सभी साझेदारो से यूक्रेन मे स्थाई व न्यायपूर्ण शांति स्थापित करने के प्रयासो का समर्थन करने का अनुरोध करते है। विदेश मंत्रालय ने रूस से कहा कि वह यूक्रेन के संप्रभु क्षेत्र से अपने सैनिक वापस बुलाए। मोदी 22वे भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए 8-9 जुलाई को रूस मे थे। यूक्रेन मे जारी संघर्ष के बीच पश्चिमी देशो की इस शिखर सम्मेलन पर गहरी नजर थी। रूस और यूक्रेन के बीच 2022 मे युद्ध शुरू होने के बाद से मोदी की यह पहली रूस यात्रा थी। नौ जुलाई को पुतिन के साथ वार्ता के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने उनसे कहा था कि यूक्रेन संघर्ष का समाधान युद्ध के मैदान में संभव नही है और शांति के प्रयास बम व गोलियो के बीच सफल नही होते है। भारत रूस के साथ अपने संबंधो का दृढ़तापूर्वक बचाव करता रहा है तथा यूक्रेन संघर्ष के बावजूद दोनो देशो के संबंध मजबूत रहे है

बाइडन के समर्थन में कमी, फिर भी दौड़ में बने रहेंगे : प्रचार टीम के अध्यक्ष

भाषा। वाशिंगटन

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन की प्रचार टीम ने इस बात पर जोर दिया है कि वह चुनाव लड़ने से पीछे नहीं हट रहे हैं। डेमोक्रेटिक पार्टी में कई शीर्ष स्तर के नेता हैं जो चाहते हैं कि बाइडन इस बात पर विचार करें कि कैसे 2024 के राष्ट्रपति पद चुनाव से हटकर नए उम्मीदवार के लिए रास्ता बनाया जा सकता है ताकि पार्टी को नवंबर में व्यापक नुकसान से बचाया जा सके। बाइडन ने इस बात पर जोर दिया है कि वह रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप को हरा सकते हैं। बाइडन कोविड से संक्रमित होने के बाद फिलहाल डेलावेयर स्थित

अपने आवास पर स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं। ऐसी स्थिति में जब वह इस बात पर विचार कर रहे हैं कि क्या उन्हें बढ़ते दबाव के आगे झुककर राष्ट्रपति पद की दौड़ से हट जाना चाहिए, वह परिवार के साथ हैं और कुछ पुराने सहयोगियों पर भरोसा कर रहे हैं। बाइडन प्रचार अभियान की अध्यक्ष जेन ओ मैली डिलियन ने राष्ट्रपति के समर्थन में कमी होना स्वीकार किया, लेकिन इस बात पर जोर दिया कि वह निश्चित रूप से दौड़ में बने रहेंगे और प्रचार अभियान टीम ट्रंप को हराने के लिए कई रास्ते देखती है। उन्होंने एमएसएनबीसी के मॉर्निंग जो से कहा, हमें अमेरिकी लोगों को यह भरोसा दिलाने के लिए बहुत काम करना है कि हां, वह बूढ़े हैं, लेकिन वह जीत सकते हैं। उन्होंने कहा कि बाइडन की नेतृत्व करने की योग्यता के बारे में चिंतित मतदाता ट्रंप को वोट देने नहीं जा रहे हैं। उन्होंने कहा, उनके पास सवाल हैं, लेकिन वे जो बाइडन के साथ बने रहेंगे।

बांग्लादेश में सुरक्षा बलों ने प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलाईं और आंसू गैस के गोले दागे

भाषा। ढाका

बांग्लादेश में सरकारी नौकरियों में आरक्षण प्रणाली में सुधार की मांग को लेकर जारी प्रदर्शनों के बीच शुक्रवार को पुलिस और सुरक्षा अधिकारियों ने प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलाईं और आंसू गैस के गोले दागे, साथ ही राजधानी ढाका में लोगों के एकत्र होने पर प्रतिबंध लगा दिया। हिंसक प्रदर्शनों के बीच इंटरनेट और मोबाइल सेवाएं बंद कर दी गई हैं। राजधानी ढाका और कुछ स्थानों पर प्रदर्शन कुछ सप्ताह पहले शुरू हुए थे लेकिन सोमवार से इनमें तेजी आ गई। ए विरोध प्रदर्शन प्रधानमंत्री शेख हसीना के लिए अहम चुनौती हैं। उन्होंने जनवरी में हुए चुनाव में लगातार चौथी बार जीत हासिल की थी। प्रदर्शनकारियों पर गोलीबारी की आज की घटना के एक दिन पहले भी काफी हिंसा हुई थी जिसमें स्थानीय मीडिया के अनुसार 22 लोगों की मौत हो गई थी। समय टीवी ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा कि शुक्रवार को चार और लोग मारे गए। इन आंकड़ों की तुरंत पुष्टि करने के लिए अधिकारियों से संपर्क नहीं किया जा सका। एसोसिएटेड प्रेस के एक रिपोर्टर ने देखा कि सीमा रक्षक अधिकारियों ने 1000 से अधिक प्रदर्शनकारियों की भीड़ पर गोलियां चलाईं।

लंबी कोविड पहेली अब सुलझने लगी है - तस्वीर परेशान करने वाली है

भाषा। सेंट लुइस (अमेरिका)

2020 के बाद से, लंबे कोविड -19 के रूप में जानी जाने वाली एक स्थिति व्यापक विकलांगता का कारण बन गई है। यह दुनिया भर में लाखों लोगों के स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित कर रही है और कर्मचारियों की उत्पादकता में कमी और कार्यबल में समग्र गिरावट के कारण अर्थव्यवस्थाओं को अरबों डॉलर का नुकसान हो रहा है। लंबे कोविड को लेकर किए गए गहन वैज्ञानिक प्रयासों के परिणामस्वरूप 24,000 से अधिक वैज्ञानिक प्रकाशन हुए हैं, जिससे यह रिकॉर्ड किए गए मानव इतिहास के किसी भी चार वर्षों में सबसे अधिक शोध वाली स्वास्थ्य स्थिति बन गई है। लॉन्ग कोविड एक शब्द है जो सार्स-कोव-2 वायरस के संक्रमण के कारण होने वाले दीर्घकालिक स्वास्थ्य प्रभावों का वर्णन करता है। इनमें लगातार श्वसन संबंधी लक्षण, जैसे सांस की तकलीफ, दुर्बल करने वाली थकान या मस्तिष्क कोहरा, जो लोगों की काम करने की क्षमता को सीमित करता है, और दिल की विफलता और मधुमेह जैसी स्थितियां शामिल हैं, जो जीवन भर रहने के लिए जानी जाती हैं।मैं एक चिकित्सा वैज्ञानिक हूं, और मैं महामारी के शुरुआती दिनों से ही लंबे कोविड के अध्ययन में गहराई से डूबा रहा हूं। मैंने लॉन्ग कोविड पर एक विशेषज्ञ गवाह के रूप में अमेरिकी सीनेट के समक्ष गवाही दी है, इस पर बड़े पैमाने पर प्रकाशित किया है और इस क्षेत्र में मेरे शोध के लिए 2024 में स्वास्थ्य के क्षेत्र में टाइम के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों में से एक के रूप में मुझे नामित किया गया था। 2024 की पहली छमाही में, लंबे समय तक कोविड पर रिपोर्टों और वैज्ञानिक पत्रों की बाढ़ ने इस जटिल स्थिति में स्पष्टता ला दी। इनमें, विशेष रूप से, यह अंतर्दृष्टि शामिल है कि कैसे प्रारंभिक वायरल संक्रमण के वर्षों बाद भी कोविड -19 कई अंगों में कहर बरपा सकता है, साथ ही वायरल दृढ़ता और प्रतिरक्षा शिथिलता पर उभरते साक्ष्य जो प्रारंभिक संक्रमण के बाद महीनों या वर्षों तक बने रहते हैं।कोविड शरीर पर कितने समय तक प्रभाव डालता है ?एक नया अध्ययन जिसे मैंने और मेरे सहकर्मियों ने 17 जुलाई, 2024 को न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन में प्रकाशित किया, उससे पता चलता है कि महामारी के दौरान लंबे समय तक रहने वाले कोविड का जोखिम कम हो गया। 2020 में, जब सार्स-कोव-2 का पैतृक तनाव प्रभावी था और टीके उपलब्ध नहीं थे।

बढ़ रही रोबोटिक सर्जरियां

इस समय रोबोटिक सर्जरी का प्रचलन बढ़ता रहा है। कानपुर के नोबल सुपर स्पेशलिटी अस्पताल ने भारत में निर्मित सर्जिकल रोबोटिक सिस्टम एसएसआई मंत्रा के द्वारा रोबोटिक सर्जरियों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है। यह इस क्षेत्र के जरूरतमंद लोगों को उच्च गुणवत्ता की चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराने की दिशा में बड़ा कदम है। डॉ अमिताभ सिंह सीनियर कन्सलटेन्ट यूरो-ऑंकोलोजी राजीव गांधी कैंसर इंस्टीट्यूट एण्ड रीसर्च संझटर के मार्गदर्शन तथा डॉ अनिल जैन डायरेक्टर] कन्सलटेन्ट यूरोलोजिस्ट किडनी ट्रांसप्लांट सर्जन के नेतृत्व में नोबल हॉस्पिटल की सर्जिकल टीम ने बेहद सटीकता और दक्षता के साथ रेडिकल प्रोस्टेक्टोमी को अंजाम दिया। यह सफल प्रक्रिया मरीज उन्मुख देखभाल तथा चिकित्सा उत्कृष्टता के लिए नोबल अस्पताल की प्रतिबद्धता की पुष्टि करती है तथा कानपुर और आस-पास के शहरों में हेल्थकेयर इनोवेशन में इसकी स्थिति एवं नेतृत्व को और अधिक मजबूत बनाती है। डॉ अनिल जैन डायरेक्टर कन्सलटेन्ट यूरोलोजिस्ट एवं किडनी ट्रांसप्लान्ट सर्जन नोबल सुपर स्पेशलिटी अस्पताल ने इस उपलब्धि पर खुशी जाहिर करते हुए कहा एसएसआई मंत्रा को इंस्टॉल करना सभी के लिए उच्च गुणवत्ता की चिकित्सा सेवाओं को सुलभ बनाने की दिशा में बड़ा कदम है। यह सफलता मरीज-उन्मुख देखभाल एवं चिकित्सा उत्कृष्टता के लिए नोबल अस्पताल की प्रतिबद्धता को दर्शाती है और साथ ही कानपुर में हेल्थकेयर इनोवेशन में अस्पताल की स्थिति को मजबूत बनाती है। अस्पताल द्वारा गोल्ड-स्टैण्डर्ड की सेवाओं को उपलब्ध कराया जाना इस बात की पुष्टि करता है कि अब दूसरे स्तर के शहरों के मरीजों को उपचार के लिए महानगरों में जाने की जरूरत नहीं। यह निश्चित रूप से उत्तर प्रदेश के लिए बड़ी उपलब्धि है। इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर बात करते हुए डॉ विश्वा श्रीवास्तव प्रेजीडेन्ट एवं सीओओ एसएस इनोवेशन्स ने कहा यह उत्तर प्रदेश के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि है।

क्विक न्यूज

पाकिस्तान में हिंदुओं की आबादी 38 लाख, देश का सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समूह

इस्लामाबाद। पाकिस्तान मे हिंदुओं की आबादी वर्ष 2017 के 35 लाख से बढ़कर 2023 मे 38 लाख हो गई जो इन्हे इस इस्लामी राष्ट्र का सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समूह बनाती है। पिछले साल की जनगणना के आधिकारिक आंकड़ों से यह जानकारी मिली। डॉन अखबार की रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान सांख्यिकी ब्यूरो (पीबीएस) ने बृहस्पतिवार को 7वीं आबादी और आवास जनगणना 2023 के नतीजे जारी किए। 2023 मे पाकिस्तान की कुल जनसंख्या 2,40,458,089 थी।इससे पता चलता है कि कुल आबादी मे मुसलमानो की हिस्सेदारी 2017 में 96.47 प्रतिशत से थोड़ी कम होकर 2023 मे 96.35 प्रतिशत रह गई जबकि सभी प्रमुख धार्मिक अल्पसंख्यको की आबादी पिछले छह वर्षो मे बढ़ी है। हिंदुओं की आबादी 2017 के 35 लाख से बढ़कर 2023 में 38 लाख हो गई, लेकिन कुल आबादी मे उनकी हिस्सेदारी 1.73 से घटकर 1.61 प्रतिशत हो गई है। इससे पता चलता है कि अन्य अल्पसंख्यक समुदायो की आबादी मे तेज दर से वृद्धि हुई है।ईसाइयो की जनसंख्या भी 26 लाख से बढ़कर 33 लाख हो गई। कुल जनसंख्या में ईसाइयों की हिस्सेदारी 1.27 से बढ़कर 1.37 प्रतिशत हो गई है। अहमदियों की वास्तविक जनसंख्या के साथ-साथ कुल जनसंख्या मे उनकी हिस्सेदारी मे भी गिरावट देखी गई। उनके समुदाय की आबादी 2017 के1,91,737 (कुल आबादी का 0.09 प्रतिशत) से 29,053 कम होकर 162,684 (कुल आबादी का 0.07 प्रतिशत) रह गई।

श्रीलंका : 2019 में ईस्टर पर आतंकी हमलों के मामले में पुलिस अधिकारी को अनिवार्य छुट्टी पर भेजा गया

कोलंबो। श्रीलंका मे वर्ष 2019 मे ईस्टर के मौके पर हुए आत्मघाती हमलो मे आपराधिक लापरवाही के लिए दोषी ठहराए गए एक शीर्ष पुलिस अधिकारी को अनिवार्य छुट्टी पर भेज दिया गया है। हमलों में 11 भारतीयों सहित 270 से अधिक लोग मारे गए थे।स्वतंत्र पुलिस आयोग ने बल मे दूसरे नंबर के वरिष्ठ अधिकारी उपमहानिरीक्षक नीलांथा जयवर्धने को बृहस्पतिवार से अनिवार्य छुट्टी पर भेजे जाने की घोषणा की।श्रीलंका में 2019 में ईस्टर के मौके पर हुए आत्मघाती बम हमले की जांच मे दायर मौलिक अधिकार याचिकाओं के संबंध में उच्चतम न्यायालय ने जयवर्धने के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्वाई शुरू करने का आदेश दिया। उसके बाद उन्हे अनिवार्य छुट्टी पर भेज दिया गया।जयवर्धने उन शीर्ष रक्षा अधिकारियों मे एक है, जिन्हें ईस्टर के दिन आत्मघाती बम विस्फोटों मे आपराधिक लापरवाही के लिए दोषी ठहराया गया है। स्थानीय इस्लामी चरमपंथी समूह, नेशनल तौहीद जमात (एनटीजे) के नौ आत्मघाती हमलावरों ने 21 अप्रैल, 2019 को तीन कैथोलिक गिरजाघरों और कई आलीशान होटलों मे सिलसिलेवार धमाके किए थे जिनमे 11 भारतीयों और अन्य विदेशी नागरिकों सहित लगभग 270 लोग मारे गए और 500 से अधिक घायल हुए थे। पुलिस आयोग के मुताबिक, उच्चतम न्यायालय ने 12 जनवरी, 2023 को जयवर्धने के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्वाई करने की सिफारिश की थी।जयवर्धने हमले के समय पुलिस की राज्य खुफिया सेवा के प्रमुख थे।

पाकिस्तानः कई आरक्षित सीट पर न्यायालय के फैसले को लेकर सत्तारूढ़ गठबंधन में विचार-विमर्श शुरू

इस्लामाबाद-लाहौर। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी सहित अपने गठबंधन सहयोगियो के साथ कई आरक्षित सीट पर उच्चतम न्यायालय के फैसले को लेकर शुक्रवार को विचार-विमर्श शुरू किया। न्यायालय के फैसले से जेल मे बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी संसद मे सबसे बड़ी पार्टी बन जाएगी।सत्तारूढ़ गठबंधन के कई नेता उच्चतम न्यायालय के इस फैसले से आशंकित दिखाई दिए। लेकिन पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) पार्टी के प्रमुख नवाज शरीफ की बेटी और पंजाब की मुख्यमंत्री मरियम नवाज ने शीर्ष अदालत के इसे फैसले के खिलाफ हमला बोलते हुए कहा, मै उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशो से कहना चाहूंगी कि वे देश को काम करने दें। पीएमएल-एन पार्टी के नेतृत्व वाली सत्तारूढ़ सरकार ने उच्चतम न्यायालय द्वारा 15 जुलाई को खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी को कई आरक्षित सीट आवंटित करने के फैसले के खिलाफ समीक्षा याचिका दायर की है। सीट से कम सीट जीती है।

अलकायदा के एक प्रमुख सदस्य को पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में गिरफ्तार किया गया

लाहौर। अलकायदा के सरगना रहे ओसामा बिन लादेन के करीबी सहयोगी अमीन उल हक को पाकिस्तान के पंजाब प्रांत से गिरफ्तार किया गया और देश में बड़े पैमाने पर आतंकवादी साजिश को विफल कर दिया गया। आतंकवाद निरोधक विभाग (सीटीडी) के अधिकारियो ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। सीटीडी के डीआईजी उस्मान अकरम गोनाडल ने कहा, आतंकवादी को खुफिया जानकारी के आधार पर चलाए गए अभियान के दौरान पकड़ा गया। संयुक्त राष्ट्र द्वारा वैश्विक आतंकवादी घोषित हक को पंजाब प्रांत मे गुजरात जिले के सराय आलमगीर कस्बे से गिरफ्तार किया गया। पंजाब पुलिस के सीटीडी के प्रवक्ता ने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई मे एक महत्वपूर्ण सफलता मिली है, क्योंकि विभाग ने विभिन्न खुफिया एजेंसियो के साथ मिलकर पंजाब प्रांत मे एक योजनाबद्ध अभियान के दौरान हक को गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता ने एक बयान मे कहा कि हक 1996 से ओसामा बिन लादेन का करीबी सहयोगी था और उसने पूरे प्रांत मे आतंकी गतिविधियो की कथित तौर पर साजिश रची थी और महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानो और हस्तियों को निशाना बनाना चाहता था।

ओमान में मस्जिद पर हुए हमले में मारे गए चार पाकिस्तानियों के शव स्वदेश लाए गए

इस्लामाबाद। ओमान मे शिया मस्जिद पर हुए हमले मे जान गंवाने वाले चार पाकिस्तानियो के शव स्वदेश लाकर शुक्रवार को मृतको के परिवारो को सौप दिए गए। अधिकारियो ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पाकिस्तान इंटरनेशनल एयरलाइंस (पीआईए) की उड़ान के इस्लामाबाद और लाहौर हवाई अड्डो पर उतरने के समय पीड़ितो के रिश्तेदार मौजूद थे। विमानन कंपनी के प्रवक्ता अब्दुल्ला हफीज ने बताया कि सरकार के आदेश पर शव वापस लाए गए और दफनाने के लिए पीड़ितो के रिश्तेदारो को सौप दिया गया। बाद मे, सैकड़ो शोक संतप्त लोग मृतको के गृह नगरो मे उनके अंतिम संस्कार मे शामिल हुए। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने इस्लामाबाद मे ओमान के राजदूत के साथ बैठक के दौरान हमले की निंदा की। हथियारबंद लोगो ने ओमान की राजधानी मस्कट की एक मस्जिद पर सोमवार को हमला किया, जो मोहर्म के दसवें दिन (आशूरा) की पूर्व संध्या पर खास इबादत के लिए आए लोगो से भरी थी।

आर्मीनिया में एक सैन्य विमान दुर्घटनाग्रस्त, दो लोगों की मौत

एरेवान। आर्मीनिया मे एक सैन्य विमान शुक्रवार को दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमे चालक दल के दोनो सदस्यो की मौत हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।अधिकारियों ने बताया कि पूर्ववर्ती सोवियत संघ मे निर्मित एंटोनोव एन-2 विमान आर्मीनिया के सबसे बड़े शहर और राजधानी एरेवान से 20 किलोमीटर उत्तर मे दुर्घटनाग्रस्त हुआ।उन्होंने कहा कि विमान प्रशिक्षण उड़ान पर था। दुर्घटना का कारण तत्काल ज्ञात नही हो सका।पूर्ववर्ती सोवियत संघ मे निर्मित एंटोनोव एन-2 एक इंजन वाला हवाई जहाज है जो 12 यात्रियो को ले जा सकता है। 1947 मे इस विमान के उत्पादन के बाद से परिवहन और उपयोगिता भूमिकाओं मे इसका व्यापक रूप से उपयोग किया गया है। पूर्ववर्ती सोवियत संघ और अन्य देशो मे ऐसे हजारो विमान बनाए गए।दुनिया भर मे अभी भी ऐसे कई विमान संचालित हो रहे है।

भारतीय महिला टीम का जीत से आगाज

एशिया कप में गत चैम्पियन ने पाकिस्तान को सात विकेट से हराया

भाषा। दाम्बुला

गत चैम्पियन भारत ने गेंदबाजों के बाद शीर्ष क्रम बल्लेबाजों के दमदार प्रदर्शन से शुक्रवार को यहां महिला टी20 एशिया कप क्रिकेट टूर्नामेंट के अपने पहले मुकाबले में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को सात विकेट से हराया। अपने गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन और बेहतरीन क्षेत्ररक्षण की बदौलत पाकिस्तान को 19.2 ओवर में महज 108 रन पर समेटने के बाद भारत ने तीन विकेट पर 109 रन बनाकर जीत दर्ज की। भारतीय गेंदबाजों में पूजा वस्त्राकर और रेणुका सिंह ने पाकिस्तान को शुरूआती झटके देते हुए दो दो विकेट लिए। दीप्ति शर्मा ने 20 रन देकर तीन विकेट हासिल किए। श्रेयंका पाटिल को भी दो विकेट मिले। फिर भारत ने सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा (40 रन) और स्मृति मंधाना (45 रन) के अर्धशतकों तथा दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 57 गेंद में 85 रन की साझेदारी से यह लक्ष्य महज 14.1 ओवर में हासिल कर लिया। शेफाली (29 गेंद, छह चौके, एक छक्का) ने पहले ही ओवर में सादिया इकबाल पर स्क्वायर लेग में शानदार चौका जड़कर अपने इरादे जाहिर कर दिए और फिर इसी गेंदबाज के दूसरे ओवर में मिडविकेट और एक्स्ट्रा कवर पर दो चौके और जड़े। मंधाना शुरू में सतर्क होकर खेली, उन्होंने दूसरे ओवर में फातिमा सना पर मिडविकेट पर अपनी पारी का पहला चौका जड़ा। इसके बाद आक्रामकता दिखाते हुए उन्होंने 31 गेंद में नौ बार गेंद सीमारेखा के पार कराई। दोनों अच्छी लय में थीं और दनादन शॉट्स लगाकर अर्धशतक की ओर बढ़ रही थीं। लेकिन दोनों ही चूक गईं। इस दौरान शेफाली ने छठे ओवर में पारी का पहला छक्का तुबा हसन की गेंद को स्क्वायर लेग में स्वीप करते हुए जड़ा। विस्फोटक बल्लेबाजी कर रहीं मंधाना ने आठवें ओवर में तुबा हसन की गेंदों को धुनते हुए पांच चौके जड़कर इस ओवर से टीम के स्कोर में 21 रन जोड़े। पर सईदा अरूब शाह की गेंद पर शार्ट मिडविकेट पर आलिया रियाज को कैच देकर पवेलियन लौट गईं। उनकी जगह क्रीज पर उतरीं दयालन हेमलता ने आते ही 11वें ओवर में नशरा संधू पर लगातार तीन चौके जड़ दिए।

स्कोरबोर्ड

पाकिस्तान : फिरोजा का हरमनप्रीत बो वस्त्राकर 05, मुनीबा का जेमिमा बो वस्त्राकर 11, अमीन का राधा बो रेणुका 25, रियाज का जेमिमा बो श्रेयंका 06,डार का हेमलता बो दीप्ति 08, हसन का राधा बो दीप्ति 22, जावेद पगबाधा बो रेणुका 00, सना नाबाद 22, सैयदा अरूब शाह रन आउट 02, नशरा का ऋचा बो दीप्ति 00, सादिया बो श्रेयंका 00,अतिरिक्त : 07,कुल योग : 19.2 ओवर में 108 रन पर सभी आउट ,**विकेट पतन** :1-9, 2-26, 3-41, 4-59, 5-61, 6-61, 7-92, 8-94, 9-94, **गेंदबाजी** : रेणुका 4-0-14-2,पूजा वस्त्राकर 4-0-31-2, दीप्ति 4-0-20-3,यादव 4-0-26-0, पाटिल 3.2-0-14-2

भारत : शेफाली बो सईदा अरूब शाह 40, मंधाना का आलिया रियाज बो सईदा अरूब शाह 45,हेमलता का तुबा हसन बो नशरा संधू 14, कौर नाबाद 05, रोड्रिग्स नाबाद 03,अतिरिक्त : 02,कुल योग : 14.1 ओवर में तीन विकेट पर 109 रन ,**विकेट पतन** :1-85, 2-100, 3-102,**गेंदबाजी** : इक्बाल 2.1-0-18-0,फातिमा सना 2-0-15-0,डार1-0-10-0, हसन 2-0-36-0,संधू 4-0-20-1, अरूब शाह 3-0-9-2

भारत की कप्तानी से नजरअंदाज किए जाने के बाद हार्दिक का मुंबई इंडियंस के नेतृत्व करने पर संदेह

भाषा। नई दिल्ली

टी20 विश्व कप में भारत की खिताबी जीत में अहम भूमिका निभाने वाले हार्दिक पंड्या के लिए राष्ट्रीय टीम में चीजें काफी बदल गई है। टी20 विश्व कप के दौरान भारत के उपकप्तान रहे हार्दिक को श्रीलंका दौरे के लिए टी20 टीम की कमान नहीं सौंपी गई। सूर्यकुमार यादव टीम के सबसे छोटे प्रारूप में भारतीय टीम की अगुवाई करेंगे। भारत की कप्तानी के दायित्व से मुक्त होने के बाद यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या आईपीएल टीम मुंबई इंडियंस इस हरफनमौला खिलाड़ी को कप्तान बनाए रखेगी। मुंबई की फ्रेंचाइजी ने आईपीएल के सबसे सफल कप्तान रोहित शर्मा की जगह पिछले सत्र से पहले हार्दिक को कप्तान बनाया था। टी20 विश्व कप का खिताब जीतने के बाद रोहित भारतीय खेल जगत में महेंद्र सिंह धोनी जैसे खिलाड़ियों की सूची में शामिल हो गए है। आईपीएल के इस साल बड़ी नीलामी होनी है और ऐसे में यह देखना होगा कि रोहित मुंबई की टीम के साथ बने रहेंगे या नहीं। हार्दिक और रोहित के अलावा सूर्यकुमार यादव और जसप्रीत बुमराह भी टीम की अगुवाई करना चाहते हैं। आईपीएल संचालन समिति ने अभी तक यह घोषणा नहीं की है कि वे कितने खिलाड़ियों को रिटेन करने की अनुमति देंगे। इस बात की संभावना है कि फ्रेंचाइजी को एक विदेशी सहित चार खिलाड़ियों को रिटेन करने की अनुमति मिले। फ्रेंचाइजी टीमों को अगले कुछ वर्षों के लिए मजबूत टीम बनाने पर कुछ कठोर फैसले लेने होंगे। गुजरात टाइटंस के लिए कमाल करने वाले हार्दिक की कप्तानी में मुंबई इंडियंस का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा।

एशिया कप: नेपाल ने यूएई को छह विकेट से हराया

दांबुला। सलामी बल्लेबाज समझाना खड़का के नाबाद अर्धशतक और तेज गेंदबाज इंदु बर्मा के तीन विकेट की मदद से नेपाल ने शुक्रवार को यहां महिला टी20 एशिया कप क्रिकेट टूर्नामेंट के पहले मैच में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) को 23 गेंद शेष रहते हुए छह विकेट से हराकर अपने अभियान की शानदार शुरुआत की। खड़का ने 45 गेंद पर नाबाद 71 रन बनाए, जिसमें 11 चौके शामिल हैं। उनकी इस पारी की मदद से नेपाल ने 116 रन का लक्ष्य 16.1 ओवर में हासिल कर दिया। नेपाल ने 4 विकेट पर 118 रन बनाए।अमीरात की टीम इससे पहले 8 विकेट पर 115 रन ही बना पाई थी। उसकी तरफ से खुशी शर्मा ने 36 और कविशा एगोडेज ने 22 रन का योगदान दिया। बर्मा नेपाल की सबसे सफल गेंदबाज रहीं। उन्होंने 19 देकर तीन विकेट लिए। नेपाल को भी कुछ मुश्किल पलों से गुजरना पड़ा। ऑफ स्पिनर एगोडेज (12 रन देकर 3 विकेट) ने अमीरात को वापसी दिलाने का अच्छा प्रयास किया लेकिन खड़का ने एक छोर संभाले रखा और टीम को आसानी से लक्ष्य तक पहुंचाया।

विधात्री ने बतौर पेशेवर डब्ल्यूपीजीटी के नौवें चरण में पहला खिताब जीता

होसुर (तमिलनाडु)। भारतीय गोल्फर विधात्री उर्स ने शुक्रवार को यहां हीरो महिला प्रो गोल्फ टूर (डब्ल्यूपीजीटी) 2024 के नौवे चरण का खिताब अपने नाम किया। विधात्री ने अंतिम दौर के शुरूआत मे बर्डी की हैट्रिक लगाई और दो शॉट से खिताब जीत लिया। विधात्री ने एक अंडर 70 का कार्ड खेला। इससे पहले उन्होंने दो दिन मे 68 और 69 के कार्ड खेले थे। इससे उनका कुल स्कोर छह अंडर 207 रहा। यह विधात्री की बतौर पेशेवर गोल्फर पहली जीत थी। हालांकि एमेच्योर के तौर पर वह पहले भी टूर पर खिताब जीत चुकी है।

विश्व जूनियर स्क्वाश टीम स्पर्धा में भारत की जीत के साथ शुरूआत

ह्यूस्टन। भारत ने विश्व जूनियर स्क्वाश चैम्पियनशिप में जीत के साथ शुरूआत की जब लड़के और लड़कियों की टीम ने अपने अपने मुकाबले अच्छे अंतर से जीते। लड़कों ने कुवैत को ग्रुप एफ के मुकाबले में 3-0 से हराया जबकि राष्ट्रीय चैम्पियन अनाहत सिंह की अगुवाई मे लड़कियों ने ग्रुप डी मे चीनी ताइपै को इसी अंतर से मात दी। अब लड़कों का सामना शुक्रवार को ब्राजील से होगा जबकि लड़कियों की टीम को ब्राजील और आस्ट्रेलिया से खेलना है।

गोवा चैलेंजर्स के सामने शुरूआती मैच में जयपुर पैट्रियट्स की चुनौती

चेन्नई। गत चैंपियन गोवा चैलेंजर्स 22 अगस्त से सात सितंबर तक यहां होने वाले अल्टीमेट टेबल टेनिस (यूटीटी) के शुरूआती मैच मे नई टीम जयपुर पैट्रियट्स का सामना करेगा। इस फ्रेंचाइजी-आधारित लीग मे दो नई टीमें जुड़ी है। आठ टीमों के इस लीग के सभी 23 मैच यहां के जवाहरलाल नेहरू इंडोर स्टेडियम मे खेले जाएंगे। इसमें 16 अंतरराष्ट्रीय सहित कुल 48 खिलाड़ी भाग लेगे। इसमे विश्व रैंकिंग मे 10वे स्थान पर काबिज बर्नाडेट स्जोक्स, विश्व नंबर 16 नीना मित्तेल्हम, और नाइजीरिया के दिग्गज और वर्तमान विश्व नंबर 19 कादरी अरुणा भाग लेने वाले शीर्ष अंतरराष्ट्रीय खिलाडियो मे शामिल है।

नौरी को हराकर नडाल नॉर्डिया ओपन के क्वार्टर फाइनल में

बस्ताड (स्वीडन)। रफेल नडाल ने पांचवी वरीयता प्राप्त कैमरन नौरी को 6-4, 6-4 से हराकर नॉर्डिया ओपन टेनिस के क्वार्टर फाइनल मे प्रवेश कर लिया। दूसरे सेट के पहले गेम मे नडाल गिर गए और खून बहने लगा जिससे उन्हे मेडिकल सहायता की जरूरत पड़ी। उन्होने मैच के आखिरी पांच गेम जीतकर जनवरी के बाद पहली बार किसी टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल मे जगह बनाई। नडाल ने 2005 मे 19 वर्ष की उम्र मे यहां खिताब जीता था जिसके बाद वह पहली बार यहां खेल रहे है। वह पेरिस मे रोलां गैरो पर ओलंपिक मे खेलने की तैयारी में है।

ओलंपिक में खेलेगी इस्राइली फुटबॉल टीम

ज्यूरिख। फीफा ने इस्राइल को अंतरराष्ट्रीय फुटबाल से प्रतिबंधित करने के फलस्तीन के प्रस्ताव पर फैसला टाल दिया है जिससे इस्राइली फुटबॉल टीम पेरिस ओलंपिक मे खेल सकेगी। दो महीने पहले फलस्तीन के प्रस्ताव पर निष्पक्ष कानूनी आकलन की घोषणा के बाद फीफा को आमसभा की असाधारण बैठक मे शनिवार को इस पर फैसला लेना था। यह फैसला ओलंपिक की फुटबॉल स्पर्धा शुरू होने से चार दिन पहले आता जिसमे इस्राइल को जापान, माली और पराग्वे के साथ एक ग्रुप मे रखा गया है।

2047 में खेलों में भी शीर्ष पांच में रहने का लक्ष्य : मांडविया

भाषा। नई दिल्ली

नए भारत के निर्माण में खेलों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए खेलमंत्री मनसुख मांडविया ने शुक्रवार को कहा कि 2047 में आजादी की सौवीं सालगिरह पर भारत का खेलों में भी शीर्ष पांच में रहने का लक्ष्य रहेगा। खेलमंत्री ने कहा , पिछले दस साल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश बदल रहा है और आजादी की सौंवी सालगिरह पर 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य है। जब देश कोरोना लॉकडाउन में था , तब सरकार 2047 का रोडमैप तैयार कर रही थी। नवनिर्माण के इस रोडमैप का हिस्सा खेल भी है और जब हम विकसित राष्ट्र होंगे तो खेलों में भी शीर्ष पांच में रहेंगे। उन्होंने कहा , भारत विविधताओं का देश है और यहां खेल प्रतिभाओं की कमी नहीं है। प्रतिभा को तलाशकर उसे इको सिस्टम में लाने और मौके देने की जरूरत भर है। मैने कोरोना के दौरान अनुभव किया है कि भारत में मैन पावर और ब्रेन पावर की कमी नहीं है और उसके दम पर ही हमने कामयाबी पाई है। पिछली सरकार में स्वास्थ्य मंत्री रहे मांडविया ने कहा , प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में वह इको सिस्टम तैयार हुआ है जिसमें विभिन्न कार्य योजनाओं के जरिए खिलाड़ियों को उनके सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन में मदद की जा रही है। मैं पेरिस ओलंपिक में भाग लेने जा रहे सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देता हूं। खेलमंत्री ने पेरिस ओलंपिक और पैरालम्पिक के लिए भारत की तैयारियों को लेकर दिल्ली खेल पत्रकार संघ द्वारा भारतीय खेल प्राधिकरण के साथ मेजर ध्यानचंद स्टेडियम पर आयोजित परिचर्चा कहा , पेरिस ओलंपिक में पदकों की संभावना को लेकर मैं कोई आंकड़ा तो नहीं दूंगा लेकिन उम्मीद है कि पिछली बार से बेहतर प्रदर्शन होगा। हमने तोक्यो में सात पदक जीते थे और अब उससे आगे जाएंगे। भारत ने तोक्यो ओलंपिक 2020 में अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए एक स्वर्ण समेत सात पदक जीते थे। 26 जुलाई से शुरू हो रहे पेरिस ओलंपिक में भारत 117 सदस्यीय दल भेज रहा है जो तोक्यो ओलंपिक (121) के बाद सबसे बड़ा है। इस

अबकी बार 25 पार , पैरालम्पिक में भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन का लक्ष्य : झाझडिया

नई दिल्ली। भारतीय पैरालम्पिक समिति के अध्यक्ष देवेंद्र झाझडिया ने शुक्रवार को कहा कि पेरिस पैरालम्पिक में भारत को न सिर्फ सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन का यकीन है बल्कि पूरी उम्मीद है कि पदक संख्या 25 पार जाएगी। भारतीय पैरालम्पिक दल ने तोक्यो में इतिहास रचते हुए पांच स्वर्ण पदक समेत 19 पदक जीते थे। झाझडिया ने पेरिस ओलंपिक और पैरालम्पिक के लिए भारत की तैयारियों को लेकर एक परिचर्चा मे कहा , मुझे लगता है कि पेरिस में हमारा प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ होगा। हमारा स्लोगन है अबकी बार 25 पार। मै खिलाड़ियों के संपर्क में हूं और तैयारियां बहुत अच्छी चल रही है। तीन बार के पैरालम्पिक पदक विजेता झाझडिया ने 2004 एथेंस ओलंपिक और 2016 रियो ओलंपिक में एफ 46 भालाफेंक में स्वर्ण पदक जीता था जबकि तोक्यो में उन्होंने रजत पदक जीता। उन्होने कहा , खिलाड़ी शारीरिक ही नही मानसिक रूप से भी सुपर फिट है। उन्हें टारगेट ओलंपिक पोडियम योजना (टॉप्स) से पूरी सुविधाएं मिल रही है। हम कोबे मे विश्व चैम्पियनशिप मे पांचवे स्थान पर रहे जो बड़ी बात है। पेरिस पैरालम्पिक 28 अगस्त से शुरू होंगे। झाझडिया ने कहा कि पिछले दस साल में भारत मे खेलो का परिदृश्य बहुत बदल गया है। उन्होंने पैरालम्पिक के अपने सफर के बारे में कहा , 2004 मे एथेंस में मै अपने खर्च पर गया था जहां विश्व रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पदक जीता। रियो ओलंपिक में स्वर्ण जीतने के बाद चोटों के कारण खेल छोड़ने का मन बनाया लेकिन फिर तोक्यो ओलंपिक खेला। तोक्यो खेलो से पहले हमने कोरोना का दौर देखा जिस समय मै गांधीनगर में अभ्यास करता था। वहां सिर्फ दस लोग थे और पूरा परिसर खाली था लेकिन हमारी तैयारी पुख्ता रही।

कीर्ति के तहत 100 दिन में एक लाख खिलाड़ियों की पहचान की जाएगी

नई दिल्ली। केंद्रीय खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने शुक्रवार को कीर्ति परियोजना के दूसरे चरण की शुरुआत की, जिसका लक्ष्य 100 दिन के अंदर एक लाख युवा खिलाड़ियों की पहचान करना है। खेल मंत्री का मानना है कि खेलो इंडिया उदीयमान प्रतिभा पहचान (कीर्ति) भारत को 2047 तक ओलंपिक खेलो मे शीर्ष पांच देशों मे शामिल करने की दिशा मे महत्वपूर्ण कदम होगा।मांडविया ने यहां जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम मे कार्यक्रम के दूसरे चरण का शुभारंभ करने के बाद कहा, भारत विविधता और संभावनाओं से भरा देश है। भारत में कभी बुद्धि, जनशक्ति या प्रतिभा की कमी नही रही है। उन्होने कहा, केवल शहर कि नही, दूर दराज के क्षेत्रों जैसे उत्तर-पूर्व, तटीय, हिमालई और आदिवासी क्षेत्रो मे भी अच्छे खिलाड़ी हो सकते है। कीर्ति कार्यक्रम के इस चरण मे खेलो इंडिया योजना के सभी 20 खेल शामिल होंगे।

देश को कुछ देने के जज्बे से खेले हॉकी टीम, पेरिस में पदक पक्का : अशोक ध्यानचंद

नई दिल्ली। भारतीय हॉकी के ओलंपिक मे गौरवशाली इतिहास को याद करते हुए पूर्व धुरंधर अशोक ध्यानचंद ने कहा कि पेरिस ओलंपिक मे कठिन पूल के बावजूद भारत की तैयारी इतनी पुख्ता है कि पदक पक्का लग रहा है। तोक्यो ओलंपिक मे कांस्य पदक जीतकर 41 साल का इंतजार खत्म करने वाली भारतीय टीम को पेरिस में पूर्व चैम्पियन अर्जेंटीना, बेल्जियम और आस्ट्रेलिया जैसी दिग्गज टीमो के पूल में जगह मिली है। अशोक कुमार ने पेरिस ओलंपिक और पैरालम्पिक की तैयारियो पर दिल्ली खेल पत्रकार संघ और भारतीय खेल प्राधिकरण द्वारा आयोजित परिचर्चा मे कहा , मै टीम से इतना ही कहूंगा कि पूल पर ध्यान नही दे और मैच दर मैच प्रदर्शन पर फोकस रखे। प्रो लीग मे हमारा प्रदर्शन अच्छा नही रहा लेकिन यह टीम उस मुकाम पर है कि अपना दिन होने पर किसी को भी हरा सकती है। उन्होने कहा , कई खिलाड़ियों का यह आखिरी ओलंपिक है और पदक जीतने के लिए वे कोई कोर कसर नही छोड़ेंगे। कांस्य को अब स्वर्ण पदक मे बदलने की जरूरत है। विश्व कप 1975 मे भारत की खिताबी जीत के नायक रहे अशोक कुमार ने कहा , मैने 1972 मे अपना पहला ओलंपिक खेला तब खेल मंत्रालय नही होता था। लेकिन तब हम सुविधाओं के बारे में सोचते ही नही थे।बस देश के लिए खेलने और पदक जीतने का जज्बा रहता था। उन्होंने कहा , अब तो खिलाड़ियों की तैयारियो पर सरकार का पूरा फोकस है और कोई कमी नही रखी जा रही। खिलाड़ियों को इस भाव के साथ उतरना चाहिए कि देश ने सब कुछ दिया और अब देने की उनकी बारी है।

अतीत में ओलंपिक पदक के करीब पहुंच कर भारतीय खिलाड़ियों को मिली निराशा

भाषा। नई दिल्ली

अक्सर कहा जाता है कि ओलंपिक में चौथा स्थान हासिल करना किसी खिलाड़ी के लिए सबसे बड़ी निराशा होती है। किसी प्रतियोगिता में आखिरी स्थान पर रहने वाले खिलाड़ी को अगर शर्मिंदगी का सामना करना पड़ता है, तो वहीं चौथे स्थान पर रहने वाले खिलाड़ी को पदक चूकने की टिस रहती है। खेल के सबसे बड़े वैश्विक मंच पर भारतीय खिलाड़ी कई बार बेहद करीब से ओलंपिक पदक जीतने से चूक गए। इसकी शुरुआत 1956 मेलबर्न ओलंपिक में हुई थी और यह तोक्यो में हुए पिछले ओलंपिक तक जारी रहा।

मेलबर्न ओलंपिक , 1956

भारतीय फुटबॉल टीम ने क्वार्टर फाइनल में मेजबान ऑस्ट्रेलिया को 4-2 से हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई। इस मैच में ही नेविल डिसूजा ओलंपिक में हैट्रिक गोल करने वाले पहले एशियाई बने। नेविल ने सेमीफाइनल में यूगोस्लाविया के खिलाफ टीम को बढ़त दिला कर अपने प्रदर्शन को दोहराने की कोशिश की लेकिन यूगोस्लाविया ने दूसरे हाफ में जोरदार वापसी करते हुए मुकाबले को अपने पक्ष में कर लिया। कांस्य पदक मुकाबले में भारत बुल्गारिया से 0-3 से हार गया। भारत के महान खिलाड़ी पीके बनर्जी अक्सर अपनी इस पीड़ा को साझा करते थे।

रोम ओलंपिक, 1960

महान मिल्खा सिंह 400 मीटर फाइनल मे पदक के दावेदार थे लेकिन वह सेकंड के 10वे हिस्से से कांस्य पदक जीतने से चूक गए। विभाजन के बाद अपने माता-पिता को खोने के बाद इसे उनकी सबसे बुरी याद के रूप मे याद किया जाएगा। इस हार के बाद फ्लाइंग सिख ने खेल लगभग छोड़ ही दिया था। उन्होंने इसके बाद 1962 के एशियाई खेलो मे दो स्वर्ण पदक जीते लेकिन ओलंपिक पदक चूकने की टिस हमेशा बरकरार रही।

मास्को ओलंपिक, 1980

नीदरलैंड, ऑस्ट्रेलिया और ग्रेट ब्रिटेन जैसे शीर्ष हॉकी देशों ने अफगानिस्तान पर तत्कालीन सोवियत संघ के आक्रमण पर मास्को खेलों का बहिष्कार किया था, भारतीय महिला हॉकी टीम के पास अपने पहले प्रयास में ही पदक जीतने का बड़ा मौका था। टीम को हालांकि पदक से चूकने की निराशा का सामना करना पड़ा। टीम अपने आखिरी मैच में सोवियत संघ से 1-3 से हारकर चौथे स्थान पर रही।

लास एंजिलिस ओलंपिक, 1984

लास एंजिलिस ओलंपिक ने मिल्खा की रोम ओलंपिक की यादे फिर से ताजा कर दी जब पीटी उषा 400 मीटर बाधा दौड़ मे सेकंड के 100वें हिस्से से कांस्य पदक से चूक गईं। जिससे यह किसी भी प्रतियोगिता मे किसी भारतीय एथलीट के लिए अब तक की सबसे करीबी चूक बन गई। पय्योली एक्सप्रेस के नाम से मशहूर उषा रोमानिया की क्रिस्टीना कोजोकारू के बाद चौथे स्थान पर रही। वह हालांकि अपनी इस साहसिक प्रयास के बाद घरेलू नाम बन गई।

लंदन ओलंपिक, 2012

निशानेबाज जॉयदीप करमाकर ने इस सत्र में कांस्य पदक विजेता से एक स्थान पीछे रहने के निराशा का अनुभव किया। करमाकर पुरुषों की 50 मीटर राइफल प्रोन स्पर्धा के क्वालिफिकेशन राउंड में सातवें स्थान पर रहे थे और फाइनल में वह कांस्य पदक विजेता से सिर्फ 1.9 अंक पीछे रहे।

एथेंस ओलंपिक 2004 : दिग्गज लिएंडर पेस और महेश भूपति की टेनिस मे भारत की संभवतः सबसे महान युगल जोड़ी एथेंस खेलो मे पुरूष युगल मे पोडियम पर पहुंचने से चूक गई।पेस और भूपति क्रोएशिया के मारियो एनसिक और इवान ल्युबिसिक से मैराथन मैच मे 6-7, 6-4, 14-16 से हारकर कांस्य पदक से चूक गए और चौथे स्थान पर रहे।इस जोड़ी को इससे पहले सेमीफाइनल मे निकोलस किफर और रेनर शटलर की जर्मनी की जोड़ी से सीधे सेटों मे 2-6, 3-6 से हार का सामना करना पड़ा था। इन खेलों मे कुंजारानी देवी महिलाओ की 48 किग्रा भारोत्तोलन प्रतियोगिता मे चौथे स्थान पर रही, लेकिन वह वास्तव मे पदक की दौड़ मे नही थी। वह क्लीन एवं जर्क वर्ग मे 112.5 किग्रा वजन उठाने के अपने अंतिम प्रयास मे अयोग्य घोषित कर दी गईं। कुंजारानी 190 किग्रा के कुल प्रयास के साथ कांस्य पदक विजेता थाईलैंड की एरी विराथावोर्न से 10 किग्रा पीछे रही।

रियो ओलंपिक, 2016

दीपा करमाकर ओलंपिक खेलो मे प्रतिस्पर्धा करने वाली पहली भारतीय महिला जिमनास्ट बनी। महिलाओं की वॉल्ट स्पर्धा के फाइनल मे जगह बनाने के बाद, वह महज 0.150 अंको से कांस्य पदक से चूक गईं। उन्होने 15.066 के स्कोर के साथ चौथा स्थान हासिल किया। इसी ओलंपिक मे अभिनव बिंद्रा का शानदार करियर एक परीकथा जैसे समापन की ओर बढ़ रहा था, लेकिन वह भी मामूली अंतर से पदक जीतने से चूक गए। बीजिंग ओलंपिक मे स्वर्ण जीतने वाले बिंद्रा कांस्य पदक से मामूली अंतर से पिछड़ गए। बोपन्ना को 2004 के बाद एक बार फिर से ओलंपिक पदक जीतने से दूर रहने की निराशा का सामना करना पड़ा जब उनकी और सानिया मिर्जा की भारतीय मिश्रित युगल टेनिस जोड़ी को सेमीफाइनल और फिर कांस्य पदक मुकाबले मे हार का सामना करना पड़ा। इस जोड़ी को कांस्य पदक मैच मे लुसी ह्रादेका और रादेक स्तेपानेक से हार का सामना करना पड़ा था।

तोक्यो आंलंपिक, 2020

मास्को खेलो के चार दशक के बाद भारतीय महिला हॉकी टीम को एक बार फिर करीब से पदक चूकने का दंस झेलना पड़ा। भारतीय टीम तीन बार की ओलंपिक चैम्पियन ऑस्टेलिया को हराकर सेमीफाइनल में पहुंची लेकिन उसे अंतिम चार मैच मे अर्जेंटीना से 0-1 से हार का सामना करना पड़ा। रानी रामपाल की अगुवाई वाली टीम को इसके बार कांस्य पदक मैच मे ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ 3-2 की बढ़त को बरकरार नही रख सकी और 3-4 से हार गई। इसी ओलंपिक मे अदिति अशोक ऐतिहासिक पदक जीतने से चूक गई। विश्व रैंकिंग मे 200 वे स्थान पर काबिल इस खिलाड़ी ने दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को टक्कर दी लेकिन बेहद मामूली अंतर से पदक नही जीत सकी।

क्विक न्यूज

ईएसएफआई ने एशियाई इंडोर और मार्शल आर्ट गेम्स के लिए क्वालीफायर की घोषणा की

नई दिल्ली। ईस्पोर्ट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (ईएसएफआई) ने शुक्रवार को नेशनल ईस्पोर्ट्स चैंपियनशिप 2024 (एनईएससी24) के लिए पंजीकरण शुरू कर दिया, जो थाईलैंड के चोनबुरी में छठे एशियाई इंडोर और मार्शल आर्ट गेम्स (एआईएमएजी) के क्वालीफायर के रूप में काम करेगा। एशिया ओलंपिक परिषद (ओसीए) द्वारा आयोजित छठे एआईएमएजी में 36 खेल और दो प्रदर्शनी खेल शामिल होंगे।पदक खेल बनने के बाद एआईएमएजी मे ईस्पोर्ट्स स्पर्धा का आयोजन 23 से 28 नवंबर तक चोनबुरी के सेंट्रल श्रीराचा मे आयोजित किया जाएगा। इसमें तीन मोबाइल गेम को भी शामिल किया गया है जिसमें भारतीय खिलाड़ी सिर्फ ईफुटबॉल (ओपन वर्ग, व्यक्तिगत स्पर्धा) मे प्रतिस्पर्धा करेंगे। भारत मे दो अन्य मोबाइल गेम लीजेंड बैंग बैंग और एरिना ऑफ वेलोर प्रतिबंधित है। एनईएससी24 अगस्त के पहले सप्ताह मे ऑनलाइन तरीके साथ आयोजित किया जाएगा। इसमें खिलाड़ियों को ईफुटबॉल मोबाइल मे अपने कौशल के प्रदर्शन का मौका मिलेगा। एआईएमएजी मे ईफुटबॉल मोबाइल वर्ग मे ग्रुप चरण के मैच 23 और 24 नवंबर को होंगे। इसका प्लेऑफ 26 नवंबर को होगा। फाइनल और स्वर्ण पदक मैच 27 नवंबर को होंगे।

भारत को दोहरे अंक में पदक दिलाने का दारोमदार निशानेबाजों पर: सुमरिवाला

नई दिल्ली। भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) के अध्यक्ष आदिल सुमरिवाला को उम्मीद है कि पेरिस ओलंपिक मे भारत अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए दोहरे अंक मे पदक जीत सकता है लेकिन इसके लिए निशानेबाजों को अच्छा करना होगा। सुमरिवाला ने वेदांत दिल्ली हाफ मैराथन की घोषणा के लिए गुरुवार रात को आयोजित कार्यक्रम से इतर कहा कि उन्हें निशानेबाजों से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद है और अगर ऐसा हुआ तो भारत आसानी से 10 या उससे अधिक पदक जीत सकता है। भारत ने तोक्यो ओलंपिक मे एक स्वर्ण सहित सात पदक के साथ अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया था। सुमरिवाला ने कहा, हम कितने पदक जीतेंगे मै इसे लेकर कोई संख्या नही बता सकता लेकिन मुझे लगता है कि हम इस ओलंपिक मे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। उन्होने कहा, मुझे निशानेबाजों से इस बार बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद है और अगर वे ऐसा करने मे सफल रहे तो हम आसानी से दो अंक (10 या उससे अधिक) मे पदक जीतेंगे। मै कोई निश्चित संख्या नही बता सकता हूं लेकिन खिलाड़ियों के प्रदर्शन के विश्लेषण पर हमें अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन की उम्मीद है। निशानेबाजी मे भारत के 21 खिलाड़ियों ने ओलंपिक कोटा हासिल किया है। तोक्यो ओलंपिक में भी भारत के 15 निशानेबाजों ने हिस्सा लिया था लेकिन कोई भी पदक नही जीत पाया था। सुमरिवाला से पूछा गया कि एथलेटिक्स मे भारत के इक्का-दुक्का खिलाड़ियों को छोड़कर किसी का भी आंकड़ा विश्व के बड़े एथलीटों के करीब नही है ऐसे मे उनसे पदक की उम्मीद कैसे की जा सकती है।

सही घोड़े के बिना, आप कुछ भी नही हैः अनुष अग्रवाल

नई दिल्ली। पेरिस ओलंपिक मे चुनौती पेश करने को तैयार घुड़सवार अनुष अग्रवाला को यह समझने मे देर नही लगती कि उनका घोड़ा सर कारमेलो घबराया हुआ है, उत्साहित है या खुशी महसूस कर रहा है। अग्रवाला ने कहा कि अगर कोई रिश्ता सद्भाव और विश्वास पर बना है तो भाषा कोई बाधा नही होती। चौबीस साल के अग्रवाला 26 जुलाई से शुरू होने वाले ओलंपिक खेलों मे व्यक्तिगत ड्रेसेज स्पर्धा मे क्वालीफाई करने वाले पहले भारतीय घुड़सवार है। वह ओलंपिक मे परिणाम को लेकर ज्यादा चिंता किए बिना अपने खेल को सुधारने पर ध्यान दे रहे है। अग्रवाला सर कारमेलो के साथ इस स्पर्धा का लुत्फ उठाना चाहते है। दोनों के बीच ऐसा बंधन है कि अग्रवाला खुद की देखभाल से ज्यादा अपने घोड़े की देखभाल करना पसंद करते है। अग्रवाला ने जर्मनी से पीटीआई-भाषा को बताया, घोड़ों के बिना, हम कुछ भी नही है। बेशक, आपको एक अच्छा सवार बनने की ज़रूरत है। आपके पास एक अच्छा कोच होना चाहिए। लेकिन सही घोड़े के बिना, आप कुछ भी नही है। अग्रवाला 17 साल की उम्र मे जर्मनी के पैडरबोर्न गए थे। उन्होने शौकिया तौर पर घुड़सवारी शुरू की जो जल्द ही जुनून मे बदल गया। कड़ी मेहनत और उचित मार्गदर्शन के साथ वह 2023 एशियाई खेलों में दो पदक जीतने में सफल रहे।

भारतीय हॉकी खिलाड़ी सुखजीत को ओलंपिक में शानदार प्रदर्शन की उम्मीद

नई दिल्ली। भारतीय हॉकी खिलाड़ी सुखजीत सिंह का दाहिना पैर पीठ की चोट के कारण अस्थाई रूप से लकवाग्रस्त हो गया था लेकिन पंजाब का यह खिलाड़ी छह साल पहले की निराशा को पीछे छोड़कर 26 जुलाई से शुरू होने वाले ओलंपिक में टीम के लिए दमदार प्रदर्शन करने को लेकर प्रतिबद्ध है। इस 28 साल के खिलाड़ी का यह पहला ओलंपिक है। भारत के लिए 2022 मे पदार्पण करने वाले अग्रिम पंक्ति के इस खिलाड़ी ने हॉकी इंडिया से जारी विज्ञप्ति में कहा, ओलंपिक में खेलना हमेशा से मेरे और मेरे परिवार के लिए एक सपना रहा है। यह किसी भी खिलाड़ी के करियर का शिखर है और मै इस अवसर को पाकर सम्मानित महसूस कर रहा हूं। उन्होंने कहा, मुझे विश्वास है कि मेरी कड़ी मेहनत और समर्पण सफल होगी। मै अपनी भूमिका को प्रतिबद्धता के साथ पूरा करने के साथ पेरिस में अपना सब कुछ झोककर कोच और टीम के विश्वास पर खरा उतरने के लिए दृढ़ संकल्पित हूं। जालंधर मे जन्मे सुखजीत ने पिता अजीत सिंह (पंजाब पुलिस के पूर्व हॉकी खिलाड़ी) से प्रेरित होकर छह साल की उम्र मे हॉकी खेलना शुरू किया था। अच्छी शुरुआत के बावजूद सीनियर भारतीय टीम में उनकी राह आसान नही थी।

आईकू के गेमिंग एप युवाओं को जोड़ेंगे

नई दिल्ली। हाई-परफॉरमेंस स्मार्टफोन ब्रांड आईकू ने हाल ही में आईकू जेड 9 लाइट 5जी लॉन्च किया है, जो इसकी फुली लोडेड जेड सीरीज का लेटेस्ट एडिशन है। आईकू 9 लाइट 5जी कल से आईकू ई-स्टोर और अमेजन पर बिक्री के लिए उपलब्ध होगा। यह स्मार्टफोन पहली बार 5जी इस्तेमाल करने वालों के लिए एक शानदार विकल्प है, जिसमें एक शक्तिशाली प्रोसेसर, शानदार डिज़ाइन और सोनी का प्राइमरी कैमरा है। इसकी 8-कोर सीपीयू आर्किटेक्चर, लेटेस्ट 6एनएम प्रोसेस टेक्नोलॉजी पर आधारित है, जो 414के+ से अधिक का प्रभावशाली स्कोर प्राप्त करती है, जो सीमलेस मल्टीटास्किंग, लैग-फ्री गेमिंग और आसान ऐप स्क्रॉलिंग सुनिश्चित करती है। आईकू 9 लाइट दो शानदार कलर आप्शन एक्वा फ्लो और मोका ब्राउन में खरीदने के लिए उपलब्ध होगा। आईकू 9 लाइट, एक पूरी तरह से लोडेड 5जी स्मार्टफोन है, जो मीडियाटेक डाइमेंसिटी6300 5जी मोबाइल प्लेटफॉर्म द्वारा संचालित है। आईकू के मेक इन इंडिया के वादे को जारी रखते हुए - आईकू लाइट का निर्माण वीवो की ग्रेटर नॉएडा फैसिलिटी में किया जाएगा। अपने मूल्यवान ग्राहकों को हेसल फ्री आफ्टर सेल्स सर्विस प्रदान करने के लिए, आईकू ग्राहक अब देश भर में कंपनी के 670 से अधिक सर्विस सेंटर में से किसी पर भी जा सकते हैं।

महिला टीम जल्द ही आईसीसी ट्राफी जीतेगी : राणा

मुंबई। स्पिन आल राउंडर स्नेह राणा का कहना है कि रोहित शर्मा एंड कंपनी के हाल में टी20 विश्व कप ट्राफी जीतने से भारतीय महिला टीम को भरोसा मिला है कि वे अपनी पहली आईसीसी ट्राफी जीतने की मुहिम जारी रखेंगे। भारतीय टीम शुक्रवार से श्रीलंका में शुरू हो रहे महिला एशिया कप में फिर खिताब बरकरार रखने की दावेदार है।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा द इंडियन एक्सप्रेस लिमिटेड,ए-8, सेक्टर-7, जिला-गौतमबुद्ध नगर, नोएडा (उ.प्र.)-201301, दूरभाष-01202470700 से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: प्रदीप तिवारी। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। मुख्य व्यवसायिक कार्यालय- 201-205 द्वितीय मंज़िल, प्रताप भवन, 5 ,बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष:011-69342500।